



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 147]

No. 147]

नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 25, 2003/आश्विन 3, 1925

NEW DELHI, THURSDAY, SEPTEMBER 25, 2003/ASVINA 3, 1925

केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 सितम्बर, 2003

सं. फा. 12-13/87-के.ही.पं. (भाग-II).— होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 (1973 का 59 वाँ), की धारा 33 के खण्ड (झ), (जे) और (ए) और धारा 20 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद्, केन्द्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से, होम्योपैथी (डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1983 में आगे संशोधन करने हेतु निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थातः—

1 (1) संक्षिप्त नाम तथा प्रारम्भ :-

इन विनियमों का संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (डिग्री पाठ्यक्रम) संशोधन विनियम, 2003 होगा।

(2) ये भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से प्रवृत्त होंगे।

(3) ये उन विद्यार्थियों पर लागू होंगे जो शैक्षणिक सत्र (2003-2004) से आरंभ होने वाले बी०एच०एम०एस० (डिग्री पाठ्यक्रम) में प्रवेश लेंगे।

होम्योपैथी (डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1983 (यहाँ इसके पश्चात् 'उक्त विनियम' के नाम से प्रयुक्त) में, विनियम 2 में—

(i) खण्ड (v) में,

(अ) 'बोर्ड अथवा' शब्दों को हटा दिया जायेगा;

(आ) 'केन्द्रीय परिषद्' शब्दों के स्थान पर 'केन्द्रीय सरकार' शब्दों को प्रतिस्थापित किया जायेगा;

(ii) खण्ड (x) के लिए, निम्न खण्ड को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात्:—

“(x) ‘अध्यापन अनुभव’ से अभिप्रेत है, किसी एक होम्योपैथिक महाविद्यालय में संबंधित विषय में अध्यापन अनुभव और भारत सरकार से मान्यता प्राप्त आयुर्विज्ञान महाविद्यालयों में औषध, शल्य, प्रसूति एवं स्त्री रोग विषयों में प्राप्त अध्यापन अनुभव।”

(iii) खण्ड (xi) के पश्चात्, निम्न खण्ड को जोड़ा जायेगा, अर्थात्:—

“(xii) ‘होम्योपैथी में स्नातकोत्तर’ से अभिप्राय अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर अर्हता से है”।

उक्त विनियमों के विनियम 3 में :—

(अ) खण्ड (ii) के लिए निम्न खण्ड को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात्:—

“प्रत्येक अभ्यर्थी अन्तिम बी०एच०एम०एस० परीक्षा पास करने के पश्चात् इन विनियमों में संलग्न परिशिष्ट के अनुसार बारह माह की आवश्यक इन्टर्नशिप प्रक्रिया पूरी करेगा”

(आ) खण्ड (iii) के लिए निम्न धारा को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात्:—

“(iii) इन्टर्नशिप को सफलतापूर्वक पूर्ण करने तथा संबंधित होम्योपैथिक कॉलेज के प्रधानाचार्य की संस्तुति पर, संबंधित विश्वविद्यालय ऐसे अभ्यर्थियों को डिग्री प्रदान करेगा”

3A उक्त विनियमों के भाग—III में, निम्न नई धारा को जोड़ा जायेगा, अर्थात्:—

“अन्धे (वर्णान्ध सहित), बधिर तथा/या मूक अभ्यर्थियों को पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं दिया जायेगा”।

4 उक्त विनियमों के भाग—IV में, शीर्षक के लिए, निम्न शीर्षक को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात्:—

“विषय”

5 उक्त विनियमों के भाग V में, विनियम 5 के लिए निम्न विनियम को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात्:—

“5 विषय: बी०एच०एम०एस० (डिग्री पाठ्यक्रम) के लिए निम्न अध्ययन व परीक्षा के विषय होंगे, अर्थात्:—

- 1 शरीर रचना विज्ञान
- 2 शरीर क्रिया विज्ञान जैव रसायन सहित
- 3 ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन, होम्योपैथी दर्शन के सिद्धांत एवं मनोविज्ञान
- 4 होम्योपैथिक भेषजी
- 5 होम्योपैथिक मेटिरिया मेडिका एवं भेषज विज्ञान
- 6 विकृति एवं जीवाणु विज्ञान
- 7 व्यवहार आयुर्विज्ञान तथा विष विज्ञान
- 8 औषध साभ्यास
- 9 शल्य क्रिया
- 10 प्रसूति एवं स्त्री-रोग
- 11 सामुदायिक आयुर्विज्ञान
- 12 केस दर्ज तथा रेपर्टरी

6 उक्त विनियमों के भाग-V में, विनियम 6 के लिए, निम्न विनियम को प्रतिस्थापित किया जायेगा, अर्थात:-

'6 सीधे डिग्री पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यविवरण:- बी०एच०एम०एस० (सीधे डिग्री) पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यविवरण निम्न होगा :-

प्रस्तावना

होम्योपैथिक संस्थान में शिक्षा व प्रशिक्षण का प्रमुख ध्येय एक सक्षम होम्योपैथिक चिकित्सक तैयार करना है जो कि ग्रामीण व शहरी परिवेश में स्वतंत्र होकर कार्य कर सके ।

इस की प्राप्ति हेतु, निम्न पाठ्यविवरण को तैयार किया गया है:-

अ. उपयुक्त आधार :-

एक कुशल होम्योपैथिक चिकित्सक के रूप में प्रभावकारी कार्य करने के लिए औषध संकल्पना को अच्छी प्रकार समझना चाहिए, इसके लिए शिक्षण प्रक्रिया को एक एकीकरण प्रक्रिया के रूप में समझना होगा न कि मात्र बहुसंख्यक अव्यस्थित धारणाओं के एक बड़े समूह के रूप में ।

एक छात्र को प्रशिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से उत्तीर्ण करना होगा जो कि I बी०एच०एम०एस० से IV बी०एच०एम०एस० तक तथा इन्टर्नशिप के दौरान भी जारी रहेगी ।

वह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली से गुजरेगा जहां प्रथम वर्ष से ही अविच्छिन्न विमासवाही तथा प्रगतिशील तरीके से तथ्यों व संकल्पानाओं की शिक्षा दी जाएगी । प्रथम बी०एच०एम०एस० में छात्र होम्योपैथी के मूलभूत सिद्धांतों का अध्ययन करेगा तथा अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान को, सूक्ष्म शरीर रचना विज्ञान के, बजाय विस्तारपूर्ण अध्ययन अधिक करेगा ।

द्वितीय बी०एच०एम०एस० में, एक छात्र का परिचय सुग्राह्यता तथा लाक्षणिकी के साथ विश्लेषणात्मक-मूल्यांकन के महत्वपूर्ण संकल्पनाओं तथा होम्योपैथिक संकल्पनाओं, होम्योपैथी के प्राचीन तर्क से विस्तार से परिचय कराया जाएगा । इनका कामयाब एवं गहरा महत्व होगा (यदि विकृति विज्ञान तथा ऑर्गेनन-दर्शन के शिक्षक ध्यान देंगे) जबकि शोध, प्रतिरक्षा के वर्तमान ज्ञान की सुग्राह्यता की संकल्पना के साथ सहसंबद्ध किया जायेगा ।

तृतीय बी०एच०एम०एस० में, स्त्री रोग, शल्य क्रिया तथा औषध में चिरकारी रोग सिद्धांत तथा विकृत शरीर क्रिया के बीच सह-संबद्धता के तथ्यों के आधार मजबूत करना आवश्यक होगा । छात्र को विषाक्त वाष्प (मियाजमैटिक) अभिव्यक्ति के साथ विभिन्न रोगों के वर्ण क्रम से सहसंबंध का ज्ञान भी कराना होगा । वह तब सही निष्कर्ष वाली क्रियात्मक रूप से वैध रेपर्टोरियल सम्पूर्णता की ओर ले जाने वाली चारित्रिक मूल्यांकन क्रम का प्रयोग करना सीख पायेगा ।

इस प्रक्रिया से प्राप्त ज्ञान लगातार उसे अपने होम्योपैथिक चिकित्सक के उद्देश्य का ध्यान दिलाएगा और उसमें दायित्वों के प्रति जागरूकता प्रदान करेगा । एकरूपता, संशय की स्थिति को हटा देगी । तब चिकित्सार्थ प्रक्रिया सही तथा पूर्ण होंगे, गैर चिकित्सीय व गैर चिकित्सीय मापक रेपर्टोरियों का पूर्ण प्रयोग, अभिभाजित चिकित्सा ज्ञान का मूल्य तथा नये विज्ञानिक विकास (खोजों) व चिकित्सीय शिक्षा के प्रति अभिरुची को लागू रखने हेतु जानकारी के अध्ययन से उसे ज्ञान प्राप्त होगा ।

आ. निष्पादन :-

सभी विषयों के अनुप्रयुक्त पक्ष पर अधिकतम बल दिया जायेगा । इस लिए शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, जैव रसायन विज्ञान अनुप्रयुक्त पक्ष के शिक्षण पर अधिक बल चाहेंगे । विकृत विज्ञान के शिक्षण में, सामान्य विकृत विज्ञान पर अधिक बल दिया जायेगा जबकि क्षेत्रीय विकृत विज्ञान का अनुप्रयोग होगा । इसमें औषध, शल्य तथा स्त्रीरोगों के साथ सह-संबद्धता की आवश्यकता होगी । इन सभी का होम्योपैथिक दृष्टि से अध्ययन किया जाना आवश्यक होगा अतः ऑर्गेनन दर्शन एवं होम्योपैथिक उप-चारार्थ प्रदर्शन सभी विषयों में आवश्यक होगा ।

इ. अन्तः विभागीय सहयोग :-

सम्पूर्ण विचार एक सामूहिक दर्शन है । सभी विभाग सुपरिभाषित कार्यक्रम तैयार करेंगे जिसके लिए अन्तः विभागीय सहयोग की अपेक्षा होगी ।

अतः आवश्यक है कि शिक्षण कार्यक्रम इस प्रकार से तैयार किया जाय जिसमें प्रत्येक विभाग अवर्तन (रोटेशन) द्वारा अन्य संकायों से शिक्षण सहयोग कर अधतन व मूल्यांकन युक्त निरंतर शिक्षण प्रदान कर सकें । सहयोग इन विनियमों में प्रत्येक विषय में जैसा उल्लेखित किया गया है वैसा सहयोग आवश्यक होगा । इससे आधारभूत व असाधारण रूप से स्पष्टता प्राप्त होगी ।

ई. निगमनात्मक व अगमनात्मक शिक्षण :-

शिक्षण करते समय निगमनात्मक व आगमनात्मक शिक्षण का मस्तिष्क में नक्शा तैयार करते समय समतुलन होना आवश्यक है । उपदेशात्मक आख्यानो पर कम बल दिया जाना चाहिए । अभ्यर्थियों का अधिक समय, प्रदर्शन, सामूहिक वार्ता, सेमिनार तथा निदानलयों में व्यतीत किया जाना आवश्यक है । चारित्रिक, व्यक्तित्विक, व्यवहारिता को बढ़ाने तथा संकल्पनाओं को अधिक स्पष्टता से समझने हेतु भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करने हेतु प्रत्येक कोशिश की जाएगी ।

उ. मरीजोनुमुख शिक्षण :-

एकीकृत आयुर्विज्ञान शिक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक है कि द्वितीय बी०एच०एम०एस० के प्रथम दिन से रोगी को केन्द्रित किया जाए । पूरे पाठ्यक्रम में सामाजिक घटकों के स्वास्थ्य तथा रोगों की समस्याओं के संबंधों की महत्वता के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जोर देना होगा/शिक्षण प्रक्रिया समुदाय के साथ-साथ अस्पताल पर आधारित होगी ।

औषधि ऑर्गेनेन तथा होम्योपैथिक दर्शन के सिद्धांत

प्रथम बी०एच०एम०एस० होम्योपैथिक विज्ञान की प्रस्तावना

ऑर्गेनेन दर्शन एक महत्वपूर्ण विषय है जो कि चिकित्सक के लिए संकल्पनात्मक आधार तैयार करता है । यह उन सिद्धांतों की व्याख्या करता है जिसका उपयोग कर चिकित्सक परिणाम पा सकता है, जिसकी वह तर्कसंगत व्याख्या व चिकित्साअभ्यास में पुनःप्रयोग अधिक निपुणता से कर सकता है । शिक्षण व प्रशिक्षण का ध्येय संकल्पना आधारित होना चाहिए ।

जीवन, स्वास्थ्य, रोग, निवारण व आरोग्य पवित्रता, व्यक्तित्वता तथा गत्यात्मकता (डायनेमिक) संकल्पना के साथ होम्योपैथिक को औषध के पूर्ण तर्कपूर्ण प्रणाली के रूप में पेश की जाएगी । इस ध्येय की प्राप्ति के लिए होमियोपैथिक विज्ञान के तर्क, मनोविज्ञानिक तथा आधारभूत सिद्धांतों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है ।

आगमनात्मक —निगमनात्मक तर्क तथा इसके प्रयोग की स्पष्ट समझ तथा होम्योपैथिक विज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों को समझने के लिए आवश्यक है । रोगियों के लिए होम्योपैथिक संकल्पना एक पवित्र संकल्पना है । विज्ञान होम्योपैथिक चिकित्सक से अपेक्षा करता है कि वह अपने रोगी को व्यक्ति के रूप में समझे तथा उसके मन (तथा शरीर) की प्रवृत्ति, रोग प्रक्रिया एवं इसके कारणों को समझे ।

हालांकि हम मन की समझ पर अधिक बल देते हैं अतः होम्योपैथिक चिकित्सक के लिए मनोविज्ञान की समझ अधिक आवश्यक हो जाती है, अतः मनोविज्ञान की शिक्षा होम्योपैथी के अभ्यर्थी के लिए संकल्पनात्मक आधार तैयार करती है ।

I होम्योपैथी विज्ञान के आधारभूत सिद्धांत :-

प्रारंभिक संभाषण युक्तिपूरक तथा ओजपूर्ण विचारों पर बल देते हुए प्राचीन चिकित्साभ्यास का मूल्यांकन किया जाना चाहिए ।

- 1 हनेमन के जीवन व योगदान का लघु इतिहास ।
- 2 हनेमन के पश्चात् प्रारंभिक होम्योपैथिक मार्गदर्शकों की संक्षिप्त जीवनी व योगदान ।
- 3 होम्योपैथी के विस्तार का प्रारंभिक इतिहास तथा विभिन्न देशों में होम्योपैथी की स्थिति का संक्षिप्त अध्ययन ।
- 4 हनेमन का ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन सूत्र 1 से 70 तक ।
- 5 होम्योपैथी के मूलभूत सिद्धांत ।
- 6 स्वास्थ्य: हनेमन की तथा आधुनिक संकल्पनाएँ ।
- 7 रोग, उनका वर्गीकरण, औषध रोग, केस दर्ज करना औषध परीक्षण पर जानकारी हेतु संभाषण ।

II तर्क:-

'तर्क' शब्द का अर्थ, 'कारण', 'कानून' तथा नियमों की पूर्णता का निर्दिष्ट प्रयोग, जिसमें विचार प्रक्रिया विषयगत है, प्रक्रिया जो वास्तविकता/यथार्थ को प्रकट करती है नियमों की विवेचना तथा जिस प्रकार यह प्रकट होती है, के विज्ञान में प्रयोग निर्दिष्ट करना ।

जैसा कि पहले विचार किया गया ऑर्गेनन दर्शन को समझने के लिए आवश्यक है कि आगमनात्मक क्रियात्मक विवेचना को समझने के लिए तर्क का ज्ञान आवश्यक है ।

III मनोविज्ञान की प्रस्तावना :-

- 1 मनोविज्ञान की परिभाषा विज्ञान के रूप में तथा अन्य विज्ञानों से अंतरमन की संकल्पना—व्यवहारिक तथा मनोविश्लेषणात्मक विचारों का विशेष उद्घरण के साथ, की मनोविज्ञान की संभाषिक परिभाषा ।
- 2 व्यवहार बौद्धिकता, कारण, प्रभाव संबंध — व्यावहारिकता (पावलोव, वाटसन स्कीनर) तथा व्यवहार की गति की (फ्रयूड तथा निर्ओ फ्रयुडिएनस) का वैज्ञानिक अध्ययन ।
- 3 संवेदना, परिकल्पना, भ्रम, विभ्रम, भ्रान्ति, बिम्ब, बुद्धि, प्रवृत्ति, योग्यता, विचारशीलता, स्मरण की मूल संकल्पना ।
- 4 भाव, प्रेरणा, व्यक्तित्व, उत्सुकता, विरोध, हताशा, मनोविकारी प्रकटीकरण तथा सपने ।
- 5 प्रगतिशील मनोविज्ञान — सामान्य विकास जन्म से परिपक्वता (शारीरिक तथा मानसिक दोनों) तथा विचलन — बाद वाले के व्यवहार पर इसका प्रभाव ।

* अभ्यर्थियों को मेटिरिया मेडिका तथा होम्योपैथिक दर्शन के शिक्षण में विभिन्न शब्दावलियों से परिचित कराने का प्रयास किया जाएगा ।

द्वितीय बी०एच०एम०एस०

तीन भागों में भाग - 1

हनेमन का ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन सूत्र 1 से 145 तक ।

होम्योपैथिक के रोग विवरणी दर्ज करने का उद्देश्य मात्र लक्षणों को इक्ठठा करना नहीं है अपितु व्यक्ति को वृहत रूप में समझना, रोग बनाये रखने तथा उत्पत्ति के कारणों के ज्ञान को समझना, अर्थात्, मूलभूत कारण, पूर्ववृत्ति कारण, कारणों का रखरखाव तथा पार्श्वविक रोग ।

केस दर्ज करना प्रत्येक अभ्यर्थी के लिए आवश्यक होगा जिसमें वह रोग का रेखाचित्र बनाएगा:—

- 1 रोगी का सुपरिभाषित चारित्रिक मूल्यांकन ।
- 2 व्यक्ति तथा उसके जीवन का अध्ययन तथा उसका परिवारिक व व्यावसायिक संबंधों का अध्ययन ।
- 3 साक्षात्कार एवं पूरी केस की जांच ताकि उन रोगियों के प्रबंधन के सिद्धांतों का ज्ञान हो सके ।

अभ्यर्थी को विभिन्न लक्षणों का वर्गीकरण करना सिखाया जाना चाहिए जिन्हें उसने अपने केस दर्ज में प्रयुक्त किया । वह उन चारित्रिकों को अपने मूल्यांकन के अनुसार लिखेगा । उसकी विश्लेषण व संश्लेषण की क्षमता का विकास किया जायेगा । परिशिष्ट में, लक्षणिक वर्गीकरण तथा मूल्यांकन का विश्लेषण प्रपत्र संलग्न है । यदि सही रूप से प्रयोग किया जाए तो इसमें अभ्यर्थियों के विश्लेषणात्मक सामर्थ्य बढ़ाने की संभावनायें हैं ।

चिकित्सक, शिक्षण कर्मचारी, निवासीय चिकित्सा अधिकारी तथा हाऊस स्टाफ अभ्यर्थियों और इन्टर्न के साथ उपयुक्त समय व्यतीत करेंगे तथा लिखित केसों को छांटने, साक्षात्कार की विधियों तथा केस प्रक्रिया पर विचार विमर्श करेंगे ।

विश्लेषण तथा मूल्यांकन के शिक्षण में मानकता होगी । प्रत्येक संस्थान केस दर्ज करने के मानक निर्देश रखेगा ।

मार्ग प्रदर्शन विश्लेषण - विश्लेषण के उद्देश्यों का मूल्यांकन लक्षणों का मूल्यांकन

- 1 रोगी का निजिकरण कर एक प्रभावशाली पूर्णता को तैयार करना जोकि हमें समरूपी तक पहुंचाती है, रोगी के भविष्य, तथा प्रबंधन तथा जीवन व पथ्य पर आवश्यक पाबंदियां लगाने की सलाह दें ।

- 2 सुग्राह्यता की चारित्रिक स्थिति की क्षमता का मूल्यांकन कर सुग्राह्यता की स्थिति का अनुमान तथा मियाजमैटिक स्थिति का निदान कर चिकित्सक इलाज के लिए उपयुक्त प्रारूप तैयार कर सकेगा ।
- 3 रोगी के चारित्रिकों का मूल्यांकन के लिए, रेपर्टोरियल पूर्णता पहली सीढ़ी का कार्य करेगी ।

(iii) लक्षणों का वर्गीकरण:— पूर्णता की स्थिति तक पहुंचने में उनकी संभावनायें व सीमायें :—

लक्षणों को उनके सतही तौर पर नहीं देखा जाएगा । निम्न तत्वों को ध्यान में रखते हुए उनका विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाएगा :—

- (i) गति कारण को समझते हुए (मनोवैज्ञानिक, शरीर क्रिया व विकृति विज्ञान पहलु)
- (ii) रोग के कारणों के क्रमिक विकास की पूर्णसमझ, मूलभूत, उददीपन व उन्हें समर्थन देने वाले कारणों को ध्यान में रखते हुए ।
- (iii) सही विश्लेषण व मूल्यांकन हेतु सामाजिक — सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है । दर्शन की प्राचीन पुस्तकों द्वारा लाक्षणिकी को विस्तृत रूप से समझा जा सकता है ।

रोगीनामचा में प्रशिक्षण देते हुए ऑर्गेनन एवं दर्शन विभाग अन्य विभागों से, जहां अभ्यर्थियों को पूर्व निदानिक व नैदानिक प्रशिक्षण के लिए भेजा गया हो, के साथ सामंजस्य स्थापित करेगा । यह न केवल नैदानिक केन्द्रों को कारगर बनाना सुनिश्चित करेगा अपितु होम्योपैथिक परिप्रेक्ष्य को विकसित करेगा जबकि अभ्यर्थी अन्य विशेष नैदानिकों में लगे हुए हों ।

परीक्षा — मूल्यांकन

- 1 समय—समय पर अभ्यर्थी की योग्यता का मूल्यांकन किया जाना चाहिए । प्रत्येक शैक्षिक सत्र में समय—समय पर कार्ड—टेस्ट तथा अन्दरूनी (सिद्धांत व साभ्यास) परीक्षाएँ होंगी । संबंधित शिक्षण कर्मचारी वर्ग अन्दरूनी परीक्षा लेने पर अपनी रिपोर्ट देगा तथा अभ्यर्थी का प्रदर्शन जिसपर परिचर्चा विभागीय तथा अन्त-विभागीय बैठकों में की जायेगी ।
- 2 द्वितीय व तृतीय बी०एच०एम०एस० में प्रवेश लेने वाले प्रत्येक अभ्यर्थी को प्रत्येक परीक्षा के लिए रोगीनामचा प्रक्रिया सहित एक जर्नल बनाना होगा जिसमें 20 केस (10 छोटे व 10 लम्बे केस) हों, जिसका मूल्यांकन विभागाध्यक्ष द्वारा किया जायेगा ।
- 3 द्वितीय व तृतीय बी०एच०एम०एस० अन्तिम परीक्षाओं में जर्नल कार्य व इन परीक्षाओं के मूल्यांकन के आधार पर आन्तरिक मूल्यांकन की व्यवस्था होगी का भी मूल्यांकन की व्यवस्था होगी ।

तृतीय बी०एच०एम०एस०

जब अभ्यर्थी तृतीय वर्ष में प्रवेश करता है तब तक वह शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, विकृत विज्ञान का आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर चुका होता है तथा नैदानिक औषध, शल्य क्रिया, स्त्री रोग विज्ञान तथा प्रसूति के बारे में जानकारी दी गई होती है ।

दर्शन सहित ऑर्गेनन वह विषय है जोकि चिकित्सक के लिए संकल्पनात्मक आधार तय करता है यह उन सिद्धांतों की व्याख्या करते हैं जो कि जब प्रयोग किये जाते हैं तो चिकित्सक को परिणाम प्राप्त होते हैं तथा जिन्हें वह अधिक आत्म निपुणता के साथ अभ्यास में बार-बार प्रयोग करता है । शिक्षण तथा प्रशिक्षण का ध्येय अभ्यार्थी का संकल्पनात्मक आधार तैयार करना होना चाहिए । इसका सही निष्पादन किया जा सकता है जबकि ऑर्गेनन-दर्शन विषय के द्वारा विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी व दूसरे विषयों का सही तालमेल हो ।

(I) चिरकालिक रोगों का हनेमन सिद्धांत

उस कारक पर जिसके द्वारा प्रत्येक मियाजमैटिक खण्ड विकसित होते हैं तथा विभिन्न स्तरों पर मिलने वाले चरित्रिक भावों पर उपयुक्त ध्यान देना चाहिए । यह प्रत्येक मियाजम का चारित्रिक प्रतिरूप निकाल पायेगा ।

शरीर रचना विज्ञान, शरीरक्रिया विज्ञान, विकृत विज्ञान और औषध के मूलभूत ज्ञान द्वारा चिरकालिक मियाजम के सिद्धांत को समझने के सार्थक प्रयास किये जाने चाहिए । इसके लिए होम्योपैथी दर्शन का सश्रित विज्ञानों के साथ सह-संबंध स्थापित करने की आवश्यकता होगी ।

शिक्षकों को चिरकालिक मियाजम के सिद्धांत को चिकित्सा संबंधी प्रयोग में अधिक स्पष्टता से लाना चाहिए । इसके लिए प्राकृतिकरोगों के मियाजम दृष्टिकोण से क्रमिक विकास का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होगा । इसके लिए अनुप्रयुक्त मेटिरिया मेडिका से सह-संबंध स्थापित करना होगा । यहाँ पर, विभिन्न औषध किस प्रकार नैदानिक रोग सोरिक, साइकोटिक तथा सिफलिटिक स्तर, पर प्रतीत होते हैं, का प्रदर्शन किया जा सकता है ।

इस प्रकार ऑर्गेनन और दर्शन, शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, मनोविज्ञान, विकृत विज्ञान, नैदानिक औषध, मेटिरिया मेडिका तथा चिकित्साशास्त्र में एकात्मकता स्थापित करेगा ।

(II) हनेमन के औषध के ऑर्गेनन पाँचवा संस्करण (सूत्र 1 से 294 सहित)

- (अ) केन्ट के संभाषण, रोबर्ट तथा स्टुअर्ट के दर्शन में किये गये कार्य ।
- (आ) अमाशासम (पोसोलोजी) ।
- (इ) आहार, इलाज की सहायक प्रविधि ।
- (उ) रेपर्टरी का परिचय ।

अभ्याथियों को 20 रोगीप्रपत्र का खाता तैयार करना चाहिए जिसमें उनके द्वारा नैदानिक/उपचारित मामलों का पूर्ण लेखा हो ।

रोगीप्रपत्रों में अभ्याथियों के कार्य:— रोगीप्रपत्र तैयार करना, प्रपत्र का विश्लेषण, रोग मूल्यांकन, निदान-मियाजम – आमाशास्त्र (पोसोलोजी) – औषध निवारण ।

चतुर्थ बी०एच०एम०एस०

यहाँ ऑर्गेनन व दर्शन के अनुप्रयुक्त पहलू पर अधिक ध्यान दिया जायेगा । ऑर्गेनन तथा दर्शन के अभ्यासिक उन्मुख शिक्षण पर अधिक बल दिया जाएगा ।

इस लक्ष्य को अभ्यर्थियों द्वारा ओपीडी तथा आईपीडी में रोगप्रपत्र तैयार करने से अधिक सफलता द्वारा प्राप्त किया जा सकता है ।

केस विश्लेषण, मूल्यांकन तथा संश्लेषण संपूर्ण ऑर्गेनन को सूत्र — 1 से 294 तक तथा दर्शन के सिद्धांतों जैसा कि I, II, III बी०एच०एम०एस में व्याख्या की गयी है, को प्रयोग करता है ।

रोगप्रपत्र तैयार करना, प्रपत्र का विश्लेषण करना, मूल्यांकन, मात्राशास्त्र, मिसाजमेटिक निदान, पोटेन्सी निर्वाचन तथा मात्रा का पुनः प्रलेखन, द्वितीय नुस्खा प्रलेखन, आहार, पथ्या नियम तथा अन्य दबाव, ओपीडी तथा आईपीडी दौरों के दौरान प्रबंधन के सिद्धांतों पर जोर दिया जाएगा ताकि अभ्यर्थियों को रोगी के इलाज और प्रबंधन का साम्यासिक ज्ञान प्राप्त हो सके ।

IV बी०एच०एम०एस० के लिए निम्न प्रकरण पढ़ाये जायेंगे :—

- 1 औषध का इतिहास ।
- 2 होम्योपैथी का इतिहास, विभिन्न देशों में इसका प्रसार ।
- 3 जीवन व जीवन वातावरण ।
- 4 स्वास्थ्य की अवधारणा तथा इसमें बदलाव लाने वाले कारण ।
- 5 सुग्राह्यता की अवधारणा तथा प्रमुख अभिक्रिया ।
- 6 रोग की अवधारणा तथा लक्षणों की संपूर्णता ।
- 7 औषध, निदान तथा अरोग्य—औषध की अवधारणा ।
- 8 चंगा करने की अवधारणा तथा रोग और औषध संबंध ।
- 9 रोग में विभिन्न औषध प्रयोग की संभावनायें व सीमाएँ, एंटीपैथी, एलोपैथी तथा होम्योपैथी ।
- 10 साधारण तथा चारित्रिक लक्षणों का वर्गीकरण एवं मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियाँ ।
- 11 असाध्य रोग, दमन तथा उपशमन की अवधारणा ।
- 12 रोग निरोधी ।
- 13 होम्योपैथी की संभावनायें व सीमाएँ ।
- 14 अरोग्य—औषध प्रतिक्रिया, अरोग्य औषध के देने के बाद की रोग का भविष्य ।
- 15 पोटेन्सी के चुनाव व पुनःउपयोग के सिद्धांत तथा नियम ।

प्रश्नपत्र — I

1—15 तक के प्रकरण

प्रश्नपत्र — II

केन्ट के संभाषणों के प्रकरण, स्टुआर्ट क्लोज तथा रोबर्ट का दर्शन, शैय्या के पास रोगी प्रपत्र बनाना ।

परिशिष्ट

होम्योपैथी केस दर्ज करने का उद्देश्य लक्षणों को इक्ठठा करना मात्र नहीं होकर व्यक्ति को समष्टि रूप में समझकर रोग के सही कारणों को पता करना है ।

केस दर्ज करने में तथा शारीरिक जांच की पर्याप्तता का निर्धारण निम्न दृष्टि से किया जाना चाहिए:—

- 1 रोग प्रपत्र का सफलतापूर्ण व्यक्तिकरण करना तथा सुग्राह्यता की स्थिति के बारे में निष्कर्ष निकालना ।
- 2 सही क्षमता तथा खुराक के साथ समऔषध को खोजना ।

- 3 रोगी को उपयुक्त आहार देना ।
- 4 रोगी प्रबंधन की सलाह देना ।
- 5 विकृत विज्ञान तथा होम्योपैथी पूर्वानुमान ।

शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान

सामान्य व्यक्ति का पूर्व नैदानिक काल का अध्ययन ।

अध्ययन के सभी विज्ञान शास्त्रों में मनुष्य अर्थव्यवस्था सबसे कठिन है । मनुष्य एक चिन्तनशील चेतन जीव है व एक पूर्ण इकाई की तरह कार्य करता है ।

मानव ज्ञान इतना वृहत हो गया है कि मनुष्य के संपूर्ण यथार्थ समझने के लिए विज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे कि शरीर क्रिया विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान तथा मनोविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है । परन्तु ऐसा विभाजन एक यथार्थ मात्र है; व्यक्ति फिर भी अविभाज्य रहता है ।

चेतनता, जीवन तथा प्राकृतिक क्रिया कोशिकीय शरीर रचना के आधार या यांत्रिकी मात्रा और ना ही शरीर रचना विज्ञान की संकल्पना के आधार पर वर्णित की जा सकती है जोकि आपने आप में रसायनिक शरीर क्रिया विज्ञानी संकल्पना पर आधारित है ।

यद्यपि शरीर रचना विज्ञान तथा शरीर क्रिया विज्ञान अब तक बिल्कुल अलग विषयों के रूप में पढ़ाये जा रहे हैं, इनके बीच किसी प्रकार का विरोध नहीं होना चाहिए किंतु ढांचा (शरीर रचना) तथा क्रिया (शरीर क्रिया विज्ञान) आपस में सहसंबंधित है तथा केवल जीवन की अबोधमम्य क्रिया की बाह्य अभिव्यक्ति काम है, जो जिंदगी है ।

अतः शरीर रचना विज्ञान तथा शरीर क्रिया विज्ञान को निम्न उद्देश्यों के साथ पढ़ाया जायेगा:-

- (i) आकृतिक शरीर क्रिया तथा मनोविज्ञानिक सिद्धांत शरीर को क्रियात्मक एकक के रूप में निर्धारित व प्रभावी करते हैं, की समझ दी जाएगी ।
- (ii) मानव शरीर की जीवन संरचना तथा सामान्य शरीर क्रिया की व्याख्या और सहसंबंध तथा इस प्रकार क्रिया में बाधा के पूर्वानुमान के आंकड़े इक्ठे उपलब्ध कराना ।
- (iii) अभ्यर्थियों को निदानिक लक्षणों के शरीर रचनात्मक तथा शरीर क्रियात्मक आधार पर चोट, रोग व विकार के लक्षणों की पहचान कराने योग्य बनाना ।
- (iv) इसी प्रकार विकृत विज्ञानी प्रक्रिया के कारणों को समझना तथा इससे उत्तपन्न होने वाली कठिनाइयों की पहचान कराना ।
- (v) अभ्यर्थी को पूर्व नैदानिक विषयों पर इस प्रकार से ज्ञान देना कि अभ्यर्थी उक्त ज्ञान से पूर्ण क्षमता और आत्म विश्वास के साथ जाँच व चिकित्सा (शल्य क्रिया सहित) कर सके तथा;
- (vi) अभ्यर्थियों को अद्भुत, दुर्लभ व असामान्य लक्षणों को विकृतिक लक्षणों से रोगियों तथा औषध के व्यक्तिकरण को होम्योपैथी चिकित्सा के सम: का नियम अपनाने के लिए अलग से चुनने का ज्ञान दिया जाना चाहिए ।

शरीर रचना विज्ञान

शरीर रचना विज्ञान में निर्देश इस प्रकार दिए जाने चाहिए कि वह मनुष्य शरीर के संरचना का सामान्य क्रियात्मक ज्ञान दे सके । विवरणों की मात्रा जिसे अभ्यर्थी से स्मरण करने की अपेक्षा है, को कम से कम किया जाना चाहिए । शव की स्थिर संरचना की अपेक्षा जीवित शरीर के रचना विज्ञान के क्रियात्मकता पर अधिक बल दिया जाना चाहिए ताकि सामान्य शरीर रचना विज्ञानी अवस्था तथा अंग, मांसपेशियां, रक्त-शिराओं, स्नायु, लहकोशिकाओं पर अधिक बल दिया जा सके । शव का अध्ययन इस दिशा में अन्तिम साध्य है । अभ्यर्थियों पर ऐसे सूक्ष्म शरीर रचनाओं का बोझ नहीं डाला जाना चाहिए जिसका कि कोई नैदानिक महत्व न हो ।

यद्यपि, अभ्यर्थी को नैदानिक अध्ययन की तैयारी के लिए सम्पूर्ण शरीर का विच्छेदन करना आवश्यक है, इसका बोझ कम किया जा सकता है तथा इस प्रकार से समय की बचत का प्रभावशाली रूप से उपयोग किया जा सकता है, इसके अंग रेखांकन विवरणों को प्रभावी रूप से कम किया गया है निम्न बिन्दुओं :-

- 1 इस प्रकार का विवरणों के सामान्य शिक्षण का व्यावसायिक मूल्य आयुर्विज्ञानी अभ्यर्थी के आवश्यक होते हो, उनका शिक्षण दिया जाना चाहिए ।
- 2 शव विच्छेदन का अर्थ— तकनीकी दक्षता प्राप्त वकील तैयार करना नहीं है अपितु अभ्यर्थी को शरीर के कार्यों को समझने का ज्ञान देना है तथा इसके लिए विच्छेदन को इसी प्रकार से किया जाना चाहिए कि उपरोक्त अर्थ की प्राप्ति हो अर्थात् छोटे तथा निदानिक रूप से अनावश्यक रक्त शिराओं के परिणाम को स्पष्ट प्रदर्शन द्वारा ध्यान नहीं देने तथा मुख्य संरचनाओं की स्पष्ट तस्वीर तथा उनका प्राकृतिक संबंधता का प्रदर्शन करना ।
- 3 विच्छेदन द्वारा अभी तक पढ़ाए जा रहे अधिक पहलु को तैयार विच्छेदित भागों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है ।
- 4 साधारण रेडियोधर्मिता शरीर रचना विज्ञान भी व्यावहारिक शिक्षा का भाग होगी । शरीर की संरचना के क्रियात्मक पहलू को जोड़ा जाना चाहिए ।
- 5 वास्तविक शव विच्छेदन के बाद अंगों या प्रणाली के साधारण संरचना पर संभाषण होना चाहिए जो चर्चा का विषय हो तथा तब इसकी क्रिया पर भी चर्चा की जाए । इस प्रकार अभ्यर्थियों को संयुक्त रूप में शरीर रचना तथा शरीर क्रिया का ज्ञान तथा शरीर रचना, शरीर क्रिया के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को अधिक सुरुचिपूर्ण, जीवंत व अभ्यासिक बनाया जा सकता है ।
- 6 शरीर रचना का सैद्धान्तिक संभाषणों का अधिक भाग ट्यूटोरियल कक्षाओं में प्रदर्शन सहित किया जाना चाहिए ।

नैदानिक तथा अनुपयुक्त शरीर रचना विज्ञान का कुछ संभाषण तथा प्रदर्शन पाठ्यक्रम के अन्तिम भाग में आयोजित किये जाने चाहिए । इन्हें प्रमुखतः एक चिकित्सक द्वारा दिया जाना चाहिए जिसका ध्येय अभ्यर्थियों को शरीर आधारित शारीरिक चिन्ह तथा शरीर रचना के ज्ञान का महत्व समझाना हो ।

विभिन्न विषयों को एकक के रूपमें प्रदर्शित करने हेतु सेमिनार तथा सामूहिक चर्चा समय-समय पर आयोजित की जानी चाहिए ।

सामान्य कक्षा संभाषणों को कम कर प्रदर्शन तथा ट्यूटोरियल को बढ़ाया जाए ।

नैदानिक वस्तुओं के साथ शिक्षण सह-प्रदर्शन सूत्र होने चाहिए ताकि नैदानिक विषयों के साथ शरीर रचना विज्ञान के अनप्रयुक्त रचनाओं की व्याख्या की जा सके । इसे पखवाड़े में एक बार आयोजित किया जाना चाहिए तथा यदि आवश्यक हो तो प्रदर्शन संभाषणों को क्रमातार भी आयोजित किया जा सकता है ।

शरीर क्रिया विज्ञान तथा जैव रसायन विज्ञान संभागों की संयुक्त गोष्ठी आयोजित की जानी चाहिए तथा इनका आयोजन महिने में एक बार अवश्य किया जाना चाहिए । समस्त शरीर रचना विज्ञान, उत्तक विज्ञानी, भ्रूण विज्ञान, तथा आयुवांशिक के बीच सह-संबंधात्मक शिक्षण होना चाहिए । शरीर रचना, शरीर क्रिया जैव रसायन सहित की प्रणालियों व क्षेत्रों में जहां तक संबंध हो एकीकृत शिक्षण होनी चाहिए ।

सैद्धान्तिक

मानव शरीर रचना, शरीर रचना के विभिन्न भागों की सामान्य कार्यकारी जानकारी सहित पूर्ण पाठ्यक्रम । सामान्य शरीर रचना की स्थितियाँ, विसरा, मांसपेशियाँ, रक्त शिराएँ, तंत्रिकाएँ, लह-कोशिकाओं के संबंधों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए । अभ्यर्थियों को शरीर रचना विज्ञान के प्रत्येक नुस्खालेक के सूक्ष्म शरीर रचना निवारणों को लिखने के लिए बाधित नहीं किया जाना चाहिए जिसका कोई नैदानिक प्रयोग न हो । अभ्यर्थियों को शरीर रचना के नमूनों की पहचान करनी होगी तथा हाल में विच्छेदित और प्रदर्शित संरचना पर प्रश्नों का उत्तर तथा उनकी पहचान करनी होगी ताकि कशेरुक, खोपड़ी तथा लम्बी हड्डियों के वर्गीकरण के साधर तथा संधि की सरलता से पहचान की जा सके ।

सूक्ष्म विवरणों पर अधिक बल नहीं दिया जाना चाहिए जब तक उनका औषध व शल्य क्रिया को समझने में व उनके प्रयोग की आवश्यकता न हो । अभ्यर्थियों को मांस पेशियों के परिशिष्ट को उनकी क्रिया के रूप में ज्ञान दिया जाना चाहिए न कि उनकी उत्पत्ति तथा प्रवेशन की बारीक वर्णनो पर । हाथ, पाँव की हड्डियों तथा उनकी संधि तथा खोपड़ी की छोटी हड्डियों की सूक्ष्म जानकारी आवश्यक नहीं है ।

शरीर रचना विज्ञान के लिए पाठ्यक्रम निम्न मदों में विभाजित किया जायेगा :-

I संकल शरीर रचना विज्ञान - निम्न वर्गों में कार्य होगा :-

- (अ) प्रारंभिक संभाषण प्रदर्शन सहित ।
- (आ) अंग-विन्यास कड़ियाँ ।

शिक्षण निगमनात्मक संभाषण, संभाषण, प्रदर्शन, स्तर तथा रेडियोधर्मी शरीर रचना विज्ञान, शव-विच्छेदन का प्रदर्शन तथा विच्छेदित नमूनों को प्रदर्शन द्वारा दिया जाना चाहिए । इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों के ज्ञान को चेतन शरीर रचना के साथ सहसंबंध किये जाये । अंग रेखांकन को सामान्य अभ्यास में महत्वत्ता के अनुसार बल दिया जाना चाहिए ।

- (i) ऊर्ध्व शाखा, निम्न शाखा, सिर, गर्दन, वक्ष, उदर तथा श्रेणि का अध्ययन क्षेत्रीय व प्रणाली-दर-प्रणाली रूप से करना चाहिए (क्षेत्रीय तंत्रिका वितरण, मांसपेशियों के कार्यात्मक समूह, जोड़ों के संबंध तथा उपयुक्त शरीर रचना विज्ञान विकास तथा इसकी असंगतियों के लिए विशेष संदर्भ भी दिये जाने चाहिए) ।

(ii) अंतः स्त्रावी अंग विकास तथा अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान के विशेष संदर्श में ।

II शरीर रचना का विकास — विकास व वांशिक प्रभाव तथा वातवरणीय प्रभाव पर सामान्य सिद्धांत संभाषण, चार्ट, माडल तथा स्लाइड द्वारा बताए जाए ।

III स्नायू-शरीर रचना विज्ञान, मस्तिष्क एवं मेरुदण्ड की एकल रचना तथा मुख्य तंत्रिका जाल । क्षेत्रीय तंत्रिकाएँ । क्रैनिअल तंत्रिकाएँ उनका संबंध तथा वितरण । स्वतः चालित तांत्रिकतंत्र — विकास तथा असंगतियाँ, अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान ।

मस्तिष्क तथा मेरुदण्ड का अध्ययन सैद्धान्तिक संभाषण, संभाषण व प्रदर्शन पर आधारित होना चाहिए ।

पाद टिप्पणी:—व्यावहारिक अध्ययन के तुरंत बाद में शरीर क्रिया-तंत्रिका तंत्र का अध्ययन आवश्यक होगा । आरंभिक नैदानिक पाठ्यक्रम से सह-संबंध वांछित है ।

IV सूक्ष्म शरीर रचना विज्ञान (ऊतक विज्ञानी) कोशिका, उपकला, उत्तम उत्तकीय जोड़, मांसपेशीयां उतक, तंत्रिका उतक तथा सारणीवह संरचना की आधुनिक संकल्पना ।

(क) प्रारंभिक संभाषण:—

(अ) कोशिका चक्र तथा उनके कार्य, कोशिकाएँ विभाजित क्यों होती हैं, कोशिका विखण्डन उनके प्रकार उनकी महत्ता के अनुसार, की आधुनिक संकल्पना ।

(आ) अनुवांशिक वैयक्तवता:—

(i) प्रारंभिक आनुवांशिकी की परिभाषा, स्वास्थ्य तथा रोग, जीव व उसके वातावरण के पारस्परिक संबंधों के परिणाम, (होम्योपैथिक दृष्टि से) ज्ञान का उपयोग ।

(ii) मेंडेल के सिद्धांत एवं उनकी सार्थकता ।

(iii) अनुप्रयुक्त आनुवांशिकता ।

(ख) भ्रूण विज्ञान

(ग) सामान्य शरीर रचना विज्ञान तथा सूक्ष्म शरीर रचना विज्ञान ।

(घ) क्षेत्रीय शरीर रचना विज्ञान — क्षेत्रीय शरीर रचना विज्ञान का अध्ययन, शरीर रचना का विकास, वृहत संबंध, भूतल चिन्ह, रेडियोधर्मी शरीर रचना विज्ञान तथा अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान पर जोर देते हुए आधारित होना चाहिए ।

(अ) शाखाएँ:—

(i) कंकाल, स्थान तथा जोड़ों के कार्य ।

(ii) मांसपेशिय समूह, काष्ठ जालिक ।

(iii) धमनी आपूर्ति, शिरा प्रवाह, मनोरक्त जोड़, लसकीय तथा लसीका गांठ, तांत्रिका का हड्डियों से संबंध ।

(iv) जोड़-कटि, कूल्हा कोशीय, घुटना तथा एड़ी जोड़, मांसपेशिका गति प्रदान करना, तंत्रिका क्षति का परिणाम, पर अधिक बल देते हुए ।

(v) हड्डियों तथा जोड़ों की रेडियोधर्मी, आयु निर्धारण, वर्गीकरण ।

(vi) अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान ।

(vii) मुख्य शिराओं तथा तंत्रिका का सतही निर्धारण ।

(आ) वक्षः—

- (i) जोड़ो तथा मांसपेशियों के कंकाल, छाती कवाल (डायफ्राम), उदर तथा श्वास प्रणाल का नाड़ी उत्तेजन, आयु का अंतर, स्तन ग्रंथी, लसीकीय प्रवाह ।
- (ii) फुस्फुसावरण तथा फेफड़े ।
- (iii) मध्यास्थानिका, हृदय, परिमण्डलीय शिरा महाधमनी, श्वास प्रणाल, ग्रासनली करि रज्जु, थाइमस संरचना प्रणाली ।
- (iv) हृदय का रेडियोधर्मीतव, महाधमनी, फेफड़ों का ब्रोन्कोग्राम ।
- (v) फुस्फुसावरण, फेफड़े, हृदय, हृदय वाल्व, सीमा, महाधमनी का आर्क, उच्चस्तरीय वीनाकावा, श्वास प्रणाल का विघटन का सतही निर्धारण ।

(इ) उदर तथा श्रेणी:—

- (i) उदरदीवार — चमड़ी तथा मांसपेशियां, अंतः फेशिया, पेरीटोनियम, रक्त शिराएँ, लसीका, स्वनिधारक गैंगलिया तथा प्लेक्सस ।
- (ii) आमाशय, छोटी आंत, उन्हुक, अपेंडिक्स तथा बड़ी आंत ।
- (iii) ग्रहणी, अग्नाशय, गुर्दे, गर्भाशय, सुपरा रिनलस ।
- (iv) यकृत तथा पित्ताशय ।
- (v) श्रेणी, कंकाल तथा जोड़, श्रेणी की मांसपेशियां, अंतः पुरुषों तथा महिलाओं में तथा बाह्य जननांग, कटि जालिका, शिराएँ, लसीका, स्वसंचालित गैंगलिया तथा प्लेक्सस ।
- (vi) रक्त शिराएँ, उदर तथा श्रेणी तंत्रिका जालिका तथा पोर्टल रग प्रणाली ।
- (vii) निर्देशित दर्द अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान, पोर्टल सिस्टेमिक सम्मिलन, स्त्री व पुरुष में मूत्रीय नालशलाका प्रवेशन ।
- (viii) अंगो तथा रक्त शिराओं की सतही पहचान ।

(ई) सिर तथा गर्दन:—

- (i) खोपड़ी तंत्रिकोत्तेजन, रक्तपूर्ति मध्य तानिका धमनी ।
- (ii) चेहरा, प्रमुख मांसपेशी समूह, चेहराकृतियों मांसपेशियाँ, चर्वण मांसपेशियां, चमड़ी का तंत्रिकोत्तेजन तथा मांसपेशियों की मरम्मत, रक्तपूर्ति, खोपड़ी तथा चेहरे की झुर्रियों की मरम्मत का सिद्धांत ।
- (iii) पलकें, नेत्र गोलक, अश्रुग्रंथि उपकरण, नेत्रगोलक की संचालक मांसपेशियां ।
- (iv) नासा केविटी नासाग्रसनी, पट, कंकाई, पैरानैसल साइनस, इयूस्टेशियन ट्यूब, लसीकाभ्र समूह ।
- (v) मुखीय कोटर तथा ग्रासनी ।

- (vi) ग्रसनी संरचना के स्वरयंत्र, (लेरिक्स तथा फेरिन्क्स का लेरिनजियल हिस्सा), (विस्तार में नहीं) कार्य, तंत्रिकापूर्ति, स्वयंत्रिदर्शी प्रकटीकरण (लेरिनजियो-स्कोपी) ।
- (vii) ग्रीवा कशेरुक, खोपड़ी तथा गर्दन के जोड़ ।
- (viii) गर्दन की संरचना, कर्णमूल, प्रगण्ड जलिका, मुख्य धमनीयाँ तथा शिराएँ, लसीका नोड़ विन्यास निकासी के क्षेत्र, फ्रेनिक तंत्रिका, अवटुग्रंथी तथा इसकी रक्तपूर्ति, पेरा-थायराइड, श्वास-प्रणाल, ग्रासनली । उपअभीहनु तथा सबलिंगुअल लार ग्रंथियों की स्थिति ।
- (ix) दाँत तथा दन्त विकास ।
- (x) बाहय, मध्य तथा आन्तरिक कर्ण ।
- (xi) अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान ।
- (xii) कर्णपूर्ण ग्रंथि, मध्य तानिका धमनी, थायराइड ग्रंथि, सामान्य आन्तरिक तथा बाहय केरोटिड धमनियों की सतही पहचान ।
- (उ) तंत्र संबधी शरीर रचना विज्ञान:-
- (i) अर्थ - कार्यात्मकता के ।
- (ii) प्रमस्तिष्क क्षेत्र - सामान्यीकरण वहिकापूर्ति, आधारी गंडिका, आन्तरिक कैप्सूल ।
- (iii) अनुमस्तिष्क-कार्य ।
- (iv) पेन्स, मध्यमस्तिष्क मज्जा, कपाल तंत्रिका, पेल्सीस ।
- (v) प्रमस्तिष्कीय मेरुदण्डीयद्रव बनना, वितरण क्रिया, सोखना ।
- (vi) कपालीय तंत्रिका, उदभव, कार्य (न्यूनतम शरीर रचनात्मक विवरण के साथ) वितरण के क्षेत्र ।
- (vii) अनुकंपी तथा परानुकंपी तंत्रिका तंत्र, स्थान, वितरण, कार्य ।
- (viii) कोष्ठ हेवन (लम्बर पंचर) सम्बन्धित पीड़ा, मेरुदण्डीय निश्चेतनता, बढीहयी अन्तरा कपाल दाब की अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान ।
- (ड) उत्तक विज्ञानी दैहिक अध्ययन ।

प्रयोगात्मक

विच्छेदित अंगो का प्रदर्शन/सम्पूर्ण भाव शरीर का प्रदर्शन ।

अंगो तथा उत्तकों का उत्तक विज्ञानी नमूनों की पहचान अर्थात् यकृत, गुर्दे, फेफड़े थायराइड, अग्नाशय, तिल्ली, श्वास प्रणाल, ग्रासनली, अमाशय, जिह्वा, आँत, बड़ी आँत अण्डग्रंथियाँ, प्रत्येक हड्डी, वसा उत्तक, मेरुदण्ड, सुपरारीनल ग्रंथि, कर्णपूर्ण ग्रंथि, अन्तरिक पिचुटरी, लार ग्रंथियाँ, चर्म, पेराथायराइड ग्रंथि, अनुमस्तिष्क, प्रमस्तिष्क, कोर्टेक्स, हृदयी मांसपेशियाँ ।

शरीर रचना विज्ञान की लिखित परीक्षा निम्न रूप से विभाजित की जायेगी :-

प्रश्नपत्र I :- ऊर्ध्व शाखा, सिर, मुख, गर्दन, मस्तिष्क तथा भ्रूण विज्ञान ।

प्रश्नपत्र II:- वक्ष, उदर, श्रेणी, निम्न शाखा तथा उत्तक विज्ञान ।

शरीर क्रिया विज्ञान – जैव रसायन सहित

शरीर क्रिया विज्ञान पाठ्यक्रम के अध्ययन का उद्देश्य कार्य, प्रक्रिया तथा विभिन्न अंगों व प्रणालियों के आन्तरिक संबंध तथा रोग में साधारण गड़बड़ी तथा अभ्यर्थियों को सामान्य जानकारीयों से सुसज्जित करने का है जिसका प्रयोग सामान्य से विचलन के पहचान व इलाज करने में किया जा सके । एक होम्योपैथ के लिए ।

मनुष्य शरीर एक चेतन जीवन तथा मस्तिष्क की एकीकृत पूर्णता है तथा जीवन की सभी रसायनी भौतिक प्रक्रियाओं से इसे बढ़ावा मिलता है । मनुष्य में जीवन देने वाले प्रमुख बल के बिना रोग का कोई लक्षण नहीं हो सकता तथा मुख्यतः यह प्रमुख बल में गड़बड़ी से होता है । शरीर क्रिया विज्ञान को स्वास्थ्य में शारीरिक प्रक्रियाओं का उल्लेख करते हुए अध्ययन कराया जाना चाहिए ।

विभिन्न प्रणालियों का अध्ययन करते समय विभिन्न विभागों के बीच तालमेल होना चाहिए । शरीर रचना विज्ञान तथा शरीर क्रिया विज्ञान के दोनो विभागों के बीच सह पाठ्यक्रम होने चाहिए ताकि दोनो विषयों को पढ़ाने के बीच अधिक सामंजस्य बिठाया जा सके ।

नियत समयानुसार गोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिए तथा शरीर क्रिया विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान तथा जैव रसायन विज्ञान पर संभाषण इस प्रकार से किए जाने चाहिए ताकि एकीकृत अध्ययन अधिक अर्थपूर्ण हो सके ।

सैद्धान्तिक

प्रस्तावना

जीवन का मूलभूत सिद्धांत । कोशिका तथा इसकी विभिन्नताएँ । उत्तक तथा शरीर के अंग ।

जैव रसायन सिद्धांत

प्रोटोप्लाज्म के प्रारंभिक संघटक, प्रोटीन संरचना, कार्बोहाइड्रेट तथा लिपिड, एन्जाइम ।

जैव – भौतिक सिद्धांत

धावन ध्यान की इकाई, कण, विद्युत अपघटय, गैर विद्युतअपघटय, निस्पंदन प्रसार अल्ट्रासोनिक डायलिसिस, सतही पैमानी, ग्रहणता, हाइड्रो-ट्रोफी, डोमेन सन्तुलन, कोलोअड, अम्लक्षारीय आधारित संघटक ।

वातावरणीय शरीर क्रिया विज्ञान

- 1 चर्म — संरचना तथा कार्य ।
- 2 शरीर तापमान नियंत्रण, हाइपोथरमिया ।

कंकाल-पेशीय तंत्र

- 1 पेशीय-रेशों की सामान्य जानकारी तथा वर्गीकरण ।
- 2 उत्तेजना — निर्माण, जोड़ तथा अणु स्तर का निर्माण ।
- 3 कंकालिक माँस-पेशियों के गुण-धर्म तथा उत्तेजना वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारण ।
- 4 माँसपेशियों की शक्ति — परिवर्द्धन ।

तंत्रिका

- 1 तंत्रिका कोशिका की संरचना व कार्य ।
- 2 तंत्रिका तथा मांसपेशी में जैव विद्युतीय प्रक्रिया, आर०एम०पी०, क्रिया और इसके संचारक, माँसतंत्रिका संचारण ।
- 3 तंत्रिका रेशों का वर्गीकरण तथा गुण-धर्म ।
- 4 वैलेरिन अप्रजनन, पुनः प्रजनन तथा अप्रजनन की क्रिया ।

रक्त

- 1 सामान्य रूप में रचना तथा कार्य ।
- 2 प्लाज्मा प्रोटीन का शरीर वृत्त, साधारण मूल्य, ई०एस०आर० तथा अन्य रक्त सूचक ।
- 3 लालरक्त कोशिका, श्वेतरक्त कोशिका तथा प्लेटलेट की शरीर वृत्ति रक्त गठन, भाग्य तथा कार्य ।
- 4 शरीर द्रव्य भाग, उनका मापन, रक्त माप तथा इसका नियंत्रण ।
- 5 ए०बी०ओ तथा आर०एच० रक्त वर्गीकरण पद्धति ।
- 6 लिम्फेटिक्स तथा आर०ई० पद्धति ।
- 7 रक्त बंधन तथा रक्त रूकाव (हीमोस्टेसिस)

हृदय वाहिका तन्त्र (ह०वा०त०)

- 1 हृदय पेशी संरचना तथा गुणधर्म ।
- 2 हृदय स्पेदन का प्रजनन तथा उत्पादन, ई०सी०जी० (सामान्य) ।
- 3 हृदय चक्र, दाब, माप परिवर्तन, हृदय ध्वनि इत्यादि के संदर्भ में ।
- 4 हृदय गति तथा इसका नियंत्रण ।
- 5 हिमोडायनेमिक्स, रक्त दाब तथा इसका नियंत्रण ।
- 6 तंत्रिका तथा रक्त शिराओं का रायसानिक नियंत्रण ।
- 7 आघात के शरीर क्रिया विज्ञानी आधार ।

श्वसन प्रणाली

- 1 प्रस्तावना, सामान्य संगठन ।
- 2 श्वसन की यांत्रिकी, अनुपालन ।
- 3 फुस्फुसी विस्तार तथा क्षमतायें ।
- 4 फुस्फुसी तथा वायुकोश वातायन ।
- 5 गैसीय बदलाव का भौतिक संचालन तथा श्वसनीय गैसों का परिवहन ।
- 6 तंत्रिका तथा श्वास का रासायनिक नियंत्रण ।
- 7 अल्पआक्जीयता, दशानुकूलन, श्वायता (साइनोसिज), श्वास आक्सीकरण, अनियंत्रित श्वसन ।
- 8 फुस्फुसी कार्य जांच ।
- 9 रक्त वाहिका पर श्वसन का उच्च व निम्न वायुमण्डील दाब का प्रभाव, अप्राकृतिक श्वास ।

पाचन तंत्र

- 1 साधारण प्रस्तावना, संगठनात्मक योजना तथा मूल्यांकनात्मक महत्व ।
- 2 गठन कार्य तथा लार नियंत्रण, गैसीय, अग्नाशीय, आंत तथा पित्त का स्राव ।
- 3 पाचन क्षेत्र की गति ।
- 4 पाचन क्षेत्र की ग्रहणशीलता ।
- 5 यकृत तथा पित्त ग्रन्थि की क्रिया वृत्ति संरचना तथा कार्य ।

उत्सर्गी अंग

- 1 गुदों की सामान्य प्रस्तावना, संरचना तथा कार्य ।
- 2 मूत्र के उत्पादन की यांत्रिक ।
- 3 मूत्र का घनीभूतता एवं पतलापन का यांत्रिकी ।
- 4 मूत्रण की क्रिया वृत्ति ।

अन्तः स्रावी

- 1 पीयूषिका, थाइरायड, पैरा-थाइरायड, अग्नाश्य, अधिवृक्क प्रास्तस्था तथा अधिवृक्क मज्जा ।
- 2 अतः स्रो की ग्रंथियों का स्राव नियंत्रण ।

प्रजनन

- 1 प्रजनन के साधारण व विभिन्न प्रकारों की प्रस्तावना ।
- 2 अण्ड कोश तथा डिंबग्रन्थि की शरीर वृत्ति ।
- 3 मासिक धर्म, गर्भाधारण तथा स्तनपान की शरीर वृत्ति ।
- 4 नाल तथा इसके कार्य, भ्रूण रक्त प्रवाह तथा श्वसन ।

केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र

- 1 तंत्रिका तंत्र तथा नाड़ी दर्द का सामान्य संगठन, संरचना तथा कार्य ।
- 2 प्रमस्तिष्क मेरु द्रव ।
- 3 अन्तर्ग्रथन की कार्य शरीर प्रवृत्ति तथा ग्रहणकर्ता अंग ।
- 4 परावर्तन की क्रियावृत्ति — परावर्तन का वर्गीकरण, गुणधर्म इत्यादि ।
- 5 संवेदी तथा मोटर ट्रेक्ट तथा मेरु रज्जु अर्ध खण्ड, खण्ड का प्रभाव एवं व्यवहार ।
- 6 मेरु, विप्रमस्तिष्क तथा डीकोरेटीकेट तैयारी तथा आसन तथा संतुलन का नियंत्रण ।
- 7 जालीय संरचना ।
- 8 अनुमस्तिष्क तथा बेसल गेंगेलिया ।
- 9 संवेदी तथा मोटर प्रास्तस्था ।
- 10 स्वगतिशीलता की शरीर क्रिया
- 11 प्रातस्था के उच्च कार्य; नींद तथा जागना, ई०ई० जी, यादाश्त, बोलना, सीखना ।
- 12 थैलेमस और हाईपोथैलेमस तथा लिंबिक तंत्र की क्रिया वृत्ति ।
- 13 स्वसंचालित तंत्रिका तंत्र, परीधीय तथा केन्द्रीय यांत्रिकी की क्रिया वृत्ति ।

विशेष ज्ञानेन्द्रियां

- 1 स्वाद तथा गंध संवेदना की क्रिया वृत्ति ।
- 2 कर्ण—सामान्य शरीर रचना, आन्तरिक, मध्य तथा बाह्य कर्ण द्वारा तरंग उत्पन्न करना ।
- 3 श्रवण की क्षेत्रीय तथा परीधीय यांत्रिकी तथा श्रवण मार्ग ।
- 4 साधारण परावर्तनीय स्रोत, तथा आँख की सुरक्षा यांत्रिकी की साधारण शरीर रचना ।
- 5 एकउस हयूमर का गठन, चक्रीय तथा कार्य ।
- 6 दृष्टि की क्रिया वृत्ति, बिम्ब बनना, परावर्तन सामंजाच में व्याधा, दृष्टि दोष ।
- 7 छाया चिक्रीय रेटिना के शरीर क्रिया, वृत्तिक कार्य, डार्क तथा मध्यम ग्राहयता, दृष्टि की फोटो केमिस्ट्री, वर्णाधता ।
- 8 दृष्टि मार्ग तथा विभिन्न स्तरों का प्रभाव ।

पोषज

- 1 गर्भावस्था, स्तनस्रवण तथा विकासविधि में संतुलित आहार तथा विशेष आहार की जरूरत ।

जैव रसायन

जैव रासायनिक सिद्धांत तथा प्रोटोप्लाज्म का प्रारंभिक गठन

प्रोटीन का रसायन

कार्बोहाइड्रेड का रसायन

लिपिड का रसायन,

एन्जाइमस तथा विटामिनस,

प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेड खनिज, जैवभौतिक प्रक्रिया तथा उनका मानव शरीर से संबंध का चयापचय ।

शरीर क्रिया विज्ञान की प्रयोगात्मक की सूची

- 1 रक्त संग्रह की पद्धति
- 2 हिमोग्लोबीनोमीटर
- 3 सूक्ष्मदर्शी बनावट, प्रयोग व रखरखाव
- 4 कुल श्वेत रूधिर कणिका मापन
- 5 श्वेत रूधिर कणिकाओं अलग-अलग मापन
- 6 पैकड सेल वोल्यूम
- 7 रक्त कणिकाओं का गुणन
- 8 ई0एस0आर0
- 9 रक्त स्त्राव अवधि
- 10 रक्त जमाव अवधि
- 11 रक्त ग्रुप
- 12 इतिहास लेना तथा सामान्य जाँच
- 13 पाचन तंत्र की जांच
- 14 हृदय रक्त संचार प्रणाली की जांच
- 15 नाडी
- 16 मनुष्य में धमनी रक्तदाब का मापन तथा आसन, व्यायाम तथा ठण्ड के दबाव का असर ।
- 17 ई0सी0जी0 प्रणाली की नैदानिक जांच
- 18 स्टेथोग्राफी
- 19 स्पाइरोमीटरी
- 20 उच्चकार्यो की जांच
- 21 कपाल तंत्रिका (क्रेनिअल नर्वज)
- 22 मोटर कार्य
- 23 परिवर्तिता
- 24 संवेदी प्रणाली
- 25 शरीर तापमान का मापन ।

प्रदर्शन सूची

- 1 उत्तेजना की विविधताएँ, फेराडिक या आगनात्मक तथा गैल्यूएनिक या सामान्य प्रवाहः प्रयोगशाला में प्रयोग होने वाले यंत्र ।
- 2 मांसपेशियों की उत्तेजना ।
- 3 श्रेणीकृत उत्तेजना का प्रभाव ।
- 4 सामान्य मांसपेशीय खिंचाव, तापमान का मांसपेशियों पर प्रभाव ।
- 5 दो लगातार उत्तेजनाओं का मेढ़क के कंकालिक मांसपेशीय पर प्रभाव ।
- 6 टिटैनस की उत्पत्ति ।
- 7 थकावट ।
- 8 मेढ़क के गैस्ट्रोनिमियस मांसपेशी पर फी व बोझ के पश्चात् का प्रभाव ।
- 9 हृदय रुकावट ।
- 10 हृदय मांसपेशी का गुणधर्म ।
- 11 स्तनमापी हृदय अपलावन तथा विभिन्न अणुओं का इस पर प्रभाव ।
- 12 वेगोसिम्पेथेटिक ट्रंक तथा क्रिसेन्ट की उत्तेजना का प्रभाव, मेढ़क के हृदय पर ।

- 13 एसिटाइलकोलाइन का हृदय पर प्रभाव ।
- 14 मेढक हृदय पर एड्रिनेलिन का प्रभाव ।
- 15 निकोटीन का मेढक हृदय पर प्रभाव ।
- 16 फोटोकाइनेटिक उत्तेजना, ऑपथेलमोस्कोपी तथा टोनोमीटरी ।
- 17 स्तनधारी जीवों के रक्त दाब तथा श्वसन को दर्ज करना तथा उनको प्रमाणित करने वाले कारकों का अध्ययन करना ।
- 18 रक्त का विशिष्ट धनत्व ।
- 19 गैसीय विश्लेषण ।

जैव रसायन में प्रयोगात्मक

- 1 जैव रसायन की प्रस्तावना तथा प्रयोगशाला यंत्रों की पहचान ।
- 2 डाइसेकबेराइडस का अध्ययन—लैक्टोज, माल्टोज तथा सूकरोज ।
- 3 पोलीसेकराइड का अध्ययन—स्टार्च, डैक्सट्रिन तथा ग्लाइकोजन ।
- 4 प्रोटीन की प्रस्तावना ।
- 5 सामान्य मूत्र रिपोर्ट (इनऑर्गेनिक तथा ऑर्गेनिक संघटक) ।
- 6 अन्जान द्रव — अध्ययन ।
- 7 मूत्र में ग्लूकोज संख्यात्मक तथा ऑकलन ।

प्रश्न पत्र— 1

जैव भौतिकी के मौलिक घटक, जैव रसायन, रक्त तथा लसिका, हृदय वाहिका प्रणाली, रैटीक्यूलोएन—डोथिलिडिल प्रणाली, तिल्लि, श्वसन प्रणाली, उत्सर्गी प्रणाली, त्वचा, शारीरिक तापमान का विनियमन संवेदी अंग ।

प्रश्न पत्र— 2

अंतः स्त्रावी अंग, तंत्रिका प्रणाली, तंत्रिका पेशी शरीर वृत्ति, पाचन प्रणाली तथा चयापचय, प्रोटीन कार्बोहाइड्रेड तथा लिपिड, एन्जाइम पोषण का जैवरसायन ।

प्रयोगात्मक परीक्षा

- 1 मूत्र के सामान्य तथा असामान्य भौतिकी तथा रसायन घटकों (मात्रात्मक) परीक्षा ।
- 2 कुल रक्त कोशिका गणना (आर०बी०सी० या डब्ल्यू० बी० सी०) परिधीय रक्त की विभेदक की गणना या हीमोग्लोबिन (एच०बी०) प्रतिशतता का ऑकलन ।
- 3 यंत्रों तथा उपकरणों पर मौखिक परीक्षा ।
- 4 प्रोटीन/कार्बोहाइड्रेड लाइपोआड की जैव रसायन परीक्षा ।
- 5 परीक्षणात्मक शरीर क्रिया विज्ञान ।
- 6 प्रयोगशाला नोट पुस्तिका ।
- 7 परीक्षणों पर मौखिक प्रश्न ।

होम्योपैथी भेषजी

सैद्धांतिक

होम्योपैथी भेषजी में शिक्षा निदेश की योजना इस प्रकार से तैयार होनी चाहिए जिससे एक उद्योग तथा विभिन्न प्रविधियों के वितरण की कार्यव्यवहारिक ज्ञान प्रदत्त हो सके । होम्योपैथी भेषजी का ऑर्गेनन तथा मेटेरिया मेडिका, औषध प्रूविंग तथा शक्ति की नातेदारी तथा क्रमिक विकास पर जोर दिया जाना चाहिए ।

होम्योपैथी भेषजी के पाठ्यक्रम को निम्न लिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया जाएगा:—

भाग 1:— विषय का पूर्वाभिमुखीकरण

वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान तथा रसायन विज्ञान का मौलिक इतिहास उनके शब्द कोष व शब्द प्रयोग के नियमों सहित :—

- 1 (अ) सामान्य नाम, पर्यायवाची, हाइपोनिमस, टाइपोनिमस, अवैध नाम;
(आ) व्यवसायिक नाम तथा वानस्पतिक नामों के लाभ व हानियां,
(इ) होम्योपैथिक औषधियों के नामकरण में विसंगतियां ।
- 2 औषध विचारधारा; उनकी खोज, सिद्धांत, भेषज विज्ञान तथा मेटेरिया मेडिका, क्षेत्र तथा सीमायें ।
- 3 भेषजिक कला व विज्ञान का इतिहास ।
- 4 होम्योपैथी भेषज पर साहित्य ।
- 5 होम्योपैथी भेषज के स्रोत ।
- 6 होम्योपैथी भेषज विज्ञान; इसकी विशेषतायें तथा उद्भव ।
- 7 भेषज ज्ञान का महत्व ।
- 8 होम्योपैथी में परीक्षण तकनीक तथा उच्चारार्थ शक्तियों का ज्ञान ।
- 9 भेषजी पहलू ।
- 10 भेषजिक संबंध बिना विज्ञान के ।
- 11 अतः संबंध, विभिन्न भेषजी विचारधारा एलोपैथी तथा होम्योपैथी भेषजी के संबंध पर बल देते हुए ।
- 12 औषध गुणधर्म ।
- 13 (अ) सामान्य में औषध प्रबंधन मार्ग ।
(अ) होम्योपैथी औषध उपचारार्थ संबंधन के मार्ग ।
(अ) औषध क्रिया
(आ) औषध प्रयोग

भाग—II

स्पष्टीकरण तथा परिभाषा:—

- (अ) भोजन, विष, प्रसाधन की,
- (आ) औषध पदार्थ, औषध, दवा, उपचार (रेमेडी) की
- (इ) भेषज, भेषज विज्ञान, भेषज संग्रह, औषध-प्रभाव विज्ञान तथा दूसरे संबंधित शब्द विषयागत प्रयुक्ति । होम्योपैथी भेषज संग्रह ।

होम्योपैथी भेषज निम्न के संबंध में:-

- (अ) ऑर्गेनन ऑफ मेडिसन सूत्र 264से 285 ।
- (आ) मेटिरिया मेडिका ।
- (इ) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था ।

भेषज एवं भेषज संग्रह; इसके स्रोत तथा अन्य विज्ञानों के साथ संबंध। होम्योपैथिक औषधियों को वर्गीकृत करना उनके:-

- (अ) वानस्पतिक एवं
- (आ) प्राणी प्रकृति के क्रमानुसार ।

प्रत्येक दवा का अंग्रेजी नाम

भारतीय भाषाओं अर्थात् आसामी, बंगाली, हिन्दी, गुजराती, कन्नड़, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मराठी, संस्कृत, तमिल, तेलुगु, उर्दु उड़ीया, इत्यादि में सामान्य नाम अभ्यर्थियों को अपने क्षेत्रों में प्रचलित सामान्य नामों को सीखने पर बल के साथ ।

मात्राशास्त्र

होम्योपैथी मात्राशास्त्र: इसके तर्क, लाभ तथा हानियां ।

शक्ति निर्धारण, पोटेन्टाइजेशन: इसके तर्क, विज्ञानिकता तथा क्रमिक विकास तथा परिमाण वाहक (व्हीकलस)

औषध तैयार करने के परिमाण। पॉलीक्रेस्ट औषधियों का भेषजिक क्रिया (50 औषधि सूची संलग्न) । नुस्खा प्रलेखन में प्रयुक्त संक्षिप्त शब्द ।

कानूनी भाग:- होम्योपैथी भेषज, औषध तथा प्रसाधन अधिनियम, विष अधिनियम, भेषज अधिनियम, कानून के संदर्भ में ।

प्रयोगात्मक

- (1) होम्योपैथी औषधिय यंत्रों तथा अभियंत्रों की पहचान तथा साभ्यास एवं उनकी सफाई ।
- (2) महत्वपूर्ण होम्योपैथिक औषधियों की (संलग्न सूची के अनुसार) पहचान:-
 - (i) तीस औषध पदार्थों तथा परिशिष्ट 1 में सूचीबद्ध, का गुरुदर्शी (मेक्रोस्कोपिक) अध्ययन,
 - (ii) उद्भिज संग्रह के लिये तीस औषध पदार्थों का संग्रह
 - (iii) 3x पोटेन्सी तक के दो ट्रिचुरेशनस का सूक्ष्मदर्शी अध्ययन ।
- (3) वाटर बाथ के साथ एक औषध पदार्थ का आद्रता अणु का परिमाण ।
- (4) इथाइल एल्कोहल, डिस्टिलड जल, दूध की शर्करा की शुद्धता जांच तथा डिस्टिलड वाटर तथा एल्कोहल की विशिष्ट संघनता के साथ ।
- (5) ग्लोब्यूल के माप का परिमाण, दूध शर्करा का औषधिकरण, डिस्टिलड वाटर-औषध मात्रा का बनाना ।
- (6) तैयारी करना तथा, वितरण तथा जल-मिश्रित एल्कोहल घोल तथा जल-मिश्रण ।
- (7) 3 पालिकैस्ट का मदर टिंचर तैयार करना ।
- (8) 3 कच्ची औषधियों का 3x तक ट्राइचुरेशन तैयार करना ।
- (9) 10 प्रतिशत औषध क्षमता के अतिरिक्त मदर टिंचर और घोल तैयार करना ।
- (10) 3 मदर टिंचर का पोटेन्टाइजेशन 6 डेसीमल स्तर तथा 3 सेंटेसीमल स्तर तक का बनाना ।

- (11) 3 औषधियों की 6x तक ट्राइचुरेशन तथा उनका द्रव पोटेंसीयों में बदलना ।
 (12) बाह्य प्रयोगी औषध का बनाना—प्रत्येक 1 ।
 (13) नुस्खा प्रलेखन तथा उसका वितरण ।
 (14) प्रयोगशाला पद्धति:—
 (अ) सब-लिमेशन
 (आ) डिस्टीलेशन
 (इ) डिक्वेंटेशन
 (ई) फिल्ट्रेशन
 (उ) क्रिस्टलाईजेशन
 (ए) परकोलेशन ।
 (15) अत्याधिक मात्रा में होम्योपैथी औषध बनाने वाली प्रयोगशालाओं के अध्ययन हेतु दौरे ।

परिशिष्ट:—

भेषजी क्रिया

भेषजी क्रिया का अध्ययन करने के लिए भेषज विज्ञान के पाठ्यक्रम में शामिल औषधियों की सूची:—

- 1 एकोनाईट नैप
- 2 एडोनिस वर्नेलिस
- 3 एलियम सीपा
- 4 आरजेन्टम नाइट
- 5 आर्सेनिक एल्ब
- 6 बेलाडोना
- 7 कैक्टस जी
- 8 कैन्थारेस
- 9 कैनेबिस इंड
- 10 कैनेबिस सेत
- 11 सिंकोन्ना ऑफ
- 12 कोफिया क्रूड
- 13 क्रेटेगस
- 14 क्रोटैलस होर
- 15 जेलसेमियम
- 16 ग्लोनाइन
- 17 हाइड्रेसट्रिस कैन
- 18 हायोसाइनेमस एन
- 19 काली बाइक्रो
- 20 लेकेसिस
- 21 लिथियम कार्ब
- 22 मरक्यूरियस कोर
- 23 नाजा टी
- 24 नाईट्रिक एसिड
- 25 नक्स वोमिका
- 26 पैसिफ्लोरा इनकारनाटा

- | | |
|----|--------------|
| 27 | स्टैनम मेट |
| 28 | स्ट्रेमोनियम |
| 29 | सिमफाइटम |
| 30 | टेबेकम |

पहचान के लिए औषधियों की सूची

I. सब्जी जगत

- | | |
|----|-----------------------------|
| 1 | इगल फोलिया |
| 2 | एनाकारडियम ओरियन्टेल |
| 3 | एनडोग्राफिस पेनिक्वुलेटा |
| 4 | कैलेन्डूला ऑफिस |
| 5 | कैसिया सोफेरा |
| 6 | सिनकोन्ना ऑफ |
| 7 | कोकुलस इंडिकस |
| 8 | कॉफिया क्रूडा |
| 9 | कोलोसिंथ सिट्रेलस |
| 10 | कोक्रस सेटाइवा |
| 11 | क्रोटोन टिग |
| 12 | साइनोडोन |
| 13 | फाइकस रिलिजिओसा |
| 14 | होलेरहेना एन्टिडाइसेंट्रिका |
| 15 | हाईड्रोकोटाइल |
| 16 | जसटिसिया अधाटोडा |
| 17 | लोबेलिया इनफलेटा |
| 18 | नक्स वोमिका |
| 19 | ओसीमम |
| 20 | ओपियम |
| 21 | रावोलफिया सर्पेनटाइन |
| 22 | रिह्वयूम |
| 23 | साराका इंडिका |
| 24 | सेना (कैसिया एक्यूटिफोलिया) |
| 25 | स्ट्रेमोनियम मेट |
| 26 | विन्का माइनर |

II. रसायन

- | | |
|---|--------------------|
| 1 | एसिटिक एसिड |
| 2 | एल्यूमिना |
| 3 | आर्जेनटम मेटेलिकम |
| 4 | आर्जेनटम नाइट्रीकम |
| 5 | आर्सेनिक एल्ब |
| 6 | केलकेरिया कार्ब |
| 7 | कार्बोवेज (चारकोल) |

- 8 ग्रेफाइटिस
- 9 मैग्नीशीयम
- 10 मर्करी (घात)
- 11 नेट्रम म्यूर
- 12 सल्फर

II. पशु जगत

- 1 एपिस मेलफिक
- 2 ब्लाटा ओरियनटेलिस
- 3 फोरमिका रूबा
- 4 सीपीया
- 5 टेरेन्टुला क्यूबेनसिस

होम्योपैथिक मेटिरिया मेडिका

1. होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका की रचना अन्य मेटिरिया मेडिकाओं की रचना से भिन्न है । होम्योपैथी का विचार है कि मानव-शरीर के पृथक-पृथक अंगों या तंत्रों पर अथवा पशु शरीर पर या उनके भिन्न-भिन्न हिस्सों पर औषधि क्रिया का अध्ययन, ऐसी क्रिया का जीवन प्रक्रिया पर प्रभाव के एक पक्ष का अध्ययन मात्र है । इसमें हम औषधि की क्रिया का समग्र रूप में मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं । और परिणामतः वह रूप हमारे अध्ययन से छूट जाता है ।

2. औषधि क्रिया का आवश्यक और संपूर्ण ज्ञान तभी हो सकता है जब स्वस्थ व्यक्ति पर मात्रात्मक सिनाप्टिक औषधि का प्रयोग किया जाए । इसी पद्धति से हम व्यक्ति के सम्पूर्ण मन और शरीर से संबंधित बिखरे हुए आंकड़ों को समझ सकते हैं और परिणामतः ऐसे समग्र मानव पर ही औषधि ज्ञान का प्रयोग किया जाना है ।

3. होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका में ऐसी औषधि से उत्पन्न लक्षणों का कार्यप्रदर्शी (शिमेटिक) व्यवस्थाक्रम वर्णित होता है उसमें उनके निर्वचन या अंतर संबंध के बारे में कोई सिद्धांत या स्पष्टकीकरण नहीं दिया जाता है । प्रत्येक औषधि का संश्लेषात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए और इसी के आधार पर होम्योपैथी का विद्यार्थी ऐसी औषधियों का पृथक-पृथक और सनिष्टि रूप में अध्ययन करने और उपयुक्त नुस्खा लिखने में सफल हो सकेगा ।

4. सर्वप्रथम, आम तौर से होने वाले रोगों पर अतिसामान्य औषधियों और पालीकेस्टों की चर्चा की जानी चाहिए जिससे कि विद्यार्थी नैदानिक (क्लीनिकल) कक्षा में या आउटडोर ड्यूटी पर ऐसी औषधियों के प्रयोग से भली प्रकार परिचित हो जाएं । उनकी विस्तृत और गंभीरतापूर्वक व्याख्या की जानी चाहिए और इस संदर्भ में, विद्यार्थियों को ऐसी औषधियों का तुलनात्मक और पारस्परिक संबंध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए । विद्यार्थी को औषधियों के प्रभाव क्षेत्र और सामूहिक संबंधों से पूर्णतः परिचित कराया जाना चाहिए ।

कम सामान्य और असाधारण औषधियों की मात्रा की रूपरेखा बताकर, उनके केवल विशिष्ट गुणों और लक्षणों के स्पष्टीकरण पर ही जोर दिया जाना चाहिए । तत्पश्चात् असाधारण औषधियों का अध्ययन कराया जाना चाहिए ।

5. ट्यूटोरियल अवश्य होने चाहिए जिससे कि एक छोटी संख्या में विद्यार्थी, अध्यापक के निकट संपर्क में आ सकें और रोगी के उपचार के संबंध में मेटिरिया मेडिका के प्रयोग का अध्ययन कर सकें और उसे समझ सकें ।

6. चिकित्साशास्त्र पढ़ाते समय विद्यार्थी का ध्यान मेटिरिया मेडिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जिससे कि रोग लक्षणों को देखते ही संबंधित औषधि की पूर्वगस से औषधि निश्चित की जा सके । विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे रोगों, में मेटिरिया मेडिका के व्यापक स्रोतों का उपयोग करें और विशिष्ट रोगों के लिए कुछ औषधियों मात्र को रट कर अपने ज्ञान को सीमित न करें । हनेमैन के इस दृष्टिकोण से विद्यार्थी न केवल प्रकट होने वाले रोग लक्षणों को ही उचित रूप में समझकर रूग्ण अवस्था में उनके रोगहर मूल्य को जान सकेगा अपितु औपचारिक परीक्षा संबंधी उसका बोझ भी कम हो जाएगा । अन्यथा वर्तमान रूख तो रोगों के प्रति एलोपैथिक दृष्टिकोण की ओर झुका हुआ है, जो आर्गेनन के सिद्धांतों के प्रतिकूल है ।

मेटिरिया मेडिका का प्रयोग, आउटडोर और अस्पतालों के वार्डों में मौजूद रोगियों के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए ।

तुलनात्मक मेटिरिया मेडिका और चिकित्साशास्त्र पर लेक्चरों और ट्यूटोरियलों को यथासाध्य विभिन्न विभागों में नैदानिक आयुर्विज्ञान पर होने वाले लेक्चरों के साथ, संबद्ध किया जाना चाहिए ।

7. औषधियों के बारे में शिक्षण के लिए महाविद्यालय में हर्बेरियम शीटें और अन्य निदर्श विद्यार्थियों को प्रदर्शित किए जाने चाहिए । लेक्चरों को आकर्षक बनाया जाना चाहिए और पौधों तथा अन्य सामग्री की स्लाइड दर्शित करके संबंधित पक्ष को स्पष्ट किया जाना चाहिए ।

8. (अ) प्रारंभिक लेक्चर: होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका के शिक्षण में निम्नलिखित विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए, अर्थात्:-

- (क) होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका का स्वरूप और प्रविषय
- (ख) होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका के स्रोत
- (ग) मेटिरिया मेडिका के अध्ययन के अनेक ढंग

(आ) औषधियों का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षों के अधीन किया जाना चाहिए, अर्थात्:-

- (1) सामान्य नाम, प्राकृतिक क्रम, प्राकृतिक आवास, प्रयुक्त भाग, तैयारी
- (2) औषधि पूर्वग के स्रोत
- (3) विशिष्ट लक्षणों और वृत्तियों पर जोर देते हुए औषधि की लाक्षणिकी (सिम्पटैमैटोलाजी)
- (4) औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन
- (5) सदृश, विरोधी, प्रतिकारी और सुसंगत औषधियाँ

(इ) शुश्लर की बायोकेमिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार 12 टिशू दवाओं का अध्ययन ।

परिशिष्ट-I

- 1. एकोनाइट नैप
- 2. एथूजा सायन
- 3. एलियम सीपा

4. एलोय सोकोट्रिना
5. एन्टिमोनियम क्रूड
6. एन्टिमोनियम ट्राट
7. एपिस मेलेफिक
8. आरजेन्टम नाइट
9. आर्निका मोंटाना
10. ब्राइयोनिया एल्ब
11. केमोमिल्ला
12. सिना
13. कोलचिकम ऑटम
14. कोलोसिथिस
15. डल्कामारा
16. इयुफरेशिया
17. इपीकेक
18. लीडम पाल
19. नक्स वोमिका
20. रस टौक्स
21. केलकेरिया फ्लोर
22. केलकेरिया फोस
23. केलकेरिया सल्फ
24. फेरम फोस
25. सिलिसिया

परिशिष्ट—II

द्वितीय बी०एच०एम०एस परीक्षा के लिए मेटिरिया मेडिका पाठ्यक्रम ।

प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा (परिशिष्ट—I) औषध सूची के अतिरिक्त, निम्न अतिरिक्त औषधियाँ द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम में शामिल की जायेगी ।

परीक्षा

1. एसिटिक एसिड
2. एकटिया रेसीमोसा
3. एगेरिकस मसकेरियस
4. एगनस कासटस
5. एल्यूमिना
6. एमब्रा ग्रिसेया
7. एमोनियम कार्ब
8. एमोनियम म्योर
9. एनाकारडियम ओरी
10. एपोसायनम कैन
11. आर्सेनिक एलबम
12. आर्सेनिक आयोड

13. आरम मेट
14. आरम ट्रिफ
15. बैपटीशीया टिंकटोर
16. बरबेरिस वल्ग
17. बिसमथ
18. बोरैक्स
19. ब्रोमियम
20. बोविस्टा
21. कैक्टस जी
22. कैलकेरिया आर्स
23. कैलेनडूला
24. कैमफोरा
25. कैन्थेरिस
26. चेलिडोनियम मेज
27. कोनीयम मैक
28. डिजिटेलिस पर
29. ड्रोसेरा
30. फेरम मेट
31. जैलसेमियम
32. हैलीबोरस
33. हिपर सल्फ
34. इगनैशिया
35. काली ब्रोम
36. क्रिओजेटम
37. नैटरम कार्ब
38. नक्स मोसकेटा
39. ओपियम
40. पेट्रोलियम
41. फोसफोरस
42. फाइटोलोका
43. पलैटीना मेट
44. सीपिया
45. स्पोजिया टोस्ट
46. विरेट्रम एल्ब
47. कालीम्यूर
48. कालीफोस
49. मैगनेशिया फोस
50. नैट्रम सल्फ

परिशिष्ट—III

परिशिष्ट I और II में उल्लेखित औषधियों के अतिरिक्त निम्न औषधियां तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा में मैटिरिया मैडिका पाठ्यक्रम में और सम्मिलित की गयी हैं:—

1. एक्टिया स्पाइकेटा
2. एडोनीस वरनेलिस
3. एनटीमोनियम आर्स

4. आर्जेन्टम मैटेलिकम
5. एसाफोइटीडा
6. एसटेरिन्स रुबेन्स
7. बैराइटा कार्ब
8. बेलाडोना
9. बेनजोइक एसिड
10. बुफो राना
11. केलेडियम
12. केलकेरिया कार्ब
13. कैनबिस इन्डीका
14. कैनबिस सेटाइवा
15. कार्बो वैजिटेबिलिस
16. कासटिकम
17. क्राटेलस होर
18. क्राट्रन टिंग
19. क्युपरम मेट
20. साइक्लेमन
21. डाएसकोरिया विलोसा
22. इक्विसटम
23. ग्रेफाइटिस
24. हायोसाइमस ना
25. हाइपेरिकम
26. आयोडम
27. काली कार्ब
28. काली सल्फ
29. कालमिया लतफोलिया
30. लेकेसिस
31. लाइकोपोडियम
32. मरक्यूरिस सोल
33. मरक्यूरिस कोर
34. मरक्यूरिस सल्फ
35. मोस्कस
36. म्युरेक्स
37. म्युरिएटिक एसिड
38. नाजा टि
39. नैट्रम म्युर
40. नैट्रम फोस
41. नाईट्रिक एसिड
42. ओन्समोडियम
43. ओक्जेलिक एसिड
44. पेट्रोलियम
45. फॉसफोरिक एसिड
46. फाइसोस्टीग्मा
47. पिकरिक एसिड
48. प्लमबम मेट

49. पोडोफाइलम
50. पलसेटिला
51. सीकेल कोर
52. सैलेनियम
53. स्टेफिसगेरिया
54. स्ट्रेमोनियम
55. स्टीकटा प
56. सल्फर
57. सल्फयूरिक एसिड
58. सिमफाइटम
59. सिफलाइनम
60. टैबेकम
61. टेरेक्सेकम
62. टेरेन्टूला क
63. टेरीबिनथिना
64. थैलप्सी बुरसा पी
65. थेरिडियोन
66. थूजा
67. थाइरोआडिनम
68. वैक्सीनम
69. जिनकम मेट

परिशिष्ट—IV

चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा के लिए शामिल औषध सूची:-

1. एबिस कैन
2. एबिस नाइग
3. अबरोमा अगस्ता
4. एबरोटैनम
5. एकेलिफा इंडिका
6. एनथ्रेसिनम
7. बैसिलिनम
8. बैराइटा म्युर
9. बेलिस पर
10. कैलोट्रोपिस इंडिका
11. कैपसीकम
12. कार्बो एनीमेलिस
13. कार्बोलिक एसिड
14. कैरिका पपाया
15. कैसिया सेफोरा
16. कालोफाइलम
17. सेड्रोन
18. सिकूटा वीरोसा
19. क्लीमेटिस

20. कोक्यूलस इंडिका
21. कोफिया क्रूडा
22. कोलिनसोनिया
23. कोंडूरेन्गो
24. कोरैलियम
25. क्रैटेगस
26. क्रोकस सटिवा
27. इयूपेटोरियम
28. फाइकस रिलिजियोसा
29. फ्लोरिक एसिड
30. ग्लोनाइन
31. हेलोनियस
32. हाइड्रेसटिस कैन
33. हाइड्रोकोटाइल एस
34. जोनोसिया असोका
35. जसटिसिया अधाटोडा
36. लैक कैन
37. लैक डीफ
38. लिलियम टिग
39. लीथियम कार्ब
40. लोबेलिया इन्फ
41. लायसिन
42. मैगनेशिया कार्ब
43. मैगनेशिया म्युर
44. मेडोराहीनम
45. मेलिलोटस ए
46. मेफाइटिस
47. मरक्यूरियस साइनेटस
48. मरक्यूरियस डल
49. मेज़ेरियम
50. मिलिफोलियम
51. ओसिमम सैन्क्ट
52. सोराइनम
53. पाइरोजिनम
54. रेडियम ब्रोमाइड
55. रेननक्युलस बल्ब
56. रैफेनस
57. रेथेनिया
58. राउवोलफिया सर्पेनटाइन
59. रहयूम
60. रोहडोडेनड्रोन
61. रयूमैक्स
62. रूटा जी
63. सेबेडिला
64. सेबल सेरुलाटा
65. सेबाइना

66. सेम्बयूकस
67. सेन्नुनेरिया कैन
68. सेनिक्युला
69. सेरेसपेरिला
70. स्पाइजेला
71. स्कुयिला
72. स्टेनम मेट
73. सिसिजियम जेमबोलिनम
74. ट्रीलियम पैन्डुलम
75. अरटिका यूरेनस
76. वेक्सिनम
77. वेरियोलिनम
78. विरेट्रम विरिडी
79. विबरिनम ओपूलस
80. विका माइनर
81. वाइपेरा

द्वितीय बी०एच०एम०एस०

सामान्य विकृति विज्ञान तथा सूक्ष्मजैव विज्ञान (परजीवी विज्ञान, जीवाणुविज्ञान तथा विषाणु विज्ञान सहित)

विकृति विज्ञान का अध्ययन डॉ० हनेमन द्वारा प्रतिपादित मियाजम की संकल्पना के तथा केन्ट, बोगर, रावर्ट तथा ऐलन द्वारा आगे विकास के संबंध में किया जाना चाहिए ।

विकृति विज्ञान की दृष्टि से मियाजम की अवधारणा, कोक्स पोस्टुलेट के संदर्भ में ।

सुग्राह्यता तथा प्रतिरोधकता का महत्व इसलिए रोग तथा निदान (क्योर) की होम्योपैथिक अवधारणा ।

- प्रत्येक मियाजम का विशिष्ट प्रकटीकरण
- लक्षणों/रोगों का, रोग विकृति विज्ञान के अनुसार विशिष्ट वर्गीकरण
- मियाजम तथा विकृति विज्ञान का सह-संबंध अर्थात् सोरा -सूजन इत्यादि
- विकृत विज्ञान में प्राकृतिक उन्नति
- घुलनशीलता - सूजन/दाहिक स्त्राव
- पतन, पकना
- सभी रोगों की विकृति विज्ञानी रिपोर्टों की व्याख्या तथा होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में इसकी उपयोगिता सहित ।

इसी प्रकार सामान्य विकृति विज्ञान तथा क्रमिक विकृति विज्ञान में प्रत्येक स्तर पर सह-संबंध, ताकि होमियापैथी स्नातक छात्र द्वारा विकृति विज्ञान की महत्वता को आसानी से समझा जा सके ।

मियाजम के संबंध में सामान्य विकृति विज्ञानी के विषय:-

- शोध — मरम्मत, चोट का उपचार
- प्रतिरक्षा

- व्यपजनन
- अर्बुद
- धनारत्रता
- अतःशल्यत
- शोफ

वर्णक चयापचय की व्याधा

- कैल्शियम चयापचय
- यूरिक एसिड चयापचय
- एमिनो एसिड चयापचय
- कार्बोहाइड्रेड चयापचय
- वसां चयापचय
- हाइपरट्रोफी - घाव भरना
- हाइपरप्लेजिया
- एनाप्लेजिया
- मेटाप्लेसिया
- इशचीमिया
- रक्तस्त्राव
- शॉक (आघात)
- दुबलापन (एट्रोफी)
- रिलेक्शेशन (आराम)
- हाईपरमिया
- संक्रमण
- उच्च-ताप
- नेक्रोसिस
- गैंगरिन
- इनफ्राक्शन

क्रमिक विकृति विज्ञान

प्रत्येक प्रणाली में महत्वपूर्ण तथा सामान्य रोगों का अध्ययन किया जाना चाहिए । इसके मूल्यांकन, प्रस्तुतिकरण पद्धति, विकास तथा रोग के प्रकटीकरण की दृष्टि से, अर्थात:-

आहार पद्धति

- | | |
|--------------------------|---|
| - जीभ | - अल्सर ट्यूमर |
| - मुखी गुहा (ओरल कैविटी) | - थ्रश, ट्यूमर |
| - ग्रास नली (ईसोफैगस) | - सूजन रोग ट्यूमर |
| - अमांशय | - सूजन रोग, स्वप्रतिराध रोग, ट्यूमर |
| - ग्रहणी | - सूजन रोग, एसिड, पेपसिन, पाचन |
| - आँत(छोटी-बड़ी) | - अल्सर, संक्रमण, ट्यूमर अपावशोषण, पाचन |
| - पुच्छ(अपेंडिक्स) | - सूजन रोग |
| - यकृत | - सूजन रोग, ट्यूमर, सिरहोसिस, पीलिया |
| - पित्ताशय | - सूजन रोग, ट्यूमर |
| - अग्नाशय | - सूजन रोग, ट्यूमर |

—	हृदयवाहिका रोग	—	सामान्य अव्यवस्थाएँ
—	केन्द्रीय तंत्रिका रोग	—	सामान्य अव्यवस्थाएँ
—	श्वसन अव्यवस्थाएँ	—	सामान्य अव्यवस्थाएँ
—	गुर्दे	—	ट्यूमर, यूरोडायनेमिक्स
—	लिंग पुरुष तथा स्त्री	—	सामान्य अव्यवस्थाएँ, ट्यूमर
—	कंकालिक तथा मांसपेशी रोग	—	सामान्य अव्यवस्थाएँ
—	चर्म	—	सामान्य अव्यवस्थाएँ, मेलानोमा इत्यादि
—	नैदानिक विकृति विज्ञान	—	सम्पूर्ण हिमेटोलॉजी

अभ्यास

नैदानिक तथा रासायनिक विकृति विज्ञान:—

हीमोग्लोबिन की गणना (एसीडोमीटर द्वारा) आर०बी०सी० तथा डबलू०बी०सी० की गणना महीन व मोटी फिल्मों का अभिरंजन (स्टेनिंग) डिफरेंशियल गणना तथा परजीवी ।

इरिथ्रोसाइट सैडिमेंटेशन दर, मूत्र, शारीरिक, रासायनिक, सूक्ष्मदर्शी द्वारा, एलब्युमिन तथा शर्करा की मात्रा, चेहरे, शारीरिक रासायनिक (ऑक्यूलर रक्त) तथा अंडा तथा प्रोटोजोआ सूक्ष्मदर्शी के लिये ।

निर्जीवाणुकरण, मीडिया की तैयारी सूक्ष्मदर्शी के प्रयोग । ग्राम नेगेटिव एसिड तीव्र अभिरंजन, विडाल तथा पास्चर और स्पाइरोकीट को डार्क इल्युमिनेशन स्टेन तथा लोवेडिटस मीडिया । ग्राम धनात्मक तथा ऋणात्मक कोकी तथा वैसीलि पस का थूकना कोरिने बैक्टेरियम ग्राम तथा एसिड तीव्र अभिरंजन ।

हैकानकी की प्लेट शर्करा प्रतिक्रिया—ग्राम स्टेन तथा ग्राम नेगेटिव की गतिशीलता ऋणात्मक आंत बैक्टीरिया, विडाल तथा पास्चुआर का प्रदर्शन तथा डार्क फील्ड का स्पाइरोस्टेस स्पष्टीकरण फाउटेंटन का स्टेन — लोवेट स्टेन नेकरोबायोसिस प्रविधियों का प्रदर्शन ।

उत्तक विकृत विज्ञान (हिस्टोपैथालोजी)

प्रत्येक प्रविधि की सामान्य स्लाइडस होनी चाहिए । समुचित विकृत विज्ञानी निदर्शों का प्रदर्शन, उत्तक विकृत विज्ञानी तकनीकों का अभ्यासिक प्रदर्शन अर्थात् फिक्सेशन, इम्बेडिंग जमाव सेक्शन, इसका महत्व :-

- फ्रोजन सेक्शन/इसकी महत्वता
- इलैक्शन सूक्ष्मदर्शी
- फेस कन्ट्रास्ट सूक्ष्मदर्शी ।

सैद्धान्तिक

जीवाणु विज्ञान :-

आकारकी जीवविज्ञान, विसंक्रमण, रसायन-चिकित्सा, कृत्रिम माध्य (मीडिया) संक्रमण, प्रतिरक्षा, प्रतिक्रिया, इम्यूनिटी अतिसंवेधता, त्वचा परीक्षण जीवाणु, स्वभाव का व्यवस्थित अध्ययन-महत्व । सामान्य विकारी और अधिकारी जातियों का आकारिक, सांस्कृतिक, जीव रसायनिक सीरमी और विषालु व्यवहार । रोग जीवाणुओं से उत्पन्न विकृति संबंधी परिवर्तन और उनका प्रयोगशाला निदान । स्ट्रेफिलोकोकाई, स्ट्रेप्टोकोकाई, डिप्लोकोकाई, नाइसीरिया, माइकोएक्टेरियम क्षय (टाइप) माइकोबैक्टेरियम लेपरी, स्पाइरोकेटीज और विकृति संबंधी माइको वेकेटरी के नाम और उनके बीच अंतर, कानीबैक्टीरियम डिप्थीरी, ऐरोबिक स्पोर युक्त बैक्टीरिया बेसीलस एन्थीस, अवायुजीव, रोगजनकों (पैथोजेन) के साधारण और विशिष्ट लक्षण । कुछ महत्वपूर्ण गैर रोगजनकों के नाम । ग्राम निगेटिव आंत्र जीवाणु रोगजनक सालमोनेलिया विवरिक वैक्टेरियम, पास्टरुरेना का वर्गीकरण पहचान । हीमोफीलिस, सूडोमोन, ब्रूसेला, रिकेटिसिया, प्रोटेयस, स्पाइरोकेटीज का सामान्य ज्ञान-सामान्य ज्ञान, टैपोनेमा पैलिडम और लप्टोस्पाइरेक्टैरे हीमोरेगियास के ब्यौरे । वायरस-साधारण लक्षण, रोग वर्गीकरण, कुछ प्रमुख वायरस रोगों से लेप्से, छोटी माता, रेबीज, जीवाणुभोजी से प्रतिरक्षा के कुछ उपाय । कोक्स के मत ।

परजीवी विज्ञान :-

प्रमुख राइजोपोडा के प्रोटोजोआ-वर्गीकरण नाम एण्टी हिस्टोलीटिक आकार की रोगजनन और रोगजनक विशिष्टताएं, निदान, प्लासमोडिया की एटिकोली स्पोरोजी से भिन्नता, जातियों का जीवनवृत्त और रोगजनन अन्तर ।

मैस्टिगोफोरा-सामान्य स्थूल आकृतिक लक्षण, वर्गीकरण, रोगजनन, वैक्टर, कालाअजार का विकृति विज्ञान, महत्वपूर्ण लक्षण, स्रोत बैलेटीडियम कोलाई के कारण रोग ।

कृमि -कुछ शब्दों की परिभाषा, साधारण वर्गीकरण, नेमाटोड, सेस्टोड और ट्रेमाटोड के बीच अन्तर, सेस्टोड और नेमाटोड महत्वपूर्ण जातियों के मुख्य विभेदक आकृतिक लक्षण और जीवनवृत्त तथा रोगजनन, जिगर, फेफड़ों, आंतों और रक्त का संक्रमण-सामान्य जीवनवृत्त-स्किलोसोमस और अन्य ट्रेमाटोडों के बीच अन्तर ।

वाइरस विज्ञान (वायरोलॉजी)

संक्रमण रोगों का निदान

परपोषी परजीवी संबंध

पीड़कजीवनाशी/कार्य विधि

प्रतिरक्षा विज्ञान का व्यावहारिक पक्ष अर्थात् निदान, निष्क्रिय प्रतिरक्षण, प्रतिरक्षा संक्षेप में, एड्स सहित, के प्रयोगात्मक पहलू ।

जीवाणु आनुवांशिकी (संक्षिप्त में)

गुर्दे मूत्राशय गवीनी (यूरेटर) मूत्रमार्ग

- ग्लेमेरकलो वृक्कशोध
- पायलोमेफाइटिस
- टयुबरक्युलर पायलोनेफ्राइटिस
- नेफरोटिक सिंड्रोम
- चयापचयी रोग तथा गुर्दे
- क्रमिक रोग व गुर्दे
- तीव्र और चिरकालिक गुर्दे खराबी
- गुर्दा अर्बुद
- पत्थरी
- सिस्टाइटिस (मूत्राशय की सूजन)
- यूरेट्रिक स्ट्रीक्चर
- मूत्रमार्ग की सूजन (यूरेथेटाइटिस), विशेष व गैर विशेष
- होम्योपैथी के संदर्भ में गुर्दा क्रियाशीलता की जांच

हृदय शिराओं के रोग

- अरक्तता (इश्चिमिक) हृदय रोग
- आमवात हृदय रोग
- वाल्वयूलर हृदय रोग
- उच्चरक्तचाप
- हृदय-मायोपैथी
- संक्रमित अन्तः हृदय शोध
- कन्जेसटिव हृदय-विफलता
- हृदयावरण संबंधी रोग
- हृदयआघात

पुरुष तथा स्त्री जननांग रोग

- अण्डकोश अर्बुद
- तीव्र तथा चिरकालिक पुरस्थशोध (प्रोस्टेटाइटिस)
- पुरस्थ अर्बुद
- नपंसुकता
- लिंग कैंसर
- डिबग्रथि का अर्बुद
- फाइबरोआड
- गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर
- बांझपन
- एंडोमेट्रियोसिस तथा एंडोमेट्रीयम
- स्तन शोध तथा अर्बुद

श्वास संबंधी रोग

- फुस्फुसी क्रियाशीलता जांच
- श्वसनी अस्थमा
- श्वसनीशोथ
- श्वसनी विस्फार (ब्रोन्कोकिएक्टेसिस)
- एमफाइजिमा
- एमपाइमा कोर पल्मोनरी
- न्यूमोनिया
- श्वसनी संबंधी कैंसर
- इंटरस्टीशियल फुस्फुसी रोग

गैस्ट्रो-इंटरसटाइनल रोग

- जीभ, स्टोमेटाइटिस, छाले, अर्बुद
- ग्रासनली, प्रतिक्रिया ग्रासनली शोथ
- ग्रासनली का अर्बुद
- उदर, गैसट्रिटिस, उदर कैंसर, ग्रेस्ट्रिक छाले (ulcer)
- यकृत सिरोहिसिस, हैपेटाइटिस, यकृत कैंसर
- यकृत फोड़ा
- यकृत क्रियाशीलता जांच
- पित्त पथरी
- अग्नाशय तीव्र तथा चिरकालिक अग्नाशय शोथ, अग्नाशय अर्बुद
- आतों के छाले, ड्युडोनल दर्द, बड़ी आँत का अर्बुद तथा मलाशय का अर्बुद
- अर्बुद
- कुपोषण सिंड्रोम
- संक्रमण
- एपेंडिक्स, तीव्र एपेंडिसाइटिस

चर्म रोग

- संक्रमण तथा अर्बुद

हड्डी रोग

- सारकोमा, ओस्टियोमा, पेजेट रोग
- ओस्टियोमाइलाइटिस, ट्युबरक्युलर ओस्टियोमाइलाइटिस
- रहयुमेटोआइड, सन्धि शोथ, ओस्टियो आरथराइटिस (गठिया)

सामान्य तंत्रिका तंत्र

— मेंनिनजाइटिस पायोजेनिक / यक्ष्मा

प्रमस्तिष्क मेरु द्रव

— विभिन्न रोगों की तस्वीरें

अंतकरोटीय तंत्र

थायराइड, डायबीटीस मेल्लाइटिस (मधुमेह)

प्रथम प्रश्न पत्र — साधारण क्रमिक विकृतविज्ञान तथा विषाक्त वाष्प (मिसाजमस)
द्वितीय प्रश्न पत्र — जीवाणु विज्ञान, परजीवी विज्ञान तथा नैदानिक विकृत विज्ञान
(प्रत्येक दो भागों में विभाजित होगा)

विकृत विज्ञान प्रयोगात्मक

प्रायोगिक, सूक्ष्म जीवविज्ञानी पहचान, पढ़ना व विकृत विज्ञानी जांचों की व्याख्या करना ।

द्वितीय बी०एच०एम०एस०

व्यवहार आयुर्विज्ञान और विषविज्ञान

होम्योपैथी आयुर्विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए यह विषय व्यावहारिक महत्व का है क्योंकि होम्योपैथी के चिकित्सकों को सरकार ऐसे क्षेत्रों में नियुक्त करना चाहती है जहां उनको चिकित्सा-विधिक मामले देखने होते हैं, शव परीक्षा करनी होती है और ऐसे मामलों में साक्ष्य देनी होती है । इन उद्देश्यों की पूर्ति की दृष्टि से व्यवहार आयुर्विज्ञान में जो प्रशिक्षण आजकल दिया जा रहा है वह अपर्याप्त है ।

उक्त पाठ्यक्रम के लिए अनेक संभाषण और प्रदर्शन किए जाने चाहिए जिनके अन्तर्गत निम्नलिखित विषय भी पढ़ाए जायें, अर्थात्:—

1. विधिक प्रक्रिया

व्यवहार आयुर्विज्ञान (मेडीकल ज्यूरिसप्रूडेन्स) की परिभाषा न्यायालय और उनका अधिकार क्षेत्र ।

2. चिकित्साचर (मेडीकल ईथिक्स)

चिकित्सक रजिस्ट्रीकरण संबंधी विधि और चिकित्सक तथा राज्य के पारस्परिक संबंध । होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 और उसके अधीन आचार संहिता, चिकित्सक और रोगी, व्यावसायिक गोपनीयता संबंधी अनाचार, चिकित्सक और विभिन्न कानून (अधिनियम)—प्रांतीय और केन्द्रीय, जैसे कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, लोक स्वास्थ्य अधिनियम, क्षति अधिनियम, बाल विवाह, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, ब्रोस्टल विद्यालय अधिनियम, चिकित्सीय गर्भ समाप्ति अधिनियम, पागलपन अधिनियम, भारतीय साक्ष्य अधिनियम आदि ।

3. व्यवहार आयुर्विज्ञान

जीवित और मृत व्यक्तियों की परीक्षा और पहचान अंग, अस्थियाँ, धब्बे आदि, स्वास्थ्य, चिकित्सा—विधिक, पूर्तिभवन (प्यूट्रीफिकेशन), ममीभवन, साबुनीकरण, मृत्यु के प्रकार, कारण, माध्यम, प्रारंभ आदि । हमले, व्रण, क्षतियाँ और हिंसा के कारण मृत्यु । श्वासावरोध के कारण मृत्यु, रक्त परीक्षा, रक्त धब्बे, शुक्र धब्बे, जलना, गरम तरल से जलना, विद्युत के झटके आदि । भूखा रहना, गर्भाधान, प्रसव, गर्भस्त्राव, शिशुवध, लैंगिक अपराध, राज्य जीवन के संबंध में उन्मत्ता और दुर्घटना बीमा ।

विषविज्ञान

सामान्य विषाक्तता, विभिन्न विषों के लक्षण और उपचार, शव—स्वरूप और परीक्षण के बारे में संभाषणों द्वारा एक पृथक पाठ्य विवरण होना चाहिए । निम्नलिखित विषों का अध्ययन—

खनिज अम्ल संक्षारक सब्लीमेट, आर्सेनिक और उसके मिश्र एल्कोहल, अफीम और उसके क्षार, कार्बोलिक अम्ल, कार्बन मोनोक्साइड, कार्बन डाईआक्साइड । मिट्टी का तेल, केनेबिस इंडिका, कोकीन, बेलेडोना, स्ट्रीकनिन और नक्स वोमिका, एकोनाइट, ओलिएन्डर, सर्पविष, प्रूसिक अम्ल, सीसाविष देना ।

4. चिकित्सा—विधिक शव परीक्षा

शव स्वरूप अभिलेखन सामग्री, रासायनिक परीक्षक को भेजना । रासायनिक परीक्षक और प्रयोगशाला निष्कर्षों का निर्वचन । व्यवहार आयुर्विज्ञान में लेक्चर—पाठ्यक्रम पूरा करने वाले विद्यार्थियों को चाहिए कि वे व्यावहारिक आयुर्विज्ञान के आचार्य द्वारा की जाने वाली चिकित्सा—विधिक शव परीक्षा को देखने और समझने के लिए सभी संभव प्रयास करें । ऐसी आशा की जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम दस शव परीक्षाएं देखे और समझे ।

5. प्रदर्शन

- (1) अस्त्र
- (2) कार्बनी और अकार्बनी विष
- (3) विषालु पौधे
- (4) चिकित्सा—विधिक विषयक चार्ट, चित्र, माडल, एक्सरे फिल्म आदि ।

आयुर्विज्ञान साभ्यास (प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन)

होम्योपैथी का रोग के प्रति भिन्न दृष्टिकोण है । यह एक बिमार व्यक्ति को सम्पूर्ण रूप में पहचान करता है न कि बिमार भागों के रूप में । इसमें व्यक्ति का अध्ययन उसकी स्वास्थ्य दशा से जब तक वह बीमारी प्रदर्शित करता है तथा सभी महत्वपूर्ण घटनाओं तथा सहायक कारणों को भी शामिल करता है ।

उपर्युक्त व्यक्तिकरण अध्ययन के लिए निम्न परिपेक्ष की आवश्यकता होती है ताकि व्यक्ति के प्रमुख पहलुओं को स्वास्थ्य बाधाओं की अपेक्षा अधिक स्पष्टता से प्रदर्शित किया जा सके :-

1. स्वास्थ्य बाधाओं की शरीर रचना- शरीर क्रिया दिशा- जैव रसायन के साथ सह संबंध ।
2. इसके प्रमुख कारणों का साधारण मूल्यांकन अभिव्यक्तियों के रखरखाव तथा पूर्वानुमान विवरणों का ज्ञान ।
3. क्षति पहुंचाने वाले या बाधाओं को सुधारने वाले कारणों का क्रमिक विकास, विभिन्न औषधियों तथा गैर चिकित्सीय उपायों सहित, का ज्ञान तथा उपायों के प्रयोग से उनकी संभावित प्रतिक्रिया की व्याख्या भी शामिल है ।

अध्ययन में निम्न पर बल दिया जायेगा ।

- (अ) अनप्रयुक्त भाग का समावेश
- (अ) शैथ्या के समीप तर्कसंगत नैदानिक ज्ञान जिसे सटीकता के साथ ज्ञान अर्जित करते हुए प्रयोग किया जा सकें ।

इससे एक ऐसे होम्योपैथिक चिकित्सक का विकास होगा जोकि आयुर्विज्ञान के अत्यास ज्ञान से भी अनभिज्ञ नहीं होगा । उसे इस प्रकार से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि रोग-तन्त्रिक अभ्यास के रूप में दुर्लभ बिमारियों में वह स्वयं न फंस जाए । प्रायोगिकता किन्तु एक तर्कसंगत चिकित्सक सही अंतर, तीव्र अनुमान तथा संकल्पना की स्पष्टता कर सके ।

वह तभी आयुर्विज्ञान के अपने ज्ञान का प्रयोग कर रोगियों की शाबाशी प्राप्त कर सकेगा । उपर्युक्त की प्राप्ति के लिए सिद्धांत व अभ्यासिक प्रशिक्षण का निम्न विभाजन किया जा सकता है ताकि छात्रों को अधिक स्पष्टता से तथ्यों का ज्ञान हो सके ।

अध्ययन पाठ्यक्रम — 3 वर्ष

- II (द्वितीय) बी०एच०एम०एस०, अर्थात्
- III (तृतीय) बी०एच०एम०एस० तथा
- IV (चतुर्थ) बी०एच०एम०एस० में ।

परीक्षाएँ चतुर्थ बी०एच०एम०एस की समाप्ति पर आयोजित की जानी चाहिए । इन विषयों के अतिरिक्त अन्य विभागों के साथ सहयोग लिया जाए जोकि औषध प्रशिक्षण में लाभकारी होगा । यह विभाजन II, III, तथा IV बी०एच०एम०एस० तथा छात्रों के सीखने के स्तर को ध्यान में रखते हुए किया गया है ।

II (द्वितीय) बी०एच०एम०एस

1. रोगी को पूर्ण रूप में जाँचने की नैदानिक प्रविधियाँ
2. श्वसनी रोग —शल्य क्रिया में संबंधित भाग
3. पाचन क्षेत्र तथा (अग्नाशय के रोग) रोग —शल्य क्रिया में संबंधित भाग

III (तृतीय) बी०एच०एम०एस०

1. आनुवांशिक कारण —चिरकालिक रोग तथा मियाजम, ऑर्गेनन तथा दर्शन विभाग
2. पौषणिक रोग —पोषण, स्वास्थ्य सामुदायिक औषध विभाग में
3. रोग में प्रतिरोगी कारक—सामुदायिक औषध विभाग में ज्ञान पदिक सैंग विज्ञान
4. रोग में वातावरणीय प्रभाव/कारण
5. चयापचयी रोग
6. अंतः करोटीय रोग —आर्तव या मासिक धर्म विकार स्त्री रोग-विभाग में

उपर्युक्त को पुनः संबंधित चिकित्सा शास्त्र विषयों के साथ दोहराने की आवश्यकता होगी ।

IV (चतुर्थ) बी०एच०एम०एस०

1. यकृत तथा पित्त नाल रोग
2. रूधिर रोग
3. हृदय वाहिका तंत्र रोग
4. गुर्दे व मूत्रमार्ग रोग
5. जल तथा इलेक्ट्रोलाइट संतुलन रोग
6. रूथिक उत्तक विकार, हड्डी व जोड़ विकार
7. चर्म रोग
8. केन्द्रीय तंत्रिका प्रणाली तथा परीधीय तंत्रिका तंत्र — मानसिक रोग
9. तीव्र आपातकालिक विषाकता सहित
10. शिशु रोग

इन शब्दावलीयो में उपर्युक्त को होम्योपैथिक चिकित्साशास्त्र में अधिक बल दिया जाएगा ।

औषध के सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक पहलुओं के अध्ययन के लिए तीन वर्ष के पाठ्यक्रम की समाप्ति पर IV(चतुर्थ) बी०एच०एम०एस० में लागू किया जायेगा । परीक्षा में पात्रता के लिए 10 सम्पूर्ण रोगी विवरण, तृतीय व चतुर्थ बी०एच०एम०एस० प्रत्येक में पांच बनाए जाएंगे ।

अभ्यासिक तथा नैदानिक परीक्षाएँ

परीक्षा प्रक्रिया में एक रोगी सम्मिलित किया जाएगा जिसका विवरण परीक्षक के सामने प्रस्तुत किया जाएगा । परीक्षक निम्न पर जोर देंगे :-

1. विस्तृत विवरण दर्ज करना ।
2. निदान के लिए शैथ्या के समक्ष जांच प्रक्रिया ।
3. प्रबंधन के सिद्धांत ।

सामान्य निर्देश - चिकित्साशास्त्र

होम्योपैथी की रोग की संकल्पना भिन्न है वयक्तिकरण की संकल्पना तथा चिरकालिक मियाजम की संकल्पना इसे भिन्न बना देते हैं ।

यह रोगी व्यक्ति को सम्पूर्ण मान कर अध्ययन आरंभ करती है न कि केवल बिमार भागों का ही अध्ययन करती है । यह मनुष्य के स्वास्थ्य स्तर से अर्थात् रोग की प्रवृत्त मनोवृत्ति, सभी पूर्व मनोवृत्तियां तथा उत्तेजक कारको अर्थात् मूलभूत कारण, कारणों का रखरखाव तथा उत्तेजनात्मक कारणों को ध्यान रखते हुए अध्ययन पर बल देती है ।

हनेमन का चिरकालिक मियाजम सिद्धांत हमें चिरकालिक रोगो के संदर्भ मे क्रमिक विकास की जानकारी देता है :- सोरा - साइकोसिस-सिफलिस तथा चिरकालिक रोगों का तीव्र प्रकटीकरण प्राकृतिक रोग को चिरकालिक मियाजम की दृष्टि से अध्ययन करने में सहायक होंगे । विकृत विज्ञान तथा नैदानिक औषध का ज्ञान इन्हें किस प्रकार परिभाषित करने में सहायक हो सकते है, को प्रदर्शित किया जाना चाहिए ।

चिकित्साशास्त्र के अध्ययन का अर्थ रामबाणों की सूची मात्र ही नहीं अपितु नैदानिक अवस्था के लिए, अनुप्रयुक्त मेटेरिया मेडिका का अध्ययन भी है । यहाँ हम प्रदर्शित करते हैं कि किस प्रकार विभिन्न औषधियाँ नैदानिक प्रकरणो के सोरिक, साइकोटिक, ट्यूबरकुलर या सिफलिटिक स्थितियों में प्रयुक्त होती हैं । इस प्रकार रोगों के क्रमिक विकास की गति, विशेषताएँ, संबंधित तथा चारित्रिक समूह पर अधिक बल दिया जाए ।

इस प्रकार उच्चरक्तचाप के चिकित्सा शास्त्र का शिक्षण संरचनात्मक स्तर तथा भिन्न रूप/स्थिति बनती हैं, के चित्रण की मांग रखेगा । सोरिक स्वरूप उच्चरक्तचाप के परिवर्तनशील रूप की विशेषता दर्शाएगा जो प्रकंचुन तथा प्रकटीकरण प्रवाह तथा भावनाओं की बाधा में उत्थानित होगा तथा सिस्टोलिक को बढ़ाएगा ।

इससे हमारा ध्यान जैलसेमियम, ग्लोनिन, फेरम मेट जैसी औषधियों की और इत्यादि, आकर्षित होगा । यह कार्यात्मक भाग है । ट्यूबरकुलर उच्चरक्तचाप काफी ऊर्चे सिस्टोलिक तथा डायस्टोलिक रक्तचाप (बहुत ज्यादा दोलायमान) जिससे रक्तप्रवाह जैसे कि नाक से रक्तप्रवाह मानसिक अनिश्चतता सहित प्रकट करता है । इससे ध्यान फास्फोरस लैकेसिस इत्यादि की तरफ जाता है । सिफलिटिक रूप का चरित्रण इसके अति विध्वंसक असर वाले अंगों अर्थात् हृदय, गुर्दे तथा रेटिना द्वारा प्रदर्शित किया जाएगा ।

इस प्रकार चिकित्साशास्त्र के लिए निम्न सहसंबंधो का होना आवश्यक होगा:-

- i) नैदानिक/औषधीय/शल्य क्रिया का ज्ञान
- ii) चिरकालिक रोगो के सिद्धांत के प्रकाश में प्राकृतिक रोगो का मूल्यांकन का गुण-विवेचना । इस प्रकार ऑर्गेनन दर्शन के साथ सह-संबंध ।
- iii) अनुप्रयुक्त मेटेरिया मेडिका तथा रेपर्टरी ।

मूल्यांकन की दृष्टि से औषध चित्र को समझना — मेटेरिया मेडिका तथा इसके अनुप्रयोगता विभिन्न प्राकृतिक रोगों के अध्ययन में बोगर का दृष्टिकोण । मेटेरिया मेडिका तथा रेपर्टरी के साथ अंतः संबंध ।

- प्रश्न पत्र—I — II तथा III बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के अनुसार
 प्रश्न पत्र—II — IV बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के अनुसार
 प्रश्न पत्र—III — होम्योपैथिक चिकित्साशास्त्र

शल्यक्रिया

होम्योपैथी विज्ञान के नाते चिकित्सक को रोगी को ठीक करने के लिए स्पष्ट निर्णय की आवश्यकता होती है ।

शल्यक्रियात्मक व्याधाओं का ज्ञान होम्योपैथी चिकित्सक को योग्य बनाता है:—

1. साधारण शल्यक्रिया रोगों के निदान हेतु ।
2. जहां तक संभव हो होम्योपैथी इलाज का प्रयोग ।
3. सम्पूर्ण/अर्द्ध उत्तरदायित्व के साथ शल्य क्रिया पूर्व व पश्चात् होम्योपैथी इलाज की व्यवस्था करने । तथा
4. रोग की सुग्राह्यता की पुनर्स्थापना करना तथा होम्योपैथी दवाईयों का प्रबंध करना ।

उपर्युक्त के लिए संकल्पना की स्पष्टता तथा आंकड़े की आवश्यकता होगी जोकि रोगीयों की देखरेख एक प्रभावशाली समन्वयता द्वारा ही संभव है ।

अध्ययन प्रशिक्षण सहित होगी :-

1. शल्यक्रिया से संबंधित स्वास्थ्य विकारों के कारणों, प्रकटीकरण, रखरखाव तथा पूर्व ज्ञान मियाजमेटिक मूल्यांकन पर बल देते हुए ।
2. शैय्या के समक्ष नेदानिक प्रक्रिया
3. अनुप्रयुक्त भाग का रोग को प्रभावित करने वाले कारणों से सह-संबंध, औषधीय तथा गैर-औषधीय उपायों सहित ।

उपर्युक्त एक होम्योपैथिक चिकित्सक को एक तर्कसंगत चिकित्सक बनाने में सहायक होंगे जोकि विरल परिस्थितियों के भंवर में न बंधे अपितु रोगग्रस्त व्यक्ति के लिए सभी मूल विधियों का प्रयोग कर सके ।

यह उसे निर्णायक होम्योपैथी प्रबंधन के लिए, रोगी के व्यक्तिकरण करने में सहायक होगा ।

अध्ययन II बी०एच०एम०एस० में आरंभ होकर III बी०एच०एम०एस० में समाप्त होगा ।

परीक्षा III (तृतीय) बी०एच०एम०एस० में ली जायेगी ।

निम्न योजना उपर्युक्त की प्राप्ति के लिए है, इसमें II (द्वितीय) बी०एच०एम०एस० तथा III (तृतीय) बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम तथा इसके विकास के स्तरों का लेखा-जोखा होगा ।

अन्त में शल्यक्रिया के अच्छे प्रशिक्षण के लिए कुछ बिन्दु अन्य विभागों के साथ अर्त-संबंध के लिए बनाये गये हैं । कि शल्यक्रिया एक विषय के रूप में शामिल होगी:-

1. शल्यक्रिया के सिद्धांत ।
2. शल्यव्याधियों के रोगियों की जांच के मूलभूत सिद्धांत ।
3. रोगी की जांच के लिए, एसेपसिस, एण्टीसेपसिस, पट्टी बांधना, प्लास्टर, क्रियाशील शल्यक्रिया इत्यादी के साधारण यंत्रों का प्रयोग ।
4. लघु शल्यक्रिया विधियों में प्रशिक्षण के लिए प्रयोगात्मक यंत्र ।
5. भौतिक चिकित्सा उपाय ।
6. रेडियोलॉजी में अनुप्रयुक्त अध्ययन इत्यादि का नैदानिक अध्ययन भी शामिल है ।
7. हड्डी रोग विज्ञान, नेत्र विज्ञान, दन्त रोग, कर्णनासा कंठ विज्ञान तथा नवजात शल्यक्रिया भी शामिल है ।

IV बी०एच०एम०एस०

1. शल्यक्रिया केस क्या हैं? केस दर्ज तथा शल्य क्रिया रोगी की जांचोनुत प्रदर्शन की सीख । (प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के रूप में पूर्णता से करना)
2. अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान तथा शरीर क्रिया विज्ञान - उपयुक्त उदाहरणों सहित इसकी महत्त्वता स्पष्ट करनी चाहिए ।
3. सामान्य शल्य क्रिया की मूलप्रविधि ।
4. शोथ, संक्रमण (विशेष तथा अविशेष) मवाद, जीवाणु विज्ञान, प्रतिशोधकता ।
5. विभिन्न प्रकार की चोटें, जख्म का भरना तथा प्रबंधन छालों सहित, नासूर, माँस का सड़ना (गैंगरीन) इत्यादि ।
6. रक्त स्राव, आघात, उनका प्रपचन ।
7. पुनः रूज्जीवन तथा आपात में प्रबंधन ।
8. दुर्घटनाएँ, तथा युद्ध के दौरान जख्म प्रबंधन ।
9. जले का प्रबंधन ।
10. अस्थिभंग तथा संधिभंग - साधारण सिद्धांत ।
11. अस्थियों के रोग - साधारण सिद्धांत, कंकाल के विकास सहित ।
12. संधि रोग - सामान्य सिद्धांत सन्धि वात (गठिया) जानकारी सहित ।
13. मांसपेशी के रोग, स्नायु, फेशिया इत्यादि: सामान्य सिद्धांत ।
14. धमनियों के रोग - सामान्य सिद्धांत ।
15. शिराओं के रोग - सामान्य सिद्धांत ।

16. लसवाहिका तंत्र का रोग — सामान्य सिद्धांत ।
17. तंत्रिका रोग — सामान्य सिद्धांत ।
18. प्रतिरोधक विज्ञान — सामान्य अंग अस्वीकरण, प्रत्यारोपण इत्यादि ।
19. कैंसर विज्ञान — अर्बुद, सिस्टस इत्यादि, प्रबंधन के सामान्य सिद्धांत ।
20. जन्मजात विकार — उत्पत्ति व सुधार प्रक्रिया ।
21. पट्टियों तथा शल्यक्रिया उपकरणों पर संभाषण व प्रदर्शन ।
22. एक्स-रे पर संभाषण व प्रदर्शन
23. नवजात व शिशुओं के शल्यात्मक रोग

उपर्युक्त का अनुकरण सह संबंधित क्रमिक शल्यक्रिया विषयों के साथ होना चाहिए ताकि पूरा किया जा सके:-

1. विभिन्न भागों को सभी सर्वव्याप्त नैदानिक परिस्थितियाँ ।
2. उनका क्रमिक विकास, जांच प्रविधियाँ तथा निदान ।
3. उनकी जांच तथा पूर्वानुमान ।
4. उनका प्रबंधन विशेषकर सिद्धांत ।
5. संबंधित लघु शल्य क्रिया प्रविधियाँ ।
6. निवारक पहलु ।

अस्थि रोग

चोटों के बारे में शिक्षा जैसा ऊपर बताया है, शोथ, छाले, नासूर, अर्बुद, सिस्ट इत्यादि (अस्थियों तथा संधियों मेरु सहित का सर्वव्याप्त परिस्थितियों से संबंधित) उपयुक्त प्रबंधन के साथ, भौतिक चिकित्सा इत्यादि के साथ सह-संबंध ।

नेत्र विज्ञान

नेत्र के विभिन्न भागों में सर्वव्याप्त रोगों, दुर्घटनाओं जख्मों का ज्ञान, आथेलमोस्कोपी सहित विभिन्न उपकरणों का नेत्रों की जांच में प्रयोग ।

सामान्य नेत्र शल्यक्रिया तथा रोगियों की उपयुक्त देखभाल ।

कर्णनासा कंठ विज्ञान (ई०एन०टी०) — कान, नाक, गला, श्वास प्रणाल, श्वसनी वृक्ष श्वासनली की पढ़ाई जैसी ऊपर चर्चा की ।

सामान्य शल्यक्रिया प्रविधियों तथा आकस्मिक प्रविधियों का प्रबंधन

1. घाव, अभिवृद्धि इत्यादि, छेदन व प्रवाह ।
2. शिरावेधन ।
3. मरहम पट्टी तथा प्लस्टर ।
4. विभिन्न प्रकार की सीवन ।
5. शल्यक्रिया पूर्व तथा शल्यक्रिया पश्चात देखरेख ।

6. शल्यक्रिया उपरांत कठिनाइयों का प्रबंधन ।
7. आघात प्रबंधन ।
8. तीव्र रक्तस्राव का प्रबंधन ।
9. तीव्र चोटों वाले रोगियों का प्रबंधन ।
10. मस्तिष्क चोट के रोगियों का प्रबंधन ।

उपर्युक्त किसी भी चिकित्सक के लिए आवश्यक है ।

उपर्युक्त मूलतः यांत्रिक कुशलता व आपूर्ति इत्यादि पर आधारित है, यह उपाय किसी भी प्रकार से सम के नियम के लागू करने तथा क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करते हैं ।

परीक्षा

यह शल्यक्रिया के सिद्धांत और प्रयोगात्मक प्रशिक्षण के दो वर्ष पूरे होने के पश्चात् III (तृतीय) बी०एच०एम०एस० में आयोजित की जायेगी ।

परीक्षा के लिए पात्रता 10 पूर्ण रोगी इतिहास, पांच प्रत्येक II (द्वितीय) तथा III (तृतीय) बी०एच०एम०एस० के अध्ययन में शामिल किया जायेगा ।

प्रश्न पत्र I :— शोथ, संक्रमण, रक्तस्राव, आघात, जलन, अल्सर तथा मौस का सड़ना (गैंगरीन), अर्बुद, सिस्ट, चोट तथा तंत्रिका, मांसपेशियों, स्नायू, बुरसा लसवाहिका तंत्र वाहिका तंत्र, तिल्ली के रोग, सामान्य रोग तथा नेत्र विज्ञान ।

प्रश्न पत्र II:— सिर, गर्दन, थाइरोयाड, स्तन: जन्मजात विकार, उदर शल्यक्रिया, पाचन तंत्र, अस्थिसंधि, मेरुदण्ड, थोरेसिक शल्यक्रिया, कर्णनासा कंठ विज्ञान, दंत शल्यक्रिया ।

प्रश्न पत्र III:— होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र पर अपवर्जक ।

प्रयोगात्मक तथा नैदानिक परीक्षायें:—

इस परीक्षा में परीक्षार्थी को एक रोगी-प्रपत्र तैयार कर प्रस्तुत करना होगा । आंकने वाले परीक्षक को निम्न पर बल देना होगा :—

1. केस दर्ज करने की समझ ।
2. शैथ्या के समक्ष प्रशिक्षण ।
3. निदानिक प्रक्रिया पर उपयुक्त समझ ।
4. प्रबंधन के सिद्धांतों पर पूर्ण पकड़ ।

स्त्री रोग/प्रसूती, शिशु स्वास्थ्य सहित

इस विषय के अध्ययन के लिए दृष्टिकोण वही है जो शल्यक्रिया के संबंध में है । इस पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए कि विशिष्ट नैदानिक तरीके अथवा जाँच और स्थानीय परिस्थितियों में प्रसूती एवं स्त्री रोग प्रबंधन में शिक्षा काफी आगे जाए ।

इस विषय का काफी भाग नैदानिक क्षेत्र का है जिसका इलाज होम्योपैथी में संभव है । गर्भावस्था तथा भ्रूण का विकास स्तर बहुत से परिवार-जनित रोगों में, इलाज करने के लिए फलदायक है ।

इसके अन्तर्गत अध्ययन की जाने वाली कठिनाईयों तथा महिला रोगियों के नाजुक भागों एवं उनके स्वास्थ्य वर्धता से सहसंबंधिता होती है ।

अध्ययन द्वितीय बी०एच०एम०एस० में आरंभ होकर तृतीय बी०एच०एम०एस० में पूर्ण होगा । परीक्षायें तृतीय बी०एच०एम०एस० में होंगी ।

उपर्युक्त की प्राप्ति हेतु निम्न योजना है :-

द्वितीय बी०एच०एम०एस० प्रसूति

1. अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान की पुनः समीक्षा ।
2. अनुप्रयुक्त शरीर क्रिया विज्ञान की पुनः समीक्षा ।
3. अन्तः गर्भाशय गर्भावस्था का विकास ।
4. गर्भावस्था की जांच ।
5. प्रसव पूर्व देखभाल ।
6. असामान्य गर्भावस्था: प्रस्तावना ।
7. सामान्य प्रसव ।
8. असामान्य प्रसव: प्रस्तावना ।
9. जन्मोपरांत देखभाल ।
10. असामान्य प्लूरपेरल ।
11. नवजात की देखभाल ।

स्त्री रोग

1. अनुप्रयुक्त शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान ।
2. स्त्रीरोग संबंधी परीक्षण ।
3. असामान्यताओं का विकास ।
4. अन्तः करोटीय अक्षः असामान्यतायें ।
5. गर्भाशयविस्थापन ।

तृतीय बी०एच०एम०एस० प्रसूति

1. असामान्य गर्भावस्थाएँ:— गर्भपात, मोलर गर्भावस्था, गर्भाशय के बाहर प्लेसेंटा और झिल्ली के रोग तथा गर्भाहेतुक विष रक्तता, एन्टीपार्टम रक्तस्त्राव, जननांग मार्ग के विकार, जननांगीय मार्ग पश्चयति, गर्भ स्थान का नीचे को झुकाव, अर्बुद इत्यादि, बहुगर्भता, प्रोट्रेक्टेड संगर्भता ।
2. गर्भावस्था से संबंधित सामान्य गड़बड़ियाँ तथा कमिक रोग ।
3. प्रसव, असामान्य अवस्था तथा प्रदर्शन, जुड़वा रज्जु भ्रंश तथा अंग, गर्भाशय क्रिया की असामान्यतायें, मुलायम अंगो की असामान्य अवस्था, संकुचित श्रेणी । प्रसव रूकावट के साथ, प्रसव की तीसरी स्थिति का उलझाव, योनी के रास्ते में चोट ।
4. सामान्य प्रसूति ऑपरेशन ।
5. प्रसूतिक असामान्यता: संक्रमण इत्यादि ।

स्त्री रोग

स्त्री जननांगों में शोथ, छाले तथा चोट, दुर्दम/गैर दुर्दम अर्बुद, सामान्य स्त्री रोग शल्य क्रिया तथा विकिरण चिकित्सा

नवजात शिशु की देखभाल
नवजात शिशु स्वास्थ्य विज्ञान
स्तनपान
कृत्रिमपान
समयापूर्ण जनित शिशु प्रबंधन
श्वासावरोध
जन्मक्षतिया
नवजात के सामान्य विकार ।

परीक्षा :—

इसे तृतीय बी०एच०एम०एस० में, 2 वर्ष की पाठ्यक्रम के अन्त में स्त्री रोगों एवं प्रसूति के सैद्धांतिक तथा प्रयोगात्मक पक्षों के अध्ययन पश्चात् होगी ।

परीक्षा में पात्रता 20 संपूर्ण केंसों (स्त्री रोगों एवं प्रसूति प्रत्येक में 10 केंस) शामिल होंगे ।

- प्रश्न पत्र — I :— प्रसूति विज्ञान एवं शिशु स्वास्थ्य
प्रश्न पत्र — II :— स्त्री रोग विज्ञान
प्रश्न पत्र — III :— विशेषतः होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र के लिए ।

प्रयोगात्मक तथा नैदानिक परीक्षायें:-

- विस्तारपूर्वक केस दर्ज करना ।
- शैय्या के समक्ष प्रशिक्षण ।
- नैदानिक जांच का पर्याप्त ज्ञान ।
- प्रबंधन सिद्धांतों का पर्याप्त ज्ञान ।

सामुदायिक आयुर्विज्ञान
(स्वास्थ्य शिक्षा और अनुवंशी आयुर्विज्ञान सहित)

यह पाठ्यक्रम आयुर्विज्ञान अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को लेक्चरों, प्रदर्शनों और फील्ड अध्ययन द्वारा अध्ययन के चतुर्थ वर्ष में सिखाया जाना चाहिए । यह विषय सर्वोत्तम महत्व का है और आयुर्विज्ञान-अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों का ध्यान, निरोधक आयुर्विज्ञान के महत्व और सकारात्मक स्वास्थ्य के प्रोन्नयन के लिए उपायों की ओर सदैव आकर्षित किया जाना चाहिए ।

उसका कार्य, रोगहर प्रयोजनों के लिए होम्योपैथी औषधियों निश्चित करने मात्र तक सीमित न होकर समाज में एक व्यापक भूमिका अदा करना भी है । उसे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए जिससे कि वह, न केवल रोगहरण वरन परिवार कल्याण सहित निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में भी, कारगर भूमिका निभाने का दायित्व संभाल सके ।

1. सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान संबंधी सिद्धांतों की प्रस्तावना, व्यक्ति और समाज, निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान का लक्ष्य और प्रविषय, रोगों के सामाजिक कारण और रोगी की सामाजिक समस्याएं । स्वास्थ्य और रूग्णता के संदर्भ में आर्थिक तत्वों और पर्यावरण का पारस्परिक संबंध ।

2. शरीरक्रिया संबंधी स्वास्थ्य विज्ञान :

- (क) भोजन और पोषण—स्वास्थ्य और रोग के संदर्भ में भोजन । संतुलित आहार । पोषण कमियां और पोषण संबंधी पर्यवेक्षण । भोजन तैयार करना, दुग्ध का पाश्चुरीकरण । खाद्य अपमिश्रण और निरीक्षण, खाद्य विषाक्तता ।
- (ख) वायु, प्रकाश और धूप
- (ग) जलवायु का प्रभाव—अर्द्रता तापमान, दाब और अन्य मौसमी परिस्थितियां—सुखक्षेत्र—सघन आबादी का प्रभाव ।
- (घ) वैयक्तिक स्वास्थ्य—(सफाई—आराम—निद्रा, कार्य)— शारीरिक कसरत और प्रशिक्षण, पोषणज (ट्राफिक) में स्वास्थ्य प्रशिक्षण ।

पर्यावरणीय सफाई :

- (क) परिभाषा और महत्व;
- (ख) वायुमण्डलीय दूषण—वायु शुद्धिकरण, वायु विसंक्रमण/वायुजनित रोग ।
- (ग) जलप्रदाय—स्रोत और प्रयोग । अशुद्धताएं और शुद्धिकरण । नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक जल प्रदाय । पैयजल के मानक, जलजन्य रोग ।

- (घ) मलवहन—शहरों और कस्बों तथा ग्रामों में मलवहन का ढंग, सैप्टिक टैंक, शुष्क शौचालय — जल क्लोजेट । मल निपटारा, रोग समाप्ति, कुड़ाकरकट फिकवाना, भस्मीकरण ।
- (ङ) मेलों और उत्सवों में सफाई ।
- (च) विसंक्रमण—विसंक्रमक, ड्रयौडरैन्ट, एन्टीसैप्टिक, कीटनाशी, विसंक्रमण और निर्जीवाणुकरण ।
- (छ) कीट—कीटनाशी और विसंक्रमण रोग और कीट संबंध । कीट नियंत्रण ।
- (ज) प्रोटोजोअल और कृमि रोग—प्रोटोजोआ और कृमि का जीवन चक्र, उनका निरोध ।

आयुर्वेदानिक सांख्यिकी:—

(अ) संचारी रोगों के निरोध और नियंत्रण के सामान्य सिद्धांत । प्लेग, हैजा, चेचक, डिपथीरिया, कुष्ठ, क्षयरोग, मलेरिया, कालाजार, फाइलैरिया, सामान्य वायरल रोग, अर्थात् सामान्य ठण्ड, खसरा, छोटी माता, पोलियो, संक्रामक हैपीटाइटिस, कृषि संक्रमण, एन्ट्रिक ज्वर और पेचिश पशुरोग तथा जो मानव को लग सकते हैं । उनका वर्णन और सम्पर्क या बिन्दुक द्वारा उनके फैलने को रोकने की रीति । पर्यावरणीय वाहकों से संक्रमण (जल, स्पिल, खाद्य कीट, पशु, फाउन्ड्रीय आदि), रोगनिरोध और टीका लगाना । रोगों का प्राकृतिक इतिहास ।

(आ) असंचारी रोगों जैसे कि मोटापा, उच्चरक्तचाप इत्यादि, के निरोध और नियंत्रण के सामान्य सिद्धांत ।

4. मातृ और बाल स्वास्थ्य, विद्यालय स्वास्थ्य सेवाएं, स्वास्थ्य शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य—प्राथमिक सिद्धांत, विद्यालय आयुर्विज्ञान, उसके उद्देश्य और रीतियाँ ।
5. परिवार कल्याण—डेमोग्राफी—संचरण सारणी, राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम, ज्ञान, गर्भनिरोधकों के प्रयोग के बारे में दृष्टिकोण । जनसंख्या और उसकी वृद्धि—नियंत्रण ।
6. सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशासन और अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संबंध ।
7. रोगनिरोध, टीका लगाने, प्रतिरक्षिताविज्ञान तथा व्यक्तिगत आरोग्य पर होम्योपैथिक दृष्टिकोण ।
- टिप्पणी—फील्ड प्रदर्शन—जल शुद्धिकरण संयंत्र, संक्रमक रोग अस्पताल आदि ।

रेपर्टरी

चतुर्थ बी०एच०एम०एस०

रेपर्टरीकरण अन्त नहीं है परन्तु मेटिरिया मेडिका के साथ सम तक प्रतिष्ठित दार्शनिक सिद्धांतों के आधार पर पहुँचने का माध्यम है । होम्योपैथी मेटिरिया मेडिका लक्षणों का एक विश्व कोष है । कोई भी मस्तिष्क सभी लक्षणों या औषधियों को उनके चारित्रिक वर्गीकरण के आधार पर याद नहीं रख सकता । रेपर्टरी मेटिरिया मेडिका के लक्षणों की एक सारणी तथा सूची है जोकि प्रयोगात्मक रूप से संकलित किए गए हैं तथा दवाओं के आपेक्षिक वर्गीकरण को इंगित भी करते हैं तथा यह इंगित औषधि के त्वरित निर्वाचन को सुगम करता है । अतः बिना रेपर्टरियों की सहायता के होम्योपैथी का अभ्यास असंभव है ।

प्रत्येक रेपटरी भिन्न दार्शनिक आधार पर संकलित की गई है जोकि इसकी संरचना निर्धारित करती है। प्रत्येक रेपटरी को पूर्ण दोहन करने हेतु इसके संकल्पनात्मक आधार तथा संरचना का समयक ज्ञान आवश्यक है। यह छात्रों को रेपटरी के क्षेत्र, सीमाएं तथा सुग्राह्यता को समझने में सहायक होगा।

रोगीवृत लेना:-

चिरकालिक रोगीवृत लेने में कठिनाइयां। वृत अभिलिखित करना और अभिलेख रखने की उपयोगिता।

लक्षणों का समग्र रूप, लक्षण प्रलेखन, असामान्य, विचित्र, असामान्य तथा चारित्रिक लक्षण। असामान्य और सामान्य लक्षणों के रोगीवृत का विश्लेषण, लक्षणों का वर्गीकरण तथा मूल्यांकन, मानसिक लक्षणों का महत्त्व, सामान्य लक्षणों का स्रोत और प्रकार। आनुवांशिक लक्षण।

रेपटरीकरण का अध्ययन शीर्षको की खोज तक सीमित नहीं रहेगा। रोगी शीर्षको (रूबरिको) का गटरी नहीं है।

रेपटरी का तर्क, ऑर्गेनन आफ मेडिसिन से निकलता है हालांकि रेपटरी को पृथक से नहीं पढ़ाया जाएगा। निम्न पर आवश्यक बल दिया जाना चाहिए :-

- (अ) रेपटरी का भाषा ज्ञान अर्थात् शीर्षको का अर्थ मेटिरीया मेडिका तथा नैदानिक अनुभवों के साथ सहसंबंध।
- (आ) औषधि शास्त्र तथा मेटिरीया मेडिका के साथ रेपटरी का सह-संबंध।

1. आज तक रेपटरी का विकास तथा इतिहास।
2. रेपटरी के प्रकार।
3. विभिन्न रेपटरीयों में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या।
4. बोनिंघसेन का औषधि शास्त्र की जेब पुस्तिका तथा बोगर बोनिंघसेन की रेपटरी।
5. केन्ट की रेपटरी।
6. कार्ड रेपटरी का परिचय।
7. विशेष क्षेत्रीय रेपटरीयाँ, एलन का बुखार, बेल का आंत्रशोथ तथा उनकी तुलना सहित।
8. अतिनैतिक समूह की रेपटरी की कथित प्रस्तावना जैसे नर, जेन्टरी तथा रॉबर्ट उनके नैदानिक प्रयोग के संदर्भ में।
9. कम्प्यूटरीकृत रेपटरीकरण का परिचय।

प्रयोगात्मक

छात्र रेपटराइज करेंगे -

1. केन्ट पर 10 तीव्र रोगीवृत।
2. केन्ट पर 5 चिरकालिक रोगीवृत।

3. बोनिंघसेन पर 5 चिरकालिक रोगीवृत्त ।
 4. बोगर पर 5 चिरकालिक रोगीवृत्त ।
 5. कम्प्यूटर पर 5 रोगीवृत्तों का पुर्ननिरीक्षण ।
7. विनियम 7 में वर्तमान प्रविष्टियों को निम्न से प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्

**परीक्षा में प्रवेश, परीक्षा की प्रणाली इत्यादि
प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा**

- (i) अभ्यर्थी को प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा में प्रवेश दिया जाएगा बर्शते विनियम 13(iii) के अनुसार उसकी होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज के प्रमुख की संतुष्टि के अनुसार वांछित उपस्थिति हो ।
- (ii) प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा प्रवेश के 8वे महीने की समाप्ति पर होगी ।
- (iii) संभाषण, प्रदर्शन/अभ्यास तथा सेमिनार कक्षाओं के घंटों की न्यूनतम संख्या प्रति घंटे निम्न होगी:

विषय प्रदर्शन	सैद्धान्तिक संभाषण	प्रयोगात्मक/ ट्यूटोरियल सेमिनार
1. ऑर्गेनन ऑफ मेडिसन होम्योपैथिक दर्शन तथा मनोविज्ञान के सिद्धांत	150 घंटे (40 घंटे मनोविज्ञान के लिए सहित)	35 घंटे (10 घंटे मनोविज्ञान के लिए सहित)
2. शरीर रचना विज्ञान, उत्तक विज्ञान तथा भ्रूण विज्ञान	250 घंटे	325 घंटे
3. शरीर क्रिया विज्ञान जैवरसायन विज्ञान सहित	250 घंटे	325 घंटे
4. होम्योपैथिक भेषजी विज्ञान	100 घंटे	100 घंटे
5. होम्योपैथिक मेटिरिया मेडिका	50 घंटे	25 घंटे

- (iv) ऑर्गेनन ऑफ मेडिसन, होम्योपैथिक दर्शन तथा मनोविज्ञान के सिद्धांतों की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक मौखिक परीक्षा होगी ।
- (v) शरीर रचना विज्ञान उत्तक विज्ञान तथा भ्रूण विज्ञान सहित की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र होंगे । प्रयोगात्मक मौखिक परीक्षा, स्पेसीमेन तथा उत्तक स्लाइड की पहचान सहित होगी ।
- (vi) शरीर क्रिया विज्ञान जैव रसायन सहित की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक मौखिक सहित होंगे ।
- (vii) होम्योपैथिक भेषजी की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक तथा एक प्रयोगात्मक मौखिक सहित परीक्षा होगी ।
- (viii) होम्योपैथिक मेटिरिया मेडिका की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक तथा एक मौखिक परीक्षा होगी ।
- (ix) प्रथम बी०एच०एम०एस० उत्तीर्ण करने के लिए प्रत्येक विषय के पूर्णांक तथा आवश्यक न्यूनतम उत्तीर्णांक निम्न प्रकार से होंगे :-

विषय	लिखित		प्रयोगात्मक (मौखिक सहित)		कुल	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
होम्योपैथिक भेषजी	100	50	100	50	200	100
शरीर रचना विज्ञान	200	100	200	100	400	200
शरीर क्रिया विज्ञान जैव रसायन सहित	200	100	200	100	400	200
होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका	100	50	50	25	150	75
ऑर्गेनन आफ मेडिसिन, होम्योपैथिक दर्शन तथा मनोविज्ञान के सिद्धांत	100	50	50	25	150	75

8. विनियम 8 को निम्न द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा

- किसी भी अभ्यर्थी को द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा में प्रवेश तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक कि वह प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण ना कर ले तथा होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के प्रमुख की संतुष्टि में विनियम 7 (iii) के अनुसार आवश्यक उपस्थिति ना रखता हो।
- द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा प्रथम बी०एच०एम०एस० में प्रवेश के 30वें माह के अन्त में आयोजित की जाएगी।
- सम्भाषण, प्रदर्शन/प्रयोगात्मक तथा सेमिनार कक्षाओं के न्यूनतम घंटे निम्न होंगे :-

विषय	सैद्धान्तिक भाषण	प्रयोगात्मक/ट्यूटोरियल /नैदानिक /सेमिनार
1. विकृति विज्ञान तथा सूक्ष्म जीवाणु विज्ञान परजीवी विज्ञान, जीवाणु विज्ञान, विषाणु विज्ञान सहित	200	70
2. न्यायिक औषध तथा विष विज्ञान	50	20
3. ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन तथा होम्योपैथिक दर्शन के सिद्धांत	125	—
4. होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका	75	75
5. शल्य चिकित्सा कर्ण, कण्ठ, नासा, नेत्र, दंत तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र सहित	50} 75 25} 75	75
6. प्रसूति तथा स्त्री रोग विज्ञान, शिशु स्वास्थ्य तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	75	75
7. प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन (औषध अभ्यास) तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	50} 75 25} 75	75

- (iv) विकृति विज्ञान तथा सूक्ष्मजीवी विज्ञान की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक, मौखिक सहित परीक्षा होगी । प्रयोगात्मक परीक्षा में सूक्ष्म स्लाइडस तथा नमूनों (स्पेसीमेन) की पहचान एक हिस्सा होगी ।
- (v) न्यायिक औषध तथा विष विज्ञान की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक मौखिक परीक्षा होगी जिसमें नमूनों (स्पेसीमेन) की पहचान तथा चिह्न सम्मिलित होगा ।
- (vi) ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन, होम्योपैथी दर्शन शास्त्र तथा मनोविज्ञान के सिद्धांतों की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक मौखिक सहित परीक्षा होगी ।
- (vii) मेटिरीया मेडिका की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक मौखिक सहित परीक्षा होगी ।
- (viii) द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा उर्तीण करने के लिए, एक अभ्यार्थी को परीक्षा के सभी विषयों को उर्तीण करना पड़ेगा ।
- (ix) प्रत्येक विषय में पूर्णांक तथा आवश्यक न्यूनतम उत्तीर्णांक निम्न होंगे :-

विषय	लिखित		प्रयोगात्मक (मौखिक सहित)		कुल	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
विकृति विज्ञान तथा सूक्ष्म जीव विज्ञान	100	50	100	50	200	100
न्यायिक औषध तथा विष विज्ञान	100	50	100	50	200	100
होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका	100	50	100	50	200	100
ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन	100	50	100	50	200	100

9. विनियम 9 में विद्यमान प्रविष्टियों को निम्न द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा

- (i) किसी भी अभ्यार्थी को तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा में प्रवेश तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक कि वह द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण ना कर ले तथा होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के प्रमुख की संतुष्टि में विनियम 7 (iii) के अनुसार आवश्यक उपस्थिती ना रखता हो ।
- (ii) तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा प्रथम बी०एच०एम०एस० में प्रवेश के 42वें माह के अन्त में आयोजित की जाएगी ।
- (iii) सम्भाषण, प्रदर्शन/प्रयोगात्मक, नैदानिक तथा सेमिनार कक्षाओं के न्यूनतम घंटे निम्न होंगे :-

विषय प्रदर्शन	सैद्धान्तिक भाषण	अभ्यास/यूटोरियल /नैदानिक /सेमिनार
1. प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	50 } 75 25 }	75 3 माह की एक अवधि विभिन्न ओ०पी०डी०/ आई०पी०डी० वार्डों में,

2.	शल्य क्रिया कर्ण, कण्ठ, नासा, नेत्र विज्ञान, दंत सहित तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	100} 150 50}	75
3.	प्रसूति तथा स्त्री रोग विज्ञान, शिशु स्वास्थ्य तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	100} 150 50}	75
4.	होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका	100	75
5.	ऑर्गेनन ऑफ मेडिसन	100	75

- (iv) शल्य क्रिया की परीक्षा में 3 सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र तथा एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। एक सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र केवल होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र पर आधारित होगा। प्रयोगात्मक परीक्षा में नैदानिक जाँच तथा मौखिक सम्मिलित होगी। नैदानिक परीक्षा में अभ्यर्थी की शल्य क्रिया उपस्कर, पट्टी बाँधना तथा शल्य क्रिया से संबंधित आम उपायों में, होम्योपैथिक चिकित्सा के क्षेत्र तथा शल्य रोग की जाँच तथा नैदानिक परीक्षण, एक्स-रे तथा सामान्य नैदानिक तकनीको से निदान करने की कुशलता का परीक्षण होगा। अभ्यर्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान लिए गए रोगवृत्तों को मौखिक परीक्षा के समय शामिल किया जाएगा।
- (v) प्रसूति एवं स्त्री रोग शिशु स्वास्थ्य की परीक्षा में तीन सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र केवल होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र पर आधारित होगा। प्रयोगात्मक परीक्षा में नैदानिक जाँच तथा मौखिक सम्मिलित होंगे। नैदानिक परीक्षा में अभ्यर्थी की, स्पेसीमेन, मॉडल, उपस्कर तथा प्रसूति से संबंधित सामान्य यंत्रों; होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र तथा स्त्री रोगों की जाँच, नैदानिक परीक्षणों, एक्स-रे तथा अन्य सामान्य जाँच तकनीको द्वारा करने की, कुशलता का परीक्षण होगा।
- (vi) होमियोपैथिक मेटिरीया मेडिका की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक शैय्या के समक्ष प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। शैय्या के समक्ष दो तीव्र रोगवृत्त का वर्गीकरण, तथा होमियोपैथिक चिकित्सा दृष्टि से चिकित्सा शास्त्रीय निदानिक जाँच होगी।
- (vii) ऑर्गेनन ऑफ मेडिसन के प्रश्न पत्र में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक मौखिक परीक्षा होगी।
- (viii) तृतीय बी०एच०एम०एस परीक्षा पास करने हेतु अभ्यर्थी को परीक्षा के सभी विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।
- (ix) प्रत्येक विषय में पूर्णांक तथा न्यूनतम उत्तीर्णांक निम्न होंगे :-

विषय	लिखित		प्रयोगात्मक (मौखिक सहित)		कुल	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
शल्य क्रिया, कर्ण, कण्ठ, नासा, नेत्र विज्ञान, दंत तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र सहित	300	150	200	100	500	250
प्रसूति तथा स्त्री रोग विज्ञान, शिशु स्वास्थ्य तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	300	150	200	100	500	250
होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका	100	50	100	50	200	100
ऑर्गेनन ऑफ मेडिसन	100	50	100	50	200	100

10. विनियम 10 में विद्यमान प्रविष्टियों को निम्न द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा

- (i) किसी भी अभ्यार्थी को चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा में प्रवेश तब तक नहीं दिया जाएगा जब तक कि वह तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण ना कर ले तथा होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के प्रमुख की संतुष्टि में विनियम 7 (iii) के अनुसार आवश्यक उपस्थिति ना रखता हो।
- (ii) चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा प्रथम बी०एच०एम०एस० में प्रवेश के 54वें माह के अन्त में आयोजित की जाएगी।
- (iii) विषयों में सम्भाषण, प्रदर्शन/प्रयोगात्मक, सेमिनार तथा नैदानिक कक्षाओं के न्यूनतम घंटे निम्न होंगे :—

विषय प्रदर्शन	सैद्धान्तिक भाषण	प्रयोगात्मक / ट्यूटोरियल / नैदानिक कक्षाएँ
1 प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन (आर्युविज्ञान) तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र	100 } 50 } 150	200 आर्युविज्ञान के विभिन्न ओ०पी०डी० / आई०पी०डी० वार्डों / विभाग में 4 माह की एक प्रवधि
2 होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका	100	75
3 ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन	100	75
4 रेपर्टरी	125	150
5 सामुदायिक आर्युविज्ञान	100	100

- (iv) प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन (आर्युविज्ञान) शिशु रोग, मनोरोग तथा चर्म रोग सहित की परीक्षा में तीन सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक शैय्या के निकट प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। एक प्रश्न पत्र केवल होमियोपैथिक चिकित्सा शास्त्र का होगा। प्रयोगात्मक परीक्षा में नैदानिक परीक्षा तथा मौखिक होगा। नैदानिक परीक्षा में अभ्यार्थी की रोग वर्गीकरण, चिकित्सीय निदान, निदानिक परीक्षण, एक्स-रे तथा अन्य सामान्य जाँच तकनीक, दीर्घ और लघु केसों की विस्तृत रोगवृत्त में कुशलता जाँच की परीक्षा ली जाएगी। मौखिक परीक्षा के दौरान अभ्यार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान तैयार रोगवृत्तों को भी सम्मिलित किया जाएगा।
- (v) रोगवृत्त तथा रेपर्टरी की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र तथा एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। प्रयोगात्मक परीक्षा में एक दीर्घ एवं एक लघु रोगवृत्त पर होमियोपैथिक सिद्धांतों द्वारा विश्लेषण तथा वास्तविक रेपर्टरी के संपूर्णता पर पहुँचने की रेप्टोरियल पूर्णता प्रवधि की जाँच होगी। केन्ट तथा बोनिघहसन रेप्टरियों से रूबरिक खोजने के कौशल तथा अभ्यार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान तैयार किये गये रोगवृत्तों को मौखिक परीक्षा में सम्मिलित किया जायेगा।
- (vi) होम्योपैथिक मेटिरीया मेडिका की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्न-पत्र तथा शैय्या के समक्ष एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। शैय्या के समक्ष परीक्षा में होम्योपैथिक दृष्टि से एक दीर्घ रोगवृत्त तथा एक लघु रोगवृत्त को उनके रोग वर्गीकरण, जाँच तथा होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र पर विशिष्ट संदर्भित किया जाएगा। अभ्यार्थीयों द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान तैयार किये गये रोगवृत्तों को मौखिक परीक्षा में सम्मिलित किया जायेगा।
- (vii) ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन तथा होम्योपैथिक दर्शन शास्त्र के सिद्धांतों की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। प्रयोगात्मक परीक्षा मियाजमेटिक जाँच, सामान्य

- प्रबंधन (पोसोलोजी) मात्रा शास्त्र, द्वितीय नुस्खा प्रलेखन के संदर्भ में रोगी के होम्योपैथिक पूर्वाभिमुखी पर आधारित होगी ।
- (viii) सामुदायिक आयुर्विज्ञान स्वास्थ्य शिक्षा तथा परिवार कल्याण सहित पर परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तथा एक मौखिक परीक्षा होगी । मौखिक परीक्षा में सामुदायोनोमुखी समस्याओं से संबंधित स्पेसीमेनों की पहचान तथा खोज व अन्य विषय सम्मिलित होंगे ।
- (ix) चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा पास करने के लिए, अभ्यर्थियों को परीक्षा के सभी विषयों को उत्तीर्ण करना होगा ।
- (x) प्रत्येक विषय में पूर्णांक तथा न्यूनतम उत्तीर्णांक निम्न होंगे :-

विषय	लिखित		प्रयोगात्मक (मौखिक सहित)		कुल	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन	300	150	200	100	500	250
होम्योपैथिक मेडिसीना मेडिका	200	100	200	100	400	200
ऑर्गेनन ऑफ मेडिसिन	200	100	100	50	300	150
रोगवृत्त तथा रेपर्टरी	100	50	100	50	200	100
सामुदायिक आयुर्विज्ञान	100	50	100	50	200	100

11. विनियम 11 के विद्यमान प्रविष्टियाँ को निम्न द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:-

परीक्षाफल और पुनः प्रवेश

- (i) परीक्षक मण्डल सुनिश्चित करेगा कि परीक्षा फल समय पर प्रकाशित हो जिससे बी०एच०एम०एस० परीक्षा में सफल छात्र पाठ्यक्रम प्रवेश के 5½ वर्ष में ही पूर्ण कर ले ।
- (ii) ऐसे अभ्यर्थी जो एक या अधिक विषयों में उत्तीर्ण हो चुके हैं तो उन्हें उन विषयों में पूरक परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं होगी यदि अभ्यर्थी सभी परीक्षा मुख्य परीक्षा सहित चार बार में ही उत्तीर्ण कर ले ।
- (iii) अवधि रखने की सहूलियत- पूर्वानुवर्ती विनियमों से विरोध न रखते हुए, छात्रों को निम्न शर्तों पर अवधि बनाये रखने की अनुमति होगी :-
- (अ) अभ्यर्थी तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा में प्रवेश की अनुमति से पूर्व द्वितीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा (6 माह) एक अवधि पूर्व अवश्य उत्तीर्ण करें ।
- (आ) अभ्यर्थी चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा में प्रवेश की अनुमति से पूर्व तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा (6 माह) एक अवधि पूर्व अवश्य उत्तीर्ण करें ।
- (इ) किसी भी अभ्यर्थी को प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा में उसी विषय में 4 बार से अधिक बैठने की अनुमति नहीं दी जायेगी ।
- (iv) अभ्यर्थी जो कि द्वितीय या तृतीय बी०एच०एम०एस० परीक्षा में बैठा हो किन्तु विषय या विषयों में अनुत्तीर्ण हुआ हो उसे उस विषय या विषयों में अगली परीक्षा में बैठने दिया जायेगा । यद्यपि अभ्यर्थियों को उपरोक्त (iii) के अनुसार अवधि रखने की सहूलियत प्रदान की जायेगी ।
- (v) विशेष कक्षायें, सेमिनार, प्रदर्शन, प्रयोगात्मक, ट्यूटोरियल इत्यादि दुहराने वाले अभ्यर्थियों के लिए जिन विषयों में वह अनुत्तीर्ण हुए हैं, में पुनः आयोजित की जायेंगी इससे पूर्व कि उन्हें उस

विषयसे में पुनः परीक्षा देने की अनुमति प्रदान की जाय जिसमें वह अनुत्तीर्ण रहें, उनकी उपस्थिति इनमें अनिवार्य होगी ।

(vi) यदि अभ्यार्थी प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा के अतिरिक्त सभी परीक्षाओं में सभी विषयों में चार अवसरों में अनुत्तीर्ण रहता है तो उसे सभी विषयों का अध्ययन सभी भागों की परीक्षा से पूर्व एक वर्ष तक कालेज के प्रमुख की संतुष्टि से करना होगा ।

परन्तु यदि एक अभ्यार्थी चतुर्थ बी०एच०एम०एस० परीक्षा में बैठा है, को निर्दिष्ट चार अवसरों के अन्त में केवल एक विषय में उत्तीर्ण करना रह गया हो, तो उसे विशेष रूप से एक बार पुनः उस विषय की परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जायेगी जिससे वह इस विशेष अवसर से परीक्षा पूर्ण कर सके ।

(vii) परीक्षा प्राधिकारी, असाधारण परिस्थितियों में, अपने द्वारा ली गई किसी भी परीक्षा को पूर्णतः या भागतः रद्द कर सकता है किन्तु यह तब जब वह इसकी सूचना केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद् को दे दे और उन विषयों में पुनः परीक्षा की व्यवस्था ऐसे रद्दकरण की तारीख से तीस दिन के भीतर कर दे ।

(viii) तीन प्रतिशत या 10 अंक में जो भी कम हो विश्वविद्यालय/परीक्षा प्राधिकारी द्वारा अपने इच्छा द्वारा अनुग्रह अंक किसी छात्र को जोकि केवल एक विषय में अनुत्तीर्ण हुआ हो तथा अन्य सभी विषयों में उत्तीर्ण हो, दे सकता है ।

12. विद्यमान विनियम 12(i) की प्रविष्टियों को निम्न द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात्:—

परीक्षक

होम्योपैथिक (शिक्षा के न्यूनतम स्तर) विनियम जैसे समय समय पर संशोधित किए गए हो, में वर्णित शिक्षण कर्मचारीवृन्द के लिए निर्दिष्ट अर्हताधारी व्यक्ति से भिन्न को बी०एच०एम०एस० डिग्री पाठ्यक्रम में आंतरिक तथा बाह्य परीक्षक या प्रश्नपत्र सैटर नियुक्त नहीं किया जाएगा ।

परन्तु :—

(अ) किसी भी व्यक्ति को परीक्षक के रूप में नियुक्त किया जाएगा जब तक की उसे किसी डिग्री स्तर के होमियोपैथिक मेडिकल कालेज में तीन वर्ष तक लगातार संबंधित विषय में नियमित पढ़ाने का अनुभव प्राप्त ना हो ।

(आ) आन्तरिक परीक्षक होमियोपैथिक मेडिकल कालेज के शिक्षण कर्मचारीवृन्द के बीच में से ही नियुक्त किया जाएगा ।

(इ) एक परीक्षा पत्र बनाने वाले को आन्तरिक या बाह्य परीक्षक नियुक्त किया जा सकता है ।

13. निम्न नए विनियमों को विनियम 12 के बाद जोड़ा जाएगा, अर्थात् :—

“13 परीक्षा योजना एवं परीक्षा में प्रवेश हेतु सामान्य मार्ग—प्रदर्शक :—

- (i) परीक्षा प्राधिकारी यह सुनिश्चित करेगा कि विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित परीक्षा में किसी होम्योपैथिक मेडिकल कालेज द्वारा छात्रों को भेजने से पूर्व, संबंधित विनियमों में वर्णित बी०एच०एम०एस० परीक्षा हेतु विषयों के लिए संभाषण/प्रदर्शन/प्रयोगात्मक/सेमिनार इत्यादि के लिए घंटों की न्यूनतम संख्या का अनुपालन हुआ ।
- (ii) परीक्षा प्राधिकारी यह सुनिश्चित करेगा कि ऐसे होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के छात्र, जो होम्योपैथी (शिक्षा के न्यूनतम स्तर) विनियम को पूरा नहीं करते, को विश्वविद्यालय की परीक्षा हेतु न भेजा जाए ।
- (iii) उपस्थिति: परीक्षा में प्रवेश हेतु एक विषय में 75% उपस्थिति अनिवार्य होगी । परीक्षा प्राधिकारी व्यक्तिगत आवश्यक स्थिति योग्यता के आधार पर असाधारण स्थिति में इसमें छूट कर सकते हैं ।
- (iv) प्रत्येक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र तीन घण्टे की अवधि का होगा ।
- (v) अभ्यासिक/मौखिक परीक्षा, सैद्धान्तिक परीक्षा की समाप्ति के पश्चात् तुरन्त आयोजित की जानी चाहिए ।
- (vi) परीक्षा प्राधिकारी मण्डल परीक्षाओं को ऐसी तिथि व समय पर आयोजित करेगा जोकि परीक्षा प्राधिकारी द्वारा निर्धारित की जायेगी । सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक परीक्षाएँ संबंधित होम्योपैथिक मेडिकल कालेज के परिसर में ही आयोजित की जायेगी ।
- (vii) प्रत्येक वर्ष में दो परीक्षाएँ होगी । एक सामान्य परीक्षा तथा एक पूरक । पूरक परीक्षाये सामान्य परीक्षाओं के 6 माह में आयोजित की जायेगी ।
- (viii) किसी भी अभ्यर्थी को अतिरिक्त पेरानैदानिक/नैदानिक समूह के विषयों से जुड़ने की तब तक अनुमति नहीं दी जायेगी जब तक की वह प्रथम बी०एच०एम०एस० के पूर्वनैदानिक सभी विषयों को मूल परीक्षा सहित चार मोंकों में उत्तीर्ण नहीं कर लेता ।

14. विविध :-

(i) प्राधिकारियों को परीक्षा आयोजित करने का अधिकार :-

विभिन्न राज्यों में डिग्री पाठ्यक्रम की परीक्षा विश्वविद्यालय या संसदीय अधिनियम द्वारा अधिकृत संस्था आयोजित करेंगी ।

(ii) व्याख्या :-

इन विनियमों की व्याख्या में यदि कहीं पर कोई संदेह होता है तो उसे केन्द्रीय होमियोपैथी परिषद् के पास स्पष्टीकरण हेतु भेजा जायेगा ।

(iii) छूट का अधिकार :-

यदि भारत में कोई विश्वविद्यालय या कोई आयुर्विज्ञानी संस्था जोकि आयुर्विज्ञानी अर्हता प्रदान करती है, संतुष्ट हो कि इन विनियमों में से किसी के अनुपालन से किसी विशेष मामले में अप्राप्य कष्ट हो रहा है, तो विश्वविद्यालय या आयुर्विज्ञानी संस्था जैसा भी मामला हो, लिखित रूप में कारण स्पष्ट करते हुए, उस विनियम की आवश्यकता में उस सीमा तक अनुपालन में छोड़ सकते हैं या छूट दे सकते हैं बशर्त कि वह बाधाएँ

निपटाने ऐसे मामले के साथ न्यायपूर्ण तरीके से बर्ताव करना आवश्यक समझे ऐसी शर्तों व अपवादों के साथ ।

(iv) बचाव धारा :-

कोई डिप्लोमा/डिग्री अर्हता, होमियोपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम के द्वितीय और तृतीय अनुसूची में वर्तमान में सम्मिलित हो, जहां पर नामावली इन विनियमों के अनुरूप नहीं हैं, की मान्यता इन विनियमों के लागू होने के पश्चात् रोक दी जाएगी । यद्यपि, यह धारा उन छात्रों पर लागू नहीं होगी जोकि इन विनियमों के लागू होने से पूर्व ही इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले चुके हैं ।

(v) छात्रों का एक कालेज से दूसरे में स्थानांतरण :-

- (अ) किसी होमियोपैथी मेडिकल कालेज में अध्ययनरत छात्र को उसी अथवा अन्य विश्वविद्यालय के अंतर्गत किसी दूसरे होमियोपैथी मेडिकल कालेज में स्थानांतरण की अनुमति दी जा सकती है ।
- (आ) नियमतः संबंधित विश्वविद्यालय प्रथम बी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के तीन माह के अंदर अनुमति दे सकता है ।
- (इ) नैदानिक विषयों में प्रशिक्षण के दौरान छात्रों के स्थानांतरण से बचना चाहिए ।
- (ई) एक महाविद्यालय से दूसरे महाविद्यालय में स्थानांतरित होने वाले छात्रों की संख्या न्यूनतम रखनी चाहिए ताकि इससे नियमित छात्रों के प्रशिक्षण पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। स्थानांतरित होने वाले छात्रों की संख्या होम्योपैथी कालिज की एक वर्ष में कुल अन्तर्ग्रहण क्षमता के 5% से अधिक नहीं होनी चाहिए बशर्ते एक वर्ष में अधिकतम 5 छात्रों से अधिक किसी एक होमियोपैथी महाविद्यालय में स्थानांतरण नहीं होगा ।
- (उ) उपर्युक्त विनियमों में न शामिल मामलों को व्यक्तिगत योग्यता के आधार पर विचारार्थ परिषद् के पास भेजा जाना चाहिए
- (ऊ) महाविद्यालयों में स्थानांतरित छात्रों के दाखिले के संबंध में सूचना परिषद् के पास तुरन्त भेजी जानी चाहिए ।

परिशिष्ट 'अ'
(विनियम 3(ii))

इन्टर्नशिप प्रशिक्षण

1.(i) प्रत्येक अभ्यर्थी को अन्तिम बी०एच०एम०एस० परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् होमियोपैथिक मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य की संतुष्टि के अनुसार एक वर्ष की भ्रमणशील इन्टर्नशिप प्रशिक्षण पूरा करना होगा । ततोपरान्त केवल अभ्यर्थी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त बी०एच०एम०एस० डिग्री अर्हता के लिए अधिकारी होगा ।

- (i)(अ) इन्टर्नशिप के सभी भाग कालेज से संलग्न अस्पताल में ही पूरे किये जाएंगे, किन्तु जहाँ पर संलग्न अस्पताल में सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण समाहित किया जाना संभव नहीं हो इसे लिखित रूप से अभ्यर्थियों को बता देना होगा तथा यह कालेज के अधिकारियों का कर्तव्य होगा की वे सभी प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था सरकार या स्थानीय निकाय द्वारा संचालित होम्योपैथिक अस्पताल या डिस्पेंसरी में करे ।
- (ii) संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा अन्तिम बी०एच०एम०एस० परीक्षा में उत्तीर्ण प्रत्येक अभ्यर्थी को अनंतिम प्रमाण पत्र दिया जायेगा जो राज्य होम्योपैथिक बोर्ड/परिषद् को कम से कम एक वर्ष की इन्टर्नशिप पूरी करने हेतु अभ्यर्थी को अनंतिम पंजीकरण देने के योग्य करेगा । परन्तु कार्य में कमियाँ/असंतुष्टि की दशा में आवश्यक इन्टर्नशिप की अवधि को बढ़ाया जाएगा और अनंतिम पंजीकरण को तदानुसार राज्य बोर्ड/परिषद् आगे बढ़ाएगीं ।
- (iii) संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त बी०एच०एम०एस० डिग्री अर्हता यदि अधिनियम की धारा 13(1) के अनुसार मान्यता प्राप्त चिकित्सीय अर्हता है तो राज्य बोर्ड ऐसे अभ्यर्थियों को पूर्ण पंजीकरण देगा जो एक वर्ष की आवश्यक भ्रमणशील इन्टर्नशिप पूरी करने पर उस कालेज के प्रधानाचार्य द्वारा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करेगें जो वहाँ के वास्तविक छात्र हैं ।
- (iv) इन्टर्नी अभ्यर्थी इलाज के लिए औषध प्रलेखन नहीं लिखेंगे और उनमें से प्रत्येक संबंधित विभागाध्यक्ष तथा/या निवासी चिकित्सा अधिकारी के सीधे नियंत्रण में कार्य करेगा । कोई भी इन्टर्नी अभ्यर्थी स्वहस्ताक्षरित चिकित्सीय-कानूनी प्रपत्र जारी नहीं करेगा ।
- (v) प्रत्येक अभ्यर्थी अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने के अधिकतम 24 माह के भीतर इन्टर्नशिप पूरी करेगा ।

2. इन्टर्नशिप प्रशिक्षण का संचालन प्रधानाचार्य संबंधित विभागाध्यक्ष तथा निवासी चिकित्सा-अधिकारी के सहयोग से निम्न प्रकार से संचालित करेगा :-

- (i) प्रत्येक अभ्यर्थी अपने कार्य का लेखा-जोखा रखेगा जोकि संबंधित विभागाध्यक्ष तथा/या निवासी चिकित्सा अधिकारी, जिसके अधीन इन्टर्नी तैनात है, द्वारा नियंत्रित होगा । लेखे-जोखे की जांच वस्तुगन दृष्टि से इन्टर्नी के ज्ञान, कौशल तथा योग्यता को अधतन करने के लिए की जायेगी ।
- (ii) प्रशिक्षण के दौरान रोगवृत्त करने, लक्षणों के मूल्यांकन, वर्गीकरण तथा मियाजमैटिक जांच विश्लेषण, रेपर्टरी करने तथा होमियोपैथी सिद्धांतों पर आधारित रोगी प्रबंधन पर बल दिया जाएगा । साप्ताहिक सेमिनारों का आयोजन किया जाएगा जहाँ पर प्रशिक्षार्थियों को अपने रोगवृत्त करने होंगे; और, संबंधित अध्यापक/निवासी चिकित्सा अधिकारी प्रत्येक इन्टर्नी की क्षमता की जांच करेंगे ।
- (iii) इन्टर्न-छात्र का भ्रमण निम्न होगा :-
- (अ) औषध साभ्यास (प्रेक्टिस ऑफ मेडिसिन) - 8 माह जहाँ इन्टर्न को प्रत्येक मनोविज्ञान, श्वास, जठरान्त्र, अन्तः स्त्राविकी, चर्म तथा रतिज रोग, (गति) लोकोमोटर, हृदय रोग, तथा शिशुरोग विभाग में कार्य करना होगा ।
- (आ) शल्यक्रिया - 1 माह
- (इ) प्रसूती एवं स्त्री रोग - 2 माह [(1 माह प्रत्येक) जनन तथा शिशु स्वास्थ्य सहित]
- (ई) सामुदायिक चिकित्सा (पी०एच०सी०/सी०एच०सी० सहित) - 1 माह

(iv) प्रत्येक इन्टर्नी को, नमूने लेने तथा सामान्य खून की जांच, रक्त नमूना परजीवी के लिए, थूक की जांच, मूत्र तथा मल परीक्षण के द्वारा नैदानिक विकृत कार्य से पहचान करनी चाहिए । छात्रों को प्रयोगशाला निष्कर्षों के निदान तथा रोगी प्रबंधन से सह-संबंध स्थापित करने में प्रशिक्षित किया जाएगा ।

(v) प्रत्येक इन्टर्नी को जांच की तकनीकों जैसे एक्स-रे, अल्ट्रासोनोग्राफी, ई0सी0जी0, स्पाइरोमीटर तथा आनेवाली तकनीकों तथा उनके निष्कर्षों को निदान तथा रोगी प्रबंधन से सह-संबंध स्थापित करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा ।

(vi) प्रत्येक इन्टर्नी को चिकित्सीय-कानूनी प्रपत्रों, मेडिकल तथा फिटनेस प्रमाणपत्रों, मृत्यु प्रमाण पत्रों, जन्म प्रमाण पत्रों, न्यायालयी प्रक्रिया तथा इस प्रकार के अधिनियम जोकि न्यायिक चिकित्सा विषय में पढाए गए थे, का समस्त ज्ञान दिया जाएगा ।

(vii) प्रत्येक इन्टर्नी औषध साभ्यास में 40 तीव्र तथा 25 चिरकालिक रोगवृत्तों का अनुवर्ती परामर्श सहित पूरा लेखा-जोखा तैयार करेगा । यह सभी प्रकार से जिसमें 5 प्रसवपूर्ण जांच तथा 3 प्रसव केसों जिसमें अभ्यर्थी शामिल रहा हो प्रसूति विभाग में, एवं स्त्री विभाग में किये गये 3 स्त्री रोग के केस, शल्य क्रिया विभाग में अभ्यर्थी द्वारा सहायकरूप में किये गये 5 शल्यक्रियात्मक केसों के रिकार्ड (तथा मरहम पट्टी के प्रदर्शन सहित); तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों तथा विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं से अर्जित ज्ञान का लेखा-जोखा ।

(viii) प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को इन्टर्नशिप के दौरान कम से कम एक औषध को प्रमाणित करना होगा ।

(ix) प्रत्येक इन्टर्नी किसी विषय में एच्छक कार्यभार (इलेक्टिव एसाइन्मेंट) लेने के लिए स्वतंत्र होगा तथा कार्यभार की कार्यक्षमता का पूरा लिखित प्रतिवेदन इन्टर्नी द्वारा इन्टर्नशिप प्रशिक्षण अवधि में एच्छक कार्यभार के संबंध में कालेज प्रधानाचार्य को सौंपा जाएगा ।

(x) प्रत्येक इन्टर्नी को इस प्रकार से कार्य दिया जाएगा कि वह प्रत्येक माह कम से कम 15 दिन ओ0 पी0 डी0 तथा 15 दिन आई0 पी0 डी0 में उपस्थित रहे (सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र की ड्यूटी (कार्य) को छोड़कर) तथा ड्यूटी के अन्य भागों को पुस्तकालय सहित में भी उपस्थित होगा ।

(xi) प्रत्येक इन्टर्नी को आंकड़े तथा लेखा-जोखा संकलित करने की महत्वता सिखाई जाएगी तथा साथ ही इन्टर्न-छात्र को अनुसंधान प्रविधियों से भी परिचित कराया जाएगा ।

3. (i) किसी भी इन्टर्नी की प्रशिक्षण के दौरान 80 प्रतिशत से कम उपस्थिति नहीं होगी ।

(ii) आवश्यक इन्टर्नशिप प्रशिक्षण के दौरान प्रत्येक इन्टर्नी कम से कम 6 घण्टे प्रतिदिन कार्य पर उपलब्ध रहेगा ।

डॉ. ललित वर्मा, रजिस्ट्रार-सह-सचिव

[विज्ञापन III/IV/147/2003-असा.]

टिप्पणी:- मूल विनियमों को भारत के असाधारण राजपत्र, भाग-III, अनुभाग 4, में दिनांक 11-5-1983 को तथा तत्पश्चात् शुद्धिपत्र उक्त अनुभाग में दिनांक 6-2-1984 को प्रकाशित किया गया था ।

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY**NOTIFICATION**

New Delhi, the 24th September, 2003

No. F. 12-13/87-CCH (Pt. II).— In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and sub-section (1) of section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government, hereby makes the following regulations further to amend the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983, namely:-

1. (1) These regulations may be called the Homoeopathy (Degree Course) Amendment Regulations, 2003.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- (3) It shall apply to students who shall be admitted for BHMS (Degree Course) from the commencement of the academic session (2003-2004).
2. In the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983 (hereinafter referred to as the said regulations), in regulation 2, -
 - (i) in clause (v),
 - (a) the words "Board or" shall be omitted;
 - (b) for the words "Central Council" the words "Central Government" shall be substituted;
 - (ii) for clause (x), the following clause shall be substituted, namely:-

"(x) "teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic College and includes teaching experience in the subjects of Medicine, Surgery, Obstetrics and Gynaecology, gained in the Medical Colleges recognised by the Central Government;"
 - (iii) after clause (xi), the following clause shall be inserted, namely:-

"(xii) "Post Graduation in Homoeopathy" means a Post Graduate qualification in Homoeopathy recognised as per the provisions of the Act."
3. In regulation 3 of the said regulations, -
 - (a) for clause (ii) to the following clause shall be substituted, namely:-

"Every candidate after passing the final BHMS examination shall undergo compulsory internship for a period of twelve months as per the procedure laid down in Annexure 'A' attached to these regulations."

(b) for clause (iii) the following clause shall be substituted, namely:-

“(iii) On successful completion of the internship and on the recommendation of the Principal of the Homoeopathic College concerned, the concerned University shall issue the Degree to such candidates.”

3.A. In Part III of the said regulations, the following new clause shall be added, namely:-

“Blind (including colour blind), deaf and/or dumb candidates shall not be allowed for admission in the course.”

4. In Part IV of the said regulations, for the title, the following title shall be substituted, namely:-

“SUBJECTS”

5. In part V of the said regulations, for regulation 5 the following regulation shall be substituted, namely:-

“5. Subjects: Subjects for study and examination for the B.H.M.S. (Degree Course) shall be as under:-

1. Anatomy.
2. Physiology including Biochemistry.
3. Organon of Medicine, Principles of Homoeopathic Philosophy & Psychology.
4. Homoeopathic Pharmacy.
5. Homoeopathic Materia Medica & therapeutics.
6. Pathology & Microbiology.
7. Forensic Medicine and Toxicology.
8. Practice of Medicine.
9. Surgery.
10. Obstetrics and Gynecology.
11. Community Medicine.
12. Case taking and Repertory”.

6. In Part V of the said regulations, for regulation 6, the following regulation shall be substituted, namely:-

"6. Syllabus for Direct Degree Course: Following shall be syllabus for B.H.M.S. (Direct Degree) Course:-

INTRODUCTION

Basic objectives of education and training in a Homoeopathic institution is to prepare a competent Homoeopathic Physician who is capable of functioning independently and effectively under Rural and Urban set ups.

In order to achieve this, the following syllabus and curriculum has been designed:-

A. Sound Foundation:-

To function effectively as a Homoeopathic physician a thorough grasp over the medical concepts is imperative. For this, the educational process shall be perceived as an integrated evolving process and not merely as an acquisition of a large number of disjointed facts.

A student shall have to pass through a Training procedure which encompasses the above well, right from 1st BHMS to IV BHMS and also during the internship period.

He shall undergo an education process wherein learning of Facts and Concepts right from 1st Year are in a continuity, in an evolutionary & progressive pattern. In 1st BHMS, student shall study the fundamental principles of Homoeopathy and will also learn more of applied anatomy than a multitude of minor anatomical details.

In 2nd BHMS, a student shall be exposed to very vital concepts of susceptibility and symptomatology with Analysis-Evaluation and details of the Homoeopathic concepts, old logic of Homoeopathy. These will attain much deeper significance (if care is taken by teachers of pathology and Organon-Philosophy) when the current knowledge of INFLAMMATION, IMMUNITY, is correlated well with concepts of susceptibility.

In 3rd BHMS, there is opportunity to fortify the foundation at the best by correlating between Theory of Chronic diseases and the Patho-Physiological facts on the

Gynecology, Surgery and Medicine. A student shall have to be taught the spectrums of various diseases in correlation with the spectrum of miasmatic manifestations. He will then be able to use a well concluded **EVALUATION ORDER OF Characteristics to derive an Operationally valid repertorial Totality.**

The knowledge gathered in this pattern will keep him constantly aware of his objectives and his role as a Homoeopathic Physician. The Integration will eliminate the state of confusion. The Therapeutics Actions then will be right and Complete, utilizing the full repertories of the Medicinal and Non-medicinal measures, keeping him up-to-date about all fresh scientific developments and inculcating values of Continuous Medical Education.

B. Execution:-

Maximum emphasis shall be placed on the applied aspects of all the subjects. Thus teachings of Anatomy, Physiology and Biochemistry will demand greater emphasis on applied aspects of these sciences. Teaching of Pathology will demand sharp focus on general Pathology, while Regional Pathology will come up as an application. It shall require correlation with Medicine, Surgery and Gynaecology. All these need to be studied from Homoeopathic perspectives, hence emphasis on applied aspect of Organon Philosophy & Homoeopathic Therapeutics representing application to all other subjects.

C. Inter-Departmental Co-ordination:-

Essentially, the entire approach becomes an integrated approach. All departments shall develop a cohesive well defined programme which demand marked inter-departmental co-ordination.

It is therefore desirable to have teaching programmes wherein, by rotation each department participates in the teaching co-ordinating well with the other faculties with constant updating and evaluation. The co-ordination has to be in the way as given in the text under each subject inside these Regulations. This will ensure fundamental and exceptional clarity.

D. Deductive-Inductive Teachings:-

While teaching, there shall be balance in designing deductive and inductive process in mind. There shall be less emphasis on didactic lectures. **Major portion of the time of the students shall be devoted to demonstrations, group discussions, seminars and clinics.** Every attempt shall be made to encourage students to participate in all these to develop his personality, character, expressions and to ensure the grasp over concepts rapidly.

E. Patient Oriented Teachings:-

In order to impart the integrated medical education PATIENT has to be in the Centre right from day one of the IInd BHMS.

Importance of social factors in relation to the problem of health and disease shall receive proper emphasis throughout the course and to achieve this objective, **the educational process shall be community as well as hospital based.**

Based on the above concepts the course of studies as laid down in these Regulations will help to fulfill these needs. While doing so, the need of the hour, past experience in learning and teaching is taken into consideration.

ORGANON OF MEDICINE AND PRINCIPLES OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY**FIRST B.H.M.S.****INTRODUCTION TO SCIENCE OF HOMOEOPATHY**

Organon-Philosophy is a vital subject which builds up the conceptual base for the Physician. It illustrates those principles which when applied in practice enable the Physician to obtain results, which he can explain rationally and repeats them in practice with greater competence. Focus of the Education and Training should be to build up the conceptual base.

Homoeopathy should be introduced as a **Complete Rational System of Medicine** with its Holistic, **Individualistic** and **Dynamistic** approach to life, Health, Disease, Remedy and cure.

In order to achieve this, study of logic, psychology and the fundamentals of Homoeopathic Science become quite important.

It is imperative to have clear grasp over Inductive-Deductive Logic, and its application and comprehending the fundamentals of Homoeopathic Science. Homoeopathic approach for the patients is a Holistic approach. Science demands from the Homoeopathic Physician, to comprehend his patient as a PERSON, his dispositional state of Mind (and Body), along with the disease process with its causes. Since we lay great emphasis on knowing the mind, knowledge of the psychology becomes imperative for a Homoeopathic Physician. Thus introduction to Psychology will assist HOMOEOPATHIC student to build up his conceptual base in his direction.

I. Fundamental of Homoeopathic Science.

Preliminary lectures on the evolution of medicinal practice by the ancients giving stress to rationalistic and vitalistics thoughts.

1. Short history of Hahnemann's life and contributions.
2. Brief life and contributions of early pioneers after Hahnemann.
3. Brief study of the early history of spread of homoeopathy & position of Homoeopathy in various countries.
4. Hahnemann's Organon of Medicine from aphorism 1 to 70.
5. Fundamental Principles of Homoeopathy.
6. Health: Hahnemann's and modern concept.
7. Introductory lectures on diseases, their classification, drug diseases, case taking and drug proving.

II. Logic.

The term 'Logic' means 'thought' 'reason' 'Law' and is used to denote the totality of rules to which the process of thought is subjected, a process that reflects the reality. It is also used to denote the science of the rules of reasoning and the forms in which it occurs.

As discussed earlier, to comprehend ORGANON-PHILOSOPHY, it is essential to acquaint with understanding of LOGIC in order to grasp inductive-deductive reasoning.

III. Introduction to Psychology.

1. Definition of Psychology - as a Science and its differences from other Sciences. Concept of Mind - Contemporary schools of psychology with special reference to Behaviouristic and psychoanalytic approaches.

2. Scientific study of behaviour, intelligence, cause - effect relation - behaviouristic (Pavlov, Watson, Skinner) and dynamics of behaviour (Freud and Neo Freudians).
3. Basic concepts of sensation, perception, illusion, Hallucination, Delusion, image, intelligence, aptitude, attention, thinking and memory.
4. Emotion, motivation, personality, anxiety, conflict, frustration, psychomatic manifestations and dreams.
5. Developmental psychology - normal developments since birth to maturity (both physical and psychological) and deviations - its effects on later behaviour.

*The attempt should be made to make a student receptive to various terms in teachings of Materia Medica and Homoeopathic Philosophy.

II. B.H.M.S.

- IN THREE SECTIONS -

Section 1

Hahnemann's Organon of Medicine Aphorism: 1 to 145

The purpose of Homoeopathic case taking is not merely collection of symptoms but comprehending the **PERSON IN WIDER DIMENSIONS** with the correct appreciation of the factors responsible for the genesis and maintenance of illness i.e. **Fundamental Cause, PREDISPOSING CAUSE, MAINTAINING CAUSE & ONE SIDED DISEASES.**

There should be compulsory case taking term for each student wherein he learns to 'build up **PORTRAIT** of the disease by undertaking:-

- (i) Evolutionary study of the patient comprising of well defined characteristics.
- (ii) Studying individual in His life-span and in relation to his family environment and work.
- (iii) Processing of the interview and the entire case so as to grasp the principles of **MANAGEMENT** of these patients.

He should be taught to classify various symptoms which he has elicited in his case taking. He puts down his evaluation of those characteristics. His capacity for analysis and synthesis should evolve. In appendix, Analytical paper for symptom classification and Evaluation is attached. If practiced properly, has potential to improve analytical faculty of the student.

Physician, Teaching Staff, R.M.O. and House Staff shall spend enough time with the students and interns and scrutiny of their written cases, discussing mode of interview and processing of the case.

There should be standardization in imparting training in ANALYSIS AND EVALUATION. Each Institute shall keep the standard guide-lines of Case-taking.

**GUIDELINES ANALYSIS - EVALUATION OF OBJECTIVES OF ANALYSIS
EVALUATION OF SYMPTOMS.**

- (1) To individualize the case so as to prepare an effective totality which allows us to arrive at the SIMILIMUM, prognosis the case, and advise management and impose necessary restrictions on mode of life and diet.
- (2) To infer about state susceptibility by appreciating the quality of characteristics state of susceptibility and diagnosis about miasmatic state would allow physician to formulate comprehensive plan of treatment.
- (3) Order of evaluation of the characteristics, of the case would become stepping stone for the reportorial totality.

(iii) **CLASSIFICATION OF SYMPTOMS:** Their scopes and limitations in arriving as a totality.

Symptom should not be considered superficially at its face value. It should be analyzed and evaluated by taking into account following factors.

- (i) Through grasp over the underlying dynamics:
(Psychological, Physiological, Pathological aspects).
- (ii) This would demand thorough comprehension over the evolution of DISEASE, taking into account FUNDAMENTAL, EXCITING & MAINTAINING CAUSES.
- (iii) Knowledge of socio-cultural background is quite imperative for correct analysis and evaluation. Details regarding SYMPTOMATOLOGY can be comprehended by referring to the classical books in philosophy.

The Department of Organon & Philosophy while training in Case Taking shall co-ordinate with various other departments where student is sent for the pre-clinical and clinical training. This would ensure not only streamlining of the clinical Centres but also cultivate Homoeopathic perspective when student is attending other special clinics.

EVALUATION - EXAMINATION

1. Student's performance shall be evaluated periodically. There shall be periodical card tests and internal (theory and practical) examinations in each academic year. The concerned teaching staff shall file his general report on the conduct of internal examinations and also on student's performance, which shall be discussed in departmental and interdepartmental meetings.
2. Each student appearing for II and III BHMS shall maintain one journal comprising of 20 cases (10 short and 10 long cases) with complete processing of the case material for each examination, which shall be evaluated by the head of the department.
3. There shall be provisions for the internal assessment of all these examinations and journal work in the Final II and III BHMS examinations respectively.

III BHMS.

When student enters third year, he has already grasped basic Sciences of Anatomy, Physiology, Pathology and has been introduced to Clinical Medicine, Surgery, Gynaecology and Obstetrics.

Organon including Philosophy is the subject which builds up the conceptual base for the physician. It illustrates those principles which when applied in practice enable physician to obtain results which he can explain rationally and repeats them in practice with greater competence. Focus of the Education & Training should be to build up this conceptual base. This can be delivered effectively if there is proper integration of various disciplines, various knowledge throughout the subject of ORGANON-PHILOSOPHY.

(I) HAHNEMANN'S THEORY OF CHRONIC DISEASE

Proper emphasis should be made on the way in which each miasmatic phase evolves and the characteristic expressions which are thrown off at various level. This will bring out characteristic PATTERN of each miasm.

Definite attempt should be made to understand theory of CHRONIC MIASM in the light of our knowledge of basic sciences of ANATOMY, PHYSIOLOGY, PATHOLOGY & MEDICINE. This would demand CO RELATION OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY with allied sciences.

Teacher should bring out clearly therapeutic implications of THEORY OF CHRONIC MIASM in practice. This will demand comprehension of EVOLUTION OF NATURAL DISEASE from miasmatic angle. This will require to be correlated with applied Materia Medica. Here you demonstrate how various drugs would come up in Psoric, Sycotic and syphilitic state of the clinical diseases.

Thus ORGANON & PHILOSOPHY will bring out effectively integration of Anatomy, Physiology Psychology, Pathology, Clinical Medicine, Materia Medica and Therapeutics. This would demand greater interdepartmental co-ordination.

(II) HAHNEMANN'S ORGANON OF MEDICINE VTH & VITH EDITIONS
(including Aphorism 1 to 294).

- (a) Kent's lectures, Robert and Stuart close works in Philosophy.
- (b) POSOLOGY.
- (c) DIET, ANCILLARY MODE OF TREATMENT.
- (d) INTRODUCTION OF REPERTORY.

Student should maintain journal of 20 cases wherein thoroughly worked out cases from their clinic attendance would be there.

Cases should demonstrate student's work on: CASE TAKING - CASE ANALYSIS - EVALUATION-DISEASE, DIAGNOSIS-MIASM-POSOLGY-REMEDY SELECTION.

IV BHMS.

Here the focus is on applied aspect of Organon & Philosophy. Maximum emphasis shall be given on practice oriented teaching of Organon and Philosophy.

This can be effectively achieved by studying the various cases taken by students in OPD & IPD.

Case analysis, evaluation and synthesis takes into account the application of entire ORGANON from Aphorism 1 to 294 and all principles of Philosophy as illustrated in I, II, III BHMS.

More emphasis to be given on case taking, case analysis, evolution, posology miasmatic diagnosis, potency selection and repetition of doses, second prescription, diet, regimen and other pressures with principle of management during OPD and IPD visits, so that the students can have the practical knowledge of the treatment and management of the patient.

The following topics shall be taught during IV BHMS in depth:-

1. History of Medicine.
2. History of Homoeopathy, its spread to different countries.
3. Life and living environment.
4. Concepts of health and factors modifying it.
5. Concept of susceptibility and vital reaction.
6. Concept of disease and totality of symptoms
7. Concepts of Drug, Medicine and Remedy.
8. Concept of Cure and Disease and Drug relationship.

9. Scope and limitations of different modes of employing medicines in disease Antipathy, Allopathy and Homoeopathy.
10. Various methods of classification and evaluations of symptoms common and characteristic. General and particular.
11. Concepts of incurable disease, suppression and palliation.
12. Prophylactics.
13. Scope and limitations of Homoeopathy.
14. Remedy response, prognosis after administration of a remedy.
15. Principles and criteria for repetition and selection of potency.

Paper I - Topics from 1 - 15.

Paper II - Topics from Kent's lectures,

Stuart close and Roberts Philosophy,

Case taking at bedside.

APPENDIX

Purpose of the Homoeopathic Case Taking is not merely collecting the symptoms but comprehending the person in wider dimensions, with correct appreciation of the causes for the illness.

The adequacy in Case Taking and Physical examination should be judged from the following angle:-

- (1) To carry out successful individualization of the case and to conclude about state of the susceptibility.
- (2) Finding out a simillimum with correct potency and doses
- (3) Prescribing proper diet to the patient.
- (4) Advising the management of the case.
- (5) The pathology and homoeopathic prognosis.

Anatomy and Physiology

Study of Normal Man in Pre clinical Period.

Human economy is the most difficult of all sciences to study. Man is a conscious mentalised, living being and functions as a whole. Human knowledge has become so vast that for precise comprehension of man as a whole development of different branches of science like anatomy

physiology and psychology was necessary. But such a division is only an expedient; man nevertheless remains indivisible.

Consciousness, life and its phenomena cannot be explained in terms of cell physiology or of quantum mechanics nor by physiological concepts which in their turn are based on chemico-physical concepts.

Though anatomy and physiology are hitherto being taught as entirely different subjects, a water-tight barrier should not be erected between them; structure (anatomy) and function (physiology) are but correlated aspects and the physio-chemical processes are but an external expression of an inexplicable phenomenon which is life.

So anatomy and physiology shall be taught with the following aims:-

- (i) to provide for the understanding of the morphological physiological and psychological principles which determine and influence the organism of the living body as a functioning unit;
- (ii) to co-relate and interpret the structural organism and normal physiology of the human body and thus to provide the data on which to anticipate disturbance of functions;
- (iii) to enable the student to recognize the anatomical and physiological basis of the clinical signs and symptoms of disorders due to injury, disease and mal development;
- (iv) similarly, to give the student to understand the factors involved in the development of pathological processes and the possible complications which may arise there from;
- (v) to give the student such knowledge on pre clinical subjects as will enable him ultimately to employ competently and rationally all the ordinary methods of examination and treatment (including surgery) that may involve such knowledge; and
- (vi) for enabling the student to pick out strange, rare and uncommon symptoms from pathognomonic symptoms for individualisation of patients and drugs for the purpose of applying the law of similar in Homoeopathic practice.

Anatomy

Instructions in anatomy shall be so planned as to present a general working knowledge of the structure of the human body. The amount of detail which he is required to memorize should be reduced to the minimum. Major emphasis should be laid on functional anatomy of the living subject rather than on the static structures of the cadaver, and on general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood-vessels, nerves and lymphatic. Study of the cadaver is only a mean to this end. Students should not be burdened with minute anatomical details which have no clinical significance.

Though dissection of the entire body is essential for the preparation of the student for his clinical studies, the burden of dissection can be reduced and such saving of time can be effected, if considerable reduction of the amount of topographical details is made and the following points:-

1. Only such details as have professional or general educational value for the medical student should be presented to him.
2. The purpose of dissection is not to create technically expert prosecutors but to give the student an understanding of the body in relation to its function, and the dissection should be designed to achieve this end, for example, ignoring of small and clinically unimportant blood vessels results in such clearer dissection and a much clearer picture of the main structures and their natural relationships.
3. Much that is at present taught by dissection could be demonstrated as usefully through prepared dissected specimens.
4. Normal radiological anatomy may also form part of practical training. The structure of the body should be presented linking functional aspect.
5. Actual dissection should be preceded by a course of lectures on the general structure of the organ or the system under discussion and then its function. In this way anatomical and physiological knowledge can be presented to students

in an integrated form and the instruction of the whole course of anatomy and physiology made more interesting, lively and practical.

6. A good part of the theoretical lectures on anatomy can be transferred to tutorial classes with demonstrations.

A few lectures or demonstrations on the clinical and applied anatomy should be arranged in the later part of the course. They should preferably be given by a clinician and should aim at demonstrating the anatomical basis of physical signs and the value of anatomical knowledge to the clinician.

Seminars and group discussions to be arranged periodically with a view or presenting different subjects in an integrated manner.

Formal class room lectures to be reduced but demonstrations and tutorials to be increased.

There should be joint teaching-cum-demonstration sessions with clinical materials illustrating applied aspect of Anatomy in relation to clinical subjects. This should be arranged once a fortnight and even form part of series of introductory lectures if be needed.

There should be joint seminars with the departments of Physiology and Bio-chemistry and should be organized once a month. There shall be a close correlation in the teaching of gross Anatomy, Histology, Embryology and Genetics. The teaching of areas and systems in Anatomy, Physiology including Bio-chemistry shall be integrated as far as possible.

THEORETICAL

A complete course of human anatomy with general working knowledge of different anatomical parts of the body. Emphasis should be laid down on the general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood vessels, nerves and lymphatic. Candidates should not be burdened with minute anatomical details of every description which has no clinical significance.

Candidates will be required to recognize anatomical specimen and to identify and answer questions on structures displayed in recent dissections, to be familiar with the bones and their articulations including the vertebrae, the skull and with the manner of classification of the long bones.

Emphasis will not be laid on minute details except in so far as is necessary to the understanding or in their application to medicine and surgery. Candidates are expected to know the attachments of muscles sufficiently to understand their action, but not be precise-details of the origin and insertion of every muscle. A knowledge of the minor details of the bones of the hand, foot, their articulations and details of the small bones of the skull will not be required.

The curriculum of Anatomy should be divided under the following headings:-

- I. Gross Anatomy - to be dealt under the following categories:-
 - (a) Introductory lectures with demonstrations.
 - (b) Systematic series.

The study to be covered by deductive lectures, lecture, demonstrations, surface and radiological anatomy, by dissection of the cadaver and study of dissected specimen. Knowledge thus obtained together with co-relation of facts should be integrated into living anatomy. Details of topographical relation should be stressed for these parts which are of importance in general practice.

- (i) Superior extremity, inferior extremity, head, neck, thorax, abdomen and pelvis to be studied regionally and system by system (special reference to be made to development and its anomalies, regional, innervation, functional groups of muscles in relation to joints of otherwise and Applied Anatomy).
- (ii) Endocrine organs with special reference to **development** and applied anatomy.

- II. Development anatomy - General principles of development and growth and the effect of hereditary and environment factors to be given by lectures, charts, models and slides.
- III. Neuro-anatomy, Gross anatomy of brain and spinal cord and the main nerve tracts. The peripheral nerves. Cranial nerves their relations course and distributions.

Autonomic nervous system-Development and anomalies, applied Anatomy.

The study to be covered by lectures, lecture-demonstrations of brain and cord, and clinical co-relation.

N.B.:- The practical study should proceed the study physiology nervous system, Early co-relation with the clinical course desirable.

- IV. Micro anatomy (Histology)- Modern concepts of cell, epithelial tissue, connective tissue, muscular tissue, nervous tissue and systemic structure.
 - (A) Introductory Lectures:-
 - (a) Modern conception of cell-components and their functions, why a cell divides, cell division, types with their signification.
 - (b) Genetic individuality:- (i) Elementary genetics definition, health and diseases, result of interaction between organism and its environments, utility of knowledge from homoeopathic point of view.
 - (ii) Mandel's laws and their significances.
 - (iii) Applied genetics.
 - (B) Embryology.
 - (C) General anatomy & Micro-anatomy.
 - (D) Regional anatomy - Regional Anatomy shall be taught with emphasis on developmental anatomy, broad relationship, surface marking, Radiological anatomy, and applied anatomy.

(a) Extremities:-

- (i) Skeleton, position and functions of joints.
- (ii) Muscle groups, lumbar plexus,
- (iii) Arterial supply, venous drainage, neuro vascular bundles, lymphatic and lymph nodes, relation of nerves to bones.
- (iv) Joints with special emphasis on lumbo - sacral, hip, knee and ankle joints, muscles producing movement, results of nerve injury.
- (v) Radiology of bones and joints. Classification, determination of age.
- (vi) Applied anatomy.
- (vii) Surface marking of main arteries, nerves.

(b) Thorax:-

- (i) Skeleton of joints, of muscles, of chest wall-diaphragm, innervation of abdominal and thoracic respiration, different with age. The mammary gland, lymphatic drainage.
- (ii) The pleura & lungs.
- (iii) Arrangements structures in the mediastinum, heart, coronary artery great vessels, trachea, oesophagus, lymph nodes, thymus.
- (iv) Radiology of heart, aorta, lungs, bronchogram.
- (v) Surface marking-pleura, lungs, heart-valves of heart, border, arch of aorta, superior venacava, bifurcation of trachea.

(c) Abdomen and pelvis:-

- (i) The abdominal wall- skin and muscles, innervation of fascia, peritoneum, blood vessels, lymphatics, autonomic ganglia and plexuses.

- (ii) Stomach, small intestine, caecum, appendix, large intestine.
 - (iii) Duodenum, pancreas, kidneys, uterus, supra-renals.
 - (iv) Liver and gall bladder.
 - (v) Pelvis, skeleton and joints, muscles of the pelvis, organs internal and external genitalia in male and in the female, lumbosacral plexus, vessels, lymphatics, autonomic ganglia, and plexuses.
 - (vi) Blood vessels and nerve plexuses of abdomen and pelvis, the portal venous system.
 - (vii) Applied anatomy of referred pain, portal systemic anastomosis, catheterization of the urinary bladder in the male and female.
 - (viii) Surface marking of organs and blood vessels.
- (d) **Head and neck:-**
- (i) Scalp-Innervation, vascular supply middle meningeal artery.
 - (ii) Face-main muscles groups, muscles of facial expression muscles of mastication, innervation of skin and repair muscles, vascular supply, principles of repair scalp and face wrinkles.
 - (iii) The eyelids, eyeball, lacrymal apparatus, the muscles that move the eyeball.
 - (iv) The nasal cavity and nasopharynx, septum, conchae, paranasalsinus, Eustachian tube, lymphoid masses.
 - (v) Oral cavity and pharynx.
 - (vi) Larynx and laryngeal part of Pharynx structure (No details) functions, nerve supply, larynge-scopic appearances.
 - (vii) Cervical vertebrae, joints of head and neck.
 - (viii) Structures of neck, sternomastoid, brachial plexus, main arteries and veins, disposition of lymph nodes, areas of drainage, phrenic nerve, thyroid gland and its blood supply, para-thyroid, the trachea, oesophagus. The position of the Sub-mandibular and sublingual salivary glands.

- (ix) Teeth and dentition.
- (x) The external, middle and internal ear.
- (xi) Applied anatomy.
- (xii) Surface marking: Parotid gland, middle meningeal artery, thyroid gland, common internal and external carotid arteries.

(e) **Neuro anatomy:-**

- (i) Meanings-functions of
- (ii) Cerebrum-areas of localization, vascular supply basal ganglion, internal capsule.
- (iii) Cerebellum-functions.
- (iv) Pons, medullar midbrain, cranial nerves, palsies.
- (v) Cerebro-spinal fluid-formation, circulation function, absorption.
- (vi) Cranial nerves, origin, courses (with minimum anatomical details) areas of distribution;
- (vii) The sympathetic and parasympathetic nervous system location, distribution, function.
- (viii) Applied anatomy of lumbar puncture, referred pain, spinal anesthesia, increased intra cranial pressure.

(E) **Histological study systemic**

PRACTICAL

Demonstration of dissected parts/Dissection of the whole human body.

Identification of histological specimen of tissues and organs viz., liver, kidney, lungs, thyroid, pancreas, spleen, trachea, oesophagus, stomach, tongue, intestine, large intestine, testes, every bone, adipose tissue, spinal cord, suprarenal gland, parotid gland, anterior pituitary salivary glands, skin, parathyroid gland, cerebellum, cerebral cortex, cardiac muscle.

The written paper in Anatomy shall be distributed as follows:-

- Paper I - Upper extremity, head, face, Neck, brain and Embryology.
Paper II - Thorax, abdomen, pelvis, lower extremity and Histology.

PHYSIOLOGY INCLUDING BIOCHEMISTRY

The purpose of a course in physiology is to teach the functions, processes and inter-relationship of the different organs and systems of the normal disturbance in disease and to equip the student with normal standards of reference for use while diagnosing and treating deviations from the normal. To a Homoeopath the human organism is an integrated whole of body life and mind; and though life includes all the chemico-physical processes it transcends them. There can be no symptoms of disease without vital force animating the human organism and it is primarily the vital force which is deranged in disease. Physiology shall be taught from the stand point of description physical processes underlying them in health.

There should be close co-operation between the various departments while teaching the different systems. There should be joint courses between the two departments of anatomy and physiology so that there is maximum co-ordination in the teaching of these subjects.

Seminars should be arranged periodically and lecturers of anatomy, physiology and bio-chemistry should bring home the point to the students that the integrated approach is more meaningful.

THEORETICAL

Introductions

Fundamental phenomena of life. The cell and its differentiation. Tissues and organs of the body.

Bio-chemical Principles

Elementary constituents of protoplasm, Chemistry of proteins, carbohydrates and lipids, Enzymes.

Bio-physical Principles

Units of concentration of solutions, ions, electrolytes and non-electrolytes filtration, diffusion, ultrafiltration, dialysis, surface tension, absorption, hydrotrophy, domain equilibrium colloid, acid-base concentration.

Environmental Physiology

1. Skin - structure and functions.
2. Regulations of body temperature hypothermia.

Skelato - Muscular System

1. General introduction and classification of muscle fibers.
2. Excitation-contraction coupling and molecular basis of contraction.
3. Properties of skeletal muscles and factors affecting development of tension.
4. Energy metabolism of muscles.

Nerve

1. Structure and function of nerve cell.
2. Bioelectric phenomena in the nerve and muscle. R.M.P., Action and its propagation, neuromuscular transmission.
3. Classification and properties of nerve fibers.
4. Wellerian degeneration, regeneration and reaction of degeneration.

Blood

1. Composition and functions in general.
2. Physiology of plasma proteins, normal values, E.S.R. & other blood indices.
3. Physiology of R.B.C., W.B.C. and platelets formation, fate and physiological and functions of formed elements of blood.
4. Body fluid compartments, their measurements, blood volume and its regulation.
5. A.B.O. and RH. Blood group systems.
6. Lymphatics and R.E. system.
7. Coagulation & haemostasis.

Cardio Vascular System: (C.V.S.)

1. Structure and properties of cardiac muscle.
2. Generation and conduction of cardiac impulse, E.C.G. (Normal).
3. Cardiac cycle with reference to pressure, volume changes, heart sounds etc.
4. Heart rate and its regulations.
5. Haemodynamics, B.P. and its regulation.

6. Nervous and chemical control of blood vessel.
7. Physiological basis of shock.

Respiratory System

1. Introduction, general organization.
2. Mechanics of respiration, compliance.
3. Pulmonary volumes and capacities.
4. Pulmonary and alveolar ventilation.
5. Physical principles of gaseous exchange and transport of respiratory gases.
6. Nervous and chemical control of respiration.
7. Hypoxia, acclimatization, cyanosis, dyspnoea, asphyxia, abnormal respiration.
8. Pulmonary function tests.
9. Effect of high and low atmospheric pressure effect of respiration on circulation, artificial respiration.

Digestive System

1. General introduction, Organisation plan and evolutionary significance.
2. Composition, function and regulation of salivary, gastric pancreatic intestinal and biliary's secretions.
3. Movements of G.I. tract.
4. Absorption of G.I. tract.
5. Physiology of Liver and Gall bladder structure and functions.

Excretory System

1. General introduction, structure and functions of kidney.
2. Mechanism of formation of urine.
3. Mechanism of concentration and dilution of urine.
4. Physiology of micturation.

Endocrine

1. Physiology of pituitary, thyroid, parathyroid, pancreas adrenal cortex and adrenal medulla.
2. Regulation of secretion of endocrine glands.

Reproduction

1. Introduction in general and types of reproduction.
2. Physiology of testes and ovaries.
3. Physiology of menstruation, pregnancy and lactation.
4. Placenta and its function, foetal circulation and respiration.

Central Nervous System

1. General Organisation, structure and function of nerve cell and neuralgia.
2. Cerebrospinal fluid.
3. Physiology of synapse and receptor organs.
4. Physiology of reflex action - classification properties etc. of reflexes.
5. Sensory and motor tracts and effects of sections transaction & hemisection of the spinal cord.
6. Spinal, decerebrate and decorticate preparations and Regulations of posture and equilibrium.
7. Reticular formation.
8. Cerebellum and basal ganglia.
9. Sensory and motor cortex.
10. Physiology of voluntary movements.
11. Higher functions of cortex: sleep and wakefulness, EEG, memory, speech, learning.
12. Physiology of thalamus and hypothalamus and limbic system.
13. Physiology of autonomic nervous system, peripheral and central mechanism.

Special Senses

1. Physiology of taste and smell sensation.
2. Ear-General anatomy, conduction of sound waves through external, middle and internal ear.
3. Peripheral and central mechanism of hearing and auditory pathways.
4. General anatomy refractory media and protective mechanisms in Eye.
5. Formation, circulation and functions of aqueous humor.
6. Physiology of optics, Formation of image, accommodation errors of refraction, acuity of vision.

7. Physiology of retina photographer functions, dark and light adoption, photochemistry of vision, colour vision.
8. Visual pathway and effects of various levels.

Nutrition

1. Balanced diet and special dietary requirements during pregnancy, lactation and grown.

BIOCHEMISTRY

Biochemical principles and elementary constituents of protoplasm

Chemistry of proteins.

Chemistry of carbohydrates.

Chemistry of lipids.

Enzymes and vitamins.

Metabolism of proteins, fats carbohydrates, minerals. Biophysical process and their principles in relation to human body.

LIST OF PRACTICALS IN PHYSIOLOGY

1. Method of Collection of Blood.
2. Haemoglobinometry.
3. The Microscope-Construction; Use & Care.
4. Total White Blood Cell Count.
5. Differential WBC count.
6. Packed Cell Volume.
7. Packed Cell Volume.
8. Calculation of Blood Indices.
9. E.S.R.
10. Bleeding Time.
11. Clotting Time.
12. Blood Groups.
13. History taking and General Examination.
14. Examination of Alimentary System.
15. Examination of the Cardiovascular system.
16. Pulse.

17. Determination of Arterial Blood Pressure in Humans and effect of posture, exercise and Cold stress.
18. Clinical Examination of the Respiratory system, E.C.G.
19. Stethography.
20. Spirometry.
21. Examination of Higher Functions.
22. Cranial Nerves.
23. Motor Functions.
24. Reflexes.
25. Sensory system.
26. Recording of Body Temperature.

LIST OF DEMONSTRATION

1. varieties of Stimuli: Faradic or Induced and Galvanic or Constant Current: Apparatus Used in the Laboratory.
2. Excitability of Muscle.
3. Effect of Graded Stimuli.
4. Simple Muscle Twitch, Effect of temperature on the muscle.
5. Effect of two successive stimuli on the Skeletal Muscle of Frog.
6. Genesis of Tetanus.
7. Fatigue.
8. Effects of Fee and after Loading on Frog's Gastrocnemius Muscle.
9. Heart Block.
10. Properties of Cardiac Muscle.
11. Perfusion of Mammalian Heart and effect of various ions on it.
12. Effect of stimulation of Vagosympathetic Trunk and Crescent on Frog's Heart.
13. Effect of Acetylcholine on Heart.
14. Effect of Adrenaline on Frog's Heart.
15. Action of Nicotine on Frog's Heart.
16. Photokinetic stimulation, Ophthalmoscopy and Tonometry.

17. Recording Mammalian blood pressure and respiration and study of factors influencing them.
18. Specific Gravity of Blood.
19. Gastric Analysis.

PRACTICAL IN BIOCHEMISTRY

1. Introduction to Biochemistry and familiarization with laboratory Instruments.
2. Study of Disaccharides - Lactose, Maltose & Sucrose.
3. Study of Polysaccharides - Starch, Dextrin & Glycogen.
4. Introduction of Proteins.
5. Normal Urine report (Inorganic and Organic Constituents)
6. Unknown solutions - Study.
7. Quantitative & Estimation of Glucose in Urine.

Paper - I

Elements of Biophysics, Biochemistry, Blood and lymph, Cardiovascular system, Reticuloendothelial system, spleen, Respiratory system Excretory System, Skin, regulation of body temperature, sense organs.

Paper - II

Endocrine organs, nervous system, nerve muscles physiology, Digestive system and metabolism, Biochemistry of protein, carbohydrate and lipid, enzymes, Nutrition.

Practical Examination

1. Examination of Physical and chemical constituents of normal and abnormal urine (qualitative).
2. Enumeration of total cell count of Blood (R.B.C. or W.B.C.) or differential count of peripheral blood or estimation of percentage of HB.

3. Viva-voce on instruments and apparatus.
4. Biochemistry examination of proteins/carbohydrate/lipoid.
5. Experimental physiology.
6. Laboratory Note-Book.
7. Viva-voce on experiments.

Homoeopathic Pharmacy

Theory

Instruction in Homoeopathic Pharmacy should be so planned as to present general working knowledge of a industry and dispensing various preparation. Major emphasis should be laid on evolution and relationship of Homoeopathic Pharmacy to Organon and Materia Medica, the concept of drug Proving and Dynamisation.

The curriculum of Homoeopathic Pharmacy should be divided under following headings:-

Part I:- Orientation to subject - elementary history of Botany, Zoology and Chemistry with rules of their nomenclature and their respective terminology's.

1. (A) Explanation of terms like a common names, synonyms, Hyponyms, typonyms, invalid names.
(B) Advantages and disadvantages of Commercial names and Botanical names,
(C) Anomalies in the nomenclature of Homoeopathic Drugs.
2. Schools of Medicine: their discovery, principles pharmacology and Materia Medica, scope and limitations.
3. History of the art and science of Pharmaceutics.
4. Literature on Homoeopathic Pharmaceutics.
5. Sources of Homoeopathic Pharmacy.
6. Homoeopathic Pharmacy: its speciality and originality
7. Importance of the knowledge of Pharmacy.

8. Sources of knowledge about curative powers of the technique of Drug proving in Homoeopathy.
9. Aspects of Pharmacy.
10. Relation of Pharmaceutics without sciences.
11. Inter-relationship of different schools of Pharmacy with emphasis on relationship of Allopathic and Homoeopathic Pharmacy.
12. Properties of Drugs.
13. (a) Routes of Administration of drugs in general.
(b) Routes of Administration of Homoeopathic remedies.
 - a. Action of Drugs.
 - b. Uses of Drugs.

Part II

Explanation and definitions of:-

- (a) Foods, Poisons, cosmetics.
- (b) Drug substance, Drug, Medicine, Remedy,
- (c) Pharmacy, Pharmacology and Pharmacopoeia, Pharmacodynamics and other related terms used in relation to the subject. Homoeopathic Pharmacopoeia,

Homoeopathic Pharmacy in relation to:-

- (a) Organon on Medicine Aphorism 264 to 285.
- (b) Materia Medica.
- (c) National Economy.

Pharmacy and Pharmacopoeia; its Sources and relation with other sciences. Classification of Homoeopathic Medicines according to their.

- (a) Botanical and
- (b) Zoological natural orders.

English name of each medicine.

Common names in Indian Languages like Assamese, Bengali, Hindi, Gujarati, Kannad, Konkani, Maithili, Malayalam, Marathi, Sanskrit, Tamil, Telgu, Urdu, Oriya etc. with emphasis on the students learning the common names of their region.

Posology

Homoeopathic Posology: Its logic, advantages and dis-advantages.

Potentiation: Its logic, scientificity and evolution and scales.

Vehicles

Scales for preparation of drugs.

Pharmacological Action of Polychrest medicines (50 medicine list attached)

Abbreviations used in prescription writing.

Legal part: legislation in respect of Homoeopathic Pharmacy, Drugs and Cosmetic Act, Poison Act, Pharmacy Act.

PRACTICAL

- (1) Identification, and uses of Homoeopathic Pharmaceutical instruments and appliances and their cleaning.
- (2) Identification of important Homoeopathic Drugs vide list attached).
 - (i) Macroscopic study of 30 drugs substances and listed in Appendix I,
 - (ii) Collection of 30 drugs substances for herbarium.
 - (iii) Microscopic of two triturations of up to 3x potency.
- (3) Estimation of moisture content of one drug substance with water bath.
- (4) Purity test of ethyl alcohol, distilled water, sugar of milk, including determination of specific gravity of distilled water and alcohol.
- (5) Estimation of size of globule, its medication of milk sugar and distilled water-making of doses.
- (6) Preparation and dispensing and dilute alcohol solutions and dilutions.
- (7) Preparations of mother tinctures of 3 polychrests.
- (8) Preparations of trituration of 3 crude drugs upto 3X.
- (9) Preparation of mother tinctures and solutions other than 10 percent Drug strength.

- (10) Potentisation of 3 mother tinctures upto 6 decimal scale and 3 centesimal scale.
- (11) Trituration of 3 drugs upto 6x and their conversion into liquid potencies.
- (12) Preparation of external applications - one of each.
- (13) Writing of prescriptions and dispensing of the same.
- (14) Laboratory methods:-
 - (a) Sublimation
 - (b) Distillation
 - (c) Decantation
 - (d) Filtration
 - (e) Crystallization
 - (e) Percolation
- (15) Visit to a Homoeopathic Laboratory to study the manufacture of drugs on a large scale.

APPENDIX:**PHARMACOLOGICAL ACTION**

List of Drugs included the Syllabus of Pharmacy for study of Pharmacological action (30)

1. Aconite nap
2. Adonis vernalis
3. Allium cepa
4. Argentum nit
5. Arsenic alb
6. Belladonna
7. Cactus G
8. Cantharis
9. Cannabis ind
10. Cannabis sat
11. Cinchonna of
12. Coffea crud

13. Crataegus
14. Crotalus hor
15. Gelsemium
16. Glonoine
17. Hydrastis can
18. Hyoscynamus n
19. Kali bich
20. Lachesis
21. Lithium carb
22. Mercurius cor
23. Naja t
24. Nitric acid
25. Nux vomica
26. Passiflora incarnata
27. Stannum met
28. Stramonium
29. Symphytum
30. Tabacum

LIST OF DRUGS FOR IDENTIFICATION

VEGETABLE KINGDOM

1. Aegle folia
2. Anacardium orientale
3. Andrographis penniculata
4. Calendula offic
5. Cassia sophera
6. Cinchonna off
7. Cocculus indicus
8. Coffea cruda
9. Colocynth citrallus

10. Crocus sativa
11. Croton tig
12. Cynodon
13. Ficus religiosa
14. Holerrhena antidysentrica
15. Hydrocotyle
16. Justisia adhatoda
17. Lobelia inflata
18. Nux vomica
19. Ocimum
20. Opium
21. Rauwolfia serpentine
22. Rheum
23. Saraca indica
24. Senna (cassia acutifolia)
25. Stramonium met
26. Vinca minor

II. CHEMICALS

1. Acetic acid
2. Alumina
3. Argentum metallicum
4. Argentum nitricum
5. Arsenic alb
6. Calcare carb
7. Carbo veg (charcoal)
8. Graphitis
9. Magnesium
10. Mercury (the metal)
11. Natrum mur
12. Sulphur

IIi. ANIMAL KINGDOM

1. Apis malefic
2. Blatta orientalis
3. Formica ruba
4. Sepia
5. Tarentula cubensis

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

1. Homoeopathic Materia Medica is differently constructed as compared to other Materia Medica. Homoeopathy considered that study of the action of drugs on individual parts or systems of the body or on animal or their isolated organs is only a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to a full appreciation of the action of the medicinal agent; the drug agent as a whole is lost sight of.
2. Essential and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy persons and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psychosomatic whole of a person and it is just such a person as a whole to whom the knowledge of drug action is to be applied.
3. The Homoeopathic Materia Medica consists of a schematic arrangement of symptoms produced by each drug, incorporating no theories for explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a Homoeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.
4. Polychrests and the most commonly indicated drugs for every day ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with explaining all comparisons and relationship. Students should be conversant with their sphere or action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasizing only their most salient features and symptoms. Rare drugs should be dealt with later.

5. Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand Materia Medica in relation to its application in the treatment of the sick.

6. While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the Materia Medica so that indications for drugs in a clinical condition can directly flow out from the proving of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast Materia Medica in any sickness and not limit himself to memorize a few drugs for a particular disease. This Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examination are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of diseases and it contradictory to the teaching of Organon.

Application of Materia Medica should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative Materia Medica and therapeutics as well as tutorials should be as far as possible be integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

7. For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstrations to the students. Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected.

8. A. Introductory lectures: Teaching of the Homoeopathic Materia Medica should include:-

- (a) Nature and scope of Homoeopathic Materia Medica.
 - (b) Sources of Homoeopathic Materia Medica.
 - (c) Different ways of studying the Materia Medica.
- B. The drugs are to be taught under the following heads:-
1. Common name, natural, order, habitat, part used, preparation.
 2. Sources of drug proving.
 3. Symptomatology of the drug emphasizing the characteristic symptoms and modalities.
 4. Comparative study of drugs.
 5. Complimentary, inimical, antidotal and concomitant remedies.
 6. Therapeutic applications (applied Materia Medica).
- C. A study of 12 tissue remedies according to Schuster's biochemic system of medicine.

APPENDIX-I

1. Acontite nap
2. Aethusa cyan
3. Allium cepa
4. Aloe socotrina
5. Antimonium crud
6. Antimonium tart
7. Apis malefic
8. Argentum nit
9. Arnica Montana
10. Bryonia alb
11. Chamomilla
12. Cina
13. Colchium autumn

14. Colocynthis
15. Dulcamera
16. Euphrasia
17. Ipecac
18. Ledum pal
19. Nux vomica
20. Rhus tox
21. Calcareo flour
22. Calcareo phos
23. Calcareo sulph
24. Ferrum phos
25. Silicea

APPENDIX-II

Syllabus of Materia Medica for the II B.H.M.S. Examination.

In addition to the list of drugs for the first B.H.M.S. Examination (Appendix I), the following additional drugs are included in the Syllabus of Materia Medica for the II B.H.M.S. Examination.

EXAMINATION

1. Acetic acid
2. Actea recemosa
3. Agaricus muscarius
4. Agnus castus
5. Alumina
6. Ambra grisea
7. Ammonium carb

8. Ammonium mur
9. Anacardium ori
10. Apocynum can
11. Arsenic album
12. Arsenic iod
13. Aurum met
14. Arum triph
15. Baptisia tinctor
16. Berberis vulg.
17. Bismuth
18. Borax
19. Bromium
20. Bovista
21. Cactus g
22. Calcarea ars
23. Calendula
24. Camphora
25. Cantharis
26. Chelidonium maj
27. Conium mac
28. Digitalis per
29. Drosera
30. Ferrum met
31. Gelsemium
32. Helliborus
33. Hepar sulph
34. Ignatia
35. Kali brom
36. Kreosatum
37. Natrum carb

38. Nux moschata
39. Opium
40. Petroleum
41. Phosphorus
42. Phytolocca
43. Platina met
44. Sepia
45. Spongia tost
46. Veratrum alb
47. Kali mur
48. Kali phos
49. Magnesia Ph
50. Natrum sulph.

APPENDIX III

In addition to the drugs mentioned in Appendix I & II, the following additional drugs are included in the syllabus of Materia Medica for the 3rd BHMS Examinations-

1. Actea spicata
2. Adonis vernalis
3. Antimonium ars
4. Argentum metallicum
5. Asafoetida
6. Asterins rubens
7. Baryta carb
8. Belladonna
9. Benzoic acid
10. Bufo rana
11. Caladium
12. Calcarea carb
13. Cannabis indica

14. *Cannabis sativa*
15. *Carbo vegetabilis*
16. *Causticum*
17. *Crotalus hor*
18. *Croton tig*
19. *Cuprum met*
20. *Cyclamen*
21. *Dioscorea villosa*
22. *Equisetum*
23. *Graphitis*
24. *Hyoscymus n*
25. *Hypericum*
26. *Iodum*
27. *Kali carb*
28. *Kali sulph*
29. *Kalmia latfolia*
30. *Lachesis*
31. *Lycopodium*
32. *Mercurius sol*
33. *Mercurius cor*
34. *Mercurius sulph*
35. *Moschus*
36. *Murex*
37. *Muriatic acid*
38. *Naja t*
39. *Natrum mur*
40. *Natrum phos*
41. *Nitic acid*
42. *Onosmodium*
43. *Oxalic acid*

44. Petroleum
45. Phosphoric acid
46. Physostigma
47. Picric acid
48. Plumbum met
49. Podophyllum
50. Pulsatilla
51. Secale cor
52. Selenium
53. Staphisagria
54. Stramonium
55. Sticta p
56. Sulphur
57. Sulphuric acid
58. Symphytum
59. Syphylinum
60. Tabacum
61. Taraxacum
62. Tarentula c
63. Teribinthina
64. Thalapsi bursa p
65. Theridion
66. Thuja
67. Thyroidinum
68. Vaccinum
69. Zincum met.

APPENDIX IV

List of drugs included in the Syllabus of IV B.H.M.S. examination:-

1. Abies can
2. Abies nig
3. Abroma Augusta
4. Abrotanum
5. Acalypha indica
6. Anthracinum
7. Bacillinum
8. Baryta mur
9. Bellis per
10. Calotropis indica
11. Capsicum
12. Carbo animalis
13. Carbolic acid
14. Carrica papaya
15. Cassia saphora
16. Caulophyllum
17. Cedron
18. Cicuta virosa
19. Clematis
20. Cocculus indica
21. Coffea cruda
22. Collinsonia
23. Condurango
24. Corallium
25. Crataegus
26. Crocus sativa
27. Eupatorium per
28. Ficus religiosa

29. Flouric acid
30. Glonoine
31. Hellonius
32. Hydrastis can
33. Hydrocotyle as
34. Jonosia asoka
35. Justicia adhatoda
36. Lac can
37. Lac def
38. Liliium tig
39. Lithium carb
40. Lobelia inf
41. Lyssin
42. Magnesia carb
43. Magnesia mur
44. Medorrhinum
45. Melilotus a
46. Mephitis
47. Mercurius cynatus
48. Mercurius dull
49. mezerium
50. Millifolium
51. Occimum sanct
52. Psorinum
53. Pyrogenum
54. Radium bromide
55. Rananculus bulb
56. Raphanus
57. Rathania
58. Rauwolfia serpentine

59. Rheum
60. Rhododendron
61. Rumex
62. Ruta G
63. Sabadilla
64. Sabal serulatta
65. Sabina
66. Sambucus
67. Sangunaria can
68. Sanicula
69. Sarasaparilla
70. Spigelia
71. Squilla
72. Stannum met
73. Syzygium jambolanum
74. Trillium pendulum
75. Urtica urens
76. Vaccinum
77. Variolinum
78. Veratrum viride
79. Vibrinum opulus
80. Vinca minor
81. Vipera

II B.H.M.S.

GENERAL PATHOLOGY AND MICROBIOLOGY (INCLUDING PARASITOLOGY,

BACTERIOLOGY AND VIROLOGY)

Study of Pathology must be in relation with Concept of Miasm as evolved by Dr. Hahnemann and further developed by Kent, Boger, Robert and Allen.

Concept of Miasm in view of Pathology. Reference to Koch's Postulate.

Importance of susceptibility and immunity thereby homoeopathic concept of Disease and Cure.

- Characteristic expression of each miasm.
- Classification of symptoms/disease according to Pathology.
- Correlation of Miasm and Pathology for e.g. Psora - inflammation etc.
- Natural evolution in Pathology.
Resolution - Inflammatory exudative
Degeneration. Suppurative
- Interpretation of Pathological report of all diseases and correlate the utility of it in Homoeopathic system of Medicine.

Similarly all the topics in General Pathology and Systemic Pathology must be co-related, at each juncture, so that the importance of Pathology is understood by a Under-Graduate student in Homoeopathy.

Topics of General Pathology in Relation with Miasms

- Inflammation Repair Healing Injury
- Immunity
- Degeneration
- Neoplasm
- Thrombosis
- Embolism
- Oedema

Disturbances of Pigment Metabolism

- Calcium Metabolism
- Uric Acid Metabolism
- Amino Acid Metabolism
- Carbohydrate Metabolism
- Fat Metabolism

- Hypertrophy Healing
- Hyperplasia
- Anaplasia
- Metaplasia
- Ischaemia
- Haemorrhage
- Shock
- Atrophy
- Relaxation
- Hyperemia
- Infection
- Pyrexia
- Necrosis
- Gangrene
- Infarction

SYSTEMIC PATHOLOGY

In each system the important and common disease should be done. By keeping in view its evolution, mode of presentation, progress and outcome of the disease. For e.g.

In Alimentary System

- | | |
|------------------------------|--|
| - Tongue | - Ulcer, Tumour |
| - Oral Cavity | - Thrush, Tumour |
| - Oesophagus | - Inflammatory Disease, Tumour |
| - Stomach | - Inflammatory Disease |
| | - Auto Immune Disease |
| | - Tumour |
| - Duodenum | - Inflammatory Disease, Acid Pepsin Digestion. |
| - Intenstine Small and Large | - Ulcers, Infection, |
| | - Tumour, Malabsorption. |
| - Appendix | - Inflammatory Disease |

- | | |
|---------------------------------|------------------------------------|
| - Liver | - Inflammatory Disease |
| | Tumours |
| | Cirrhosis |
| | Jaundice |
| - Gall Bladder | - Inflammatory Disease |
| | Tumour |
| - Pancreas | - Inflammatory Disease |
| | Tumour |
| - Cardio Vascular Disease | - Common Disorder |
| - Central Nervous Disease | - Common Disorders |
| - Respiratory Disorders | - Common Disease |
| - Kidneys | - Common Disorders |
| | Tumours |
| | Urodynamics |
| - Genitals Male and Female | - Common Disorder |
| | Tumours |
| - Skeletal and Muscular Disease | - Common Disorders |
| - Skin | - Common Disorders, Melanoma, etc. |
| Clinical Pathology | - Complete Haematology. |

Practical

Clinical and Chemical Pathology:-

Estimation of haemoglobin (by acidimeter Count of R.B.Cs. and W.B.Cs. staining of thin and thick films, differential counts and parasites.

Erythrocyte sedimentation rate, urine, physical, chemical microscopical, quantity of albumin and sugar, faeces-physical chemical (occult blood) and microscopical for ova and protozoa.

Methods of sterilization, preparation of a media, use of microscope. Gram and acid fast, stains. Motility preparation. Gram positive and negative cocci and bacilli. Special stains for corynebacterium-gram and acid fast stains of pus and sputum.

Hæmkeys plate-sugar reactions-gram stain and motility of gram negative intestine bacteria, Widal and demonstration of Pasteur and of spirochetes by dark field illumination Fountain's strain-Lovaditt's stain. Demonstration of Methods of nacrobiösis.

Histopathology

Common teaching slide from each systems. Demonstration of gross Pathological specimen. Practical demonstration of Histopathological techniques i.e. Fixation, Embedding.

Sectioning staining by common dyes and strain.

Frozen section. Its importance.

Electron Microscopy

Phase contrast microscopy.

1. BACTERIOLOGY:

Morphology, biology, sterilization, chemotherapy, principles of artificial media, infection, defence reaction, immunity, hypersensitiveness, skin tests, systematic study of bacteria habits, importance morphological, cultural biochemical, serological and toxic behaviour of the common pathogenic and non-pathogenic species. Pathologic changes produced by diseases bacteria and their laboratory diagnosis. Staphylococci, streptococci, dispiococci, Neisseria, Mycobacterium tuberculosis (Types) mycobacterium leprae, names and differentiation of spirochetes from pathogenic mycobacterium corynobacterium diphtheria. Aerobic spore bearing bacteria-bacillus anthreus, anaerobes, general and special features of the pathogens. Names of some important non-pathogens. Gram negative, intestinal bacteria classification, identification of the pathogen salmonella, vibrio, bacterium, pasterurella, general idea about haemophiles, pseudomonas, brucella, ricktsia, proteus, spirochaetes-general idea details of treponema palladium and leptospiraictero haemorrhagica.

Viruses-general characters, classification of disease, e.g. varecella, Rabies, bacteriophage.

Koch's postulates

2. PARASITOLOGY:

Protozoa-classification names of important rhizopoda, ent. Histolytica, morphology, pathogenesis and pathogenecity, diagnosis, difference from ent. Coli, sporozen species of plasmodia life history and pathogenesis differentiation of species.

Mastigophora-general broad morphological features classification, pathogenesis, vectors, pathology of Kala-Azar, important features source disease due to balantidium coli.

Helimnths-definition of certain terms, simple classification, differences between nematodes cestodoes and treamatodes Broad differentiating morphological features and broad life history and pathogenesis of important species, Cestodes and Nematodes-infecting liver, lungs, intestines and blood-general differences between schisosomes and other trematodes.

3. VIROLOGY:

Diagnosis' of Infectious Diseases

Host Parasite Relationship.

Disinfectants. Mode of action.

Practical aspects of Immunology i.e. Application in diagnosis, Passive Immunization, Immunopathies in brief including AIDS

Bacteria Genetics (briefly)

KIDNEY BLADDER URETER URETHRA

- Glomerulo Nephritis
- Pyolonephritis
- Tubercular Pyelonephritis
- Nephrotic Syndrom
- Metabolic Diseases and Kidney
- Systemic diseases and Kidney
- Acute and Chronic Renal Failure
- Kidney Tumours

- Calculi
- Cystitis
- Ureteric Stricture
- Urethritis, Specific and Non Specific
- Renal Function Test in Relation to Homoeopathy

CARDIO VASCULAR DISEASES

- Ischaemic Heart Disease
- Rheumatic heart Disease
- Valvular Heart Disease
- Hypertension
- Cardiomyopathy
- Infective Endocarditis
- Congestive Cardiac Failure
- Diseases of Pericardium
- Cardiogenic Shock.

MALE AND FEMALE GENITAL DISEASES

- Testicular Tumors
- Acute and Chronic Prostatitis
- Prostatic Tumours
- Sterility
- CA Penis
- Ovarian Tumours
- Fibroids
- CA Cervix
- Infertility
- Endometriosis and Endometrium
- Breast Inflammation and Tumours

RESPIRATORY DISEASES

- Pulmonary function test
- Bronchial Asthma
- Bronchitis
- Bronchiectasis

- Emphysema
- Empyema
- Cor. Pulmonari
- Pneumonia
- Bronchogenic Carcinoma
- Interstitial Lung Diseases

GASTRO INTESTINAL DISEASES

- Tongue, Stomatitis, Ulcers, Tumours
- Oesophagus, Reflex Oesophagitis
- Tumour of Oesophagus
- Stomach, Gastritis, CA Stomach, Gastric Ulcers
- Liver Cirrhosis, Hepatitis, CA Liver
- Liver abscess.
- Liver Function Test
- Gall Stones
- Pancreas Acute and Chronic Pancreatitis, CA pancreas
- Intestines Ulcers, Duodenal colics, CA Colon and Rectum
- Tumours
- Mal absorption Syndrome
- Infections
- Appendix, Acute Appendicitis.

SKIN DISEASES

- Infection and Tumours

BONES DISEASES

- Sarcoma, Osteoma, Paget's Diseases
- Osteomyelitis, Tubercular Osteomyelitis
- Rheumatoid Arthritis, Osteo Arthritis

GENERAL NERVOUS SYSTEM

- Meningitis Pyogenic/Tubercular

CEREBRO SPINAL FLUIDS

- Picture of various Diseases

ENDOCRINAL SYSTEM

- Thyroid, Diabetes Mellitus

Ist Paper - General Systemic Pathology and Miasms

IInd Paper - Bacteriology, Parasitology and clinical Pathology

(Each divided into Two Sections)

Pathology Practical

Experimental/Microbiological Spots, Readings and Interpretation of Pathological Reports.

IIND BHMS

FORENSIC MEDICINE AND TOXICOLOGY

The subject is of practical importance to the students of homoeopathic medicine as homoeopathic physicians are be employed by Government in areas where they may have to handle medico-legal-cases, perform autopsies, apart from giving evidence in such cases. The training in forensic medicine at present conducted is inadequate to meet these needs.

The course consist of a series of lectures and demonstrations including

1. **Legal Procedure:**

Definition of medical Jurisprudence. Courts, and their jurisdiction.

2. **Medical ethics:**

Law relating to medical registration and Medical relation between practitioners and the State. The Homoeopathy Central Council Act, 1973 and the Code of Ethics under it, the practitioners and the patients, Malpractice's covering professional secrecy, the practitioner and the various legislation's (Acts) Provincial and Union such as Workman's compensation Act, Public Health Act, Injuries Act, Child Marriage Registration Act, Borstal Schools Act, Medical Termination of Pregnancy Act. Lunacy Act, India Evidence Act etc.

3. **Forensic Medicine:**

Examination and identification of person living and dead: parts, bones, stains, etc. health, Medicolegal: putrefaction, mummification's, saponification, forms of death, causes, agencies,

onset etc. Assaults, wounds, injuries and death by violence. Asphyxial death, blood examination, blood stains, seminal stains: burns, scalds, lightning stroke etc. Starvation, pregnancy, delivery, abortion, Infanticide, sexual Crimes, Insanity in relation to the State life and accident insurance.

Toxicology

A separate course of lectures dealing poisoning in general, the symptoms and treatments of various poisons, post-mortem appearance and test should be given, study of the following poisons:-

Mineral Acid, corrosive, sublimate, arsenic and its compound alcohol, opium and its alkaloids, carbolic acid, carbon monoxide, carbon dioxide. Kerosene oil, cannabis indica, cocaine, Belladonna, strychnine and nux vomica, aconite, oleander, snake poisoning, prussic acid, lead.

4. Medico legal post-mortem:

Recording post mortem appearance, forwarding materials to chemical examiner: Interpretation of laboratory and chemical examiner's findings. Students who are attending a course of lecture in forensic medicine should avail themselves of all possible opportunities of attending medico-legal post-mortems conducted by the professors of forensic medicine. It is expected that each student should attend at least 10 post-mortems.

5. Demonstration:

- (1) Weapons,
- (2) Organic & Inorganic poisons
- (3) Poisonous plants
- (4) Charts, diagram, models, x-ray films etc. of medico-legal interest.

PRACTICE OF MEDICINE

Homoeopathy has a distinct approach to the concept of Disease. It recognizes an ailing individual by studying him as a whole rather than in terms of sick parts. It emphasizes the study of the Man from his State of Health, till it travels to state of presenting illness, incorporating all major events and contributing factors in the process.

The individualization study as above needs following background so that the striking aspects which are characteristic to the individual become clear, in contrast to the common picture of the respective Health disturbances:

1. Primary correlation of the Health disturbances with basics of Anatomy - Physiology-Biochemistry.
2. Knowledge of common evolution of study about its causation, manifestations, maintenance and prognosis details.
3. Knowledge about factors which will worsen and improve the disturbance, including various medicines and non-medical measures and respective possible response elucidation by application of measures.

The study obviously emphasizes more on:

- A. Comprehension of Applied part.
- B. Sound clinical training at bedside to be able to apply the learning accurately.

These can lead towards developing a Homoeopathic Physician who will not be deficient at the practical Science of Medicine. He should be trained in a manner in which he is not locked up in Rare syndromes as Theoretical Exercise. Exercises but as a sound clinician with adequate discrimination, sharp observation and conceptual clarity. He will then be able to mould an effective appreciation of the patients picture utilizing his knowledge of Medicine.

To evolve the above, following distribution of Theory and Practical Training is suggested so that there is gradual but clear and firm comprehension.

Course of Study - 3 years
in II (Second) BHMS
i.e. in III (Third) BHMS and
in IV (Fourth) BHMS

Examination to be conducted at the end of the IV (Fourth) BHMS. Also in the side of the topics are suggested co-ordinations (with other department) which will improve the caliber of imparting training in Medicine. The distribution is made keeping in mind about other subjects in II, III, and IV BHMS and the respective state of learning of student.

IIND BHMS

1. Clinical Methods of Examination of patients as whole:
2. Respiratory diseases - Respective portion in surgery.
3. Alimentary Tract and Pancreas Disease - Respective portion in surgery.

IIIRD BHMS

1. Genetic Factors - Chronic Diseases and Miasms Dept. of Organon & Philosophy.
2. Nutritional diseases - Nutrition, Hygiene in Dept. in Community Medicine.
3. Immunological Factors in Diseases - Epidemiology in Dept. of Community medicine.
4. Climatic Factors in Diseases
5. Metabolic Disease
6. Endocrinal Diseases - Menstrual Disorder in Dept. of Gynaecology.

The above all need follow up with respective Therapeutics Topics also.

IVTH BHMS

1. Liver and Biliary Tract Diseases
2. Hematological Diseases.
3. Cardiovascular system Diseases.
4. Kidneys & Urinary Tracts - Diseases.
5. Water and Electrolytes balance - Diseases
6. Connective Tissue Disorders.
Bones and Joints Disorders
7. Skin Diseases
8. CNS & peripheral nervous system - Mental Diseases
9. Acute Emergencies including poisonings.
10. Paediatrics.

The above in these terms will require a follow up of strong and emphatic training on Homoeopathic Therapeutics for the same.

It will be conducted in IV (fourth) BHMS at the end of 3 years of course of study in Theoretical and Practical aspects of Medicine.

Eligibility for examination shall include submission of 10 complete case histories, 5 each being prepared in III and IV BHMS.

PRACTICAL & CLINICAL EXAMINATION

The examination procedure will include one case, to be prepared, and presented to the examiner. The examiners will put stress on

1. Comprehensive case Taking.
2. Bedside procedure Investigations for diagnosis.
3. Principles of management.

GENERAL GUIDANCE: THERAPEUTICS

Homoeopathy has a distinct approach to disease. Concept of individualization and concept of chronic miasm makes it distinct.

It recognizes an ailing individual by studying him as a whole rather than in terms of sick parts. It emphasizes that study of man from the state of Health i.e. DISPOSITION DIATHESIS DISEASE, taking into account all predisposing and precipitating factors i.e. FUNDAMENTAL CAUSE, MAINTAINING CAUSE & EXCITING CAUSE.

Hahnemann's theory of chronic miasm provides us an evolutionary understanding of the chronic disease: PSORA -SYCOSIS-SYPHILIS & acute manifestations of Chronic Diseases, Evolution of the natural disease shall be comprehended in the light of theory or chronic

miasm. How our current knowledge of Pathology and clinical medicine assist in defining this must be demonstrated.

Study of therapeutics does not mean simply list of specifics. For the clinical condition, but teaching of applied Materia Medica. Here we demonstrate how various drugs would come up in psoric, sycotic, tubercular or syphilitic state of the clinical conditions. Thus emphasis would be in correlating pace of evolution of disease, peculiar, respectively and cluster of characteristics.

Thus teaching of therapeutics of Hypertension would demand delineation of various phases of hypertension taking into account what is happening to the STRUCTURE and what kind of forms are thrown off. Psoric phase would be characterized by LABILE hypertension which shoots up under stress, especially with rise in systolic and manifesting flushes and emotional disturbances.

This would draw our attention to drugs like GELSEMIUM, GLONINE, FERRUM MET etc.. This is the functional phase. Tubercular hypertension would be characterized by fairly high systolic and diastolic B.P. oscillating wildly at higher range, manifesting bleeding like epistaxis etc., with erratic mental state. This will draw attention to PHOSPHRUS, LACHESIS etc..

Syphilitic dimension would be characterized by immense destructive damage at target organs like heart, kidney and retina.

Thus teachings of THERAPETUCIS would essentially demand an effective correlation of:

- i) Knowledge of clinical/Medicine/Surgery.
- ii) Appreciation of Natural disease its evolution in the light of Theory of chronic miasm. Thus correlation with Organon Philosophy.
- iii) Applied Materia Medica and Repertory:

Comprehending drug picture from the evolutionary angle - Boger's approach towards Materia Medica and its application for the study of various clinical patterns of Natural disease.

Correlation with MATERIA MEDICA and with REPERTORY.

PAPER I: As per syllabus of II & III BHMS.

PAPER II: As per the syllabus of IV BHMS.

PAPER III: Homoeopathic Therapeutics.

SURGERY

Homoeopathy as a Science need clear application on part of the physician to decide about the best course of actions required to restore the sick, to health.

Knowledge about surgical Disorders is required to be grasped will so that the Homoeopathic Physician is able to:-

1. Diagnose common surgical cases.
2. Institute homoeopathic medical treatment wherever possible.
3. Organise Pre and Post-operative Homoeopathic medicinal care as total/partial responsibility.

And

4. Organize a complete Homoeopathic care for restoring the susceptibility of the patient of the patient to normally.

The conceptual clarity and Database needed for above is possible only by an effective co-ordination of the care of the patients.

The study shall include training on:

1. Knowledge of causation, manifestation, maintenance and prognosis of Health Disorders related to Surgery with stress on miasmatic evolution.
2. Bedside clinical procedures.

3. Correlation of applied aspects, with factors which can modify the course of illness, including medicinal and non-medicinal measures.

The above can assist a Homoeopathic Physician who will be a Rational Physician not one locked up in whirlpools of rare conditions but one who can apply all the basics for an ailing individual.

It will also facilitate him for Individualization of the patient, necessary for final Homoeopathic management.

The study will start in II (Second) BHMS and complete in III (Third) BHMS.

Examination will be conducted in III (Third) BHMS.

Following is a plan to achieve the above, It takes into account about the II (Second) and III (Third) year BHMS syllabus and respective stage of development.

Some points are made about co-ordinating with other departments (for a better training in Surgery, ultimately).

That the SURGERY as a subject will include:-

1. Principles of Surgery
2. Fundamentals of Examination of a patient with surgical problems.
3. Use of common Instruments for Examination of a patient, asepsis, antisepsis, Dressings, plaster, operative surgery etc.
4. Practical Instruments, Training in Minor surgical Methods.
5. Physiotherapy measures.
6. Include also applied study in Radiology, etc. Diagnostics.

7. Includes Orthopaedics, Ophthalmology, Dental Diseases, Otorhinolaryngiology and Neonatal Surgery.

IV BHMS

1. What are surgical cases? Orientation towards case Taking and Examination of Surgical patients. (Details to be done as part of Practical Training).
2. Applied anatomy and physiology - its importance demonstration with good examples.
3. Basics of general surgical procedures.
4. Inflammation, Infections (Specific and Non-specific) Suppuration, Bacteriology, Immunity.
5. Injuries of various kinds - wound healing and management including Ulcers, Sinuses, Gangrene, etc.
6. Hemorrhage, Shock, their management.
7. Resuscitation and support in emergencies.
8. Accidents and Warfare injuries management.
9. Burns Management.
10. Fractures and Dislocation: general principles.
11. Diseases of the bones: general principles including growing skeleton.
12. Diseases of the joints: general principles including Rheumatology.
13. Diseases of the muscles, tendons, Fascia, etc.: General principle.
14. Diseases of the Arteries: general principles.
15. Diseases of the veins: general principles.
16. Diseases of the Lymphatic system: general principles.
17. Diseases of the nerves: general principles.
18. Immunology: general Organ rejection, Transplants, etc.
19. Oncology: Tumors, Cysts, etc. general principles of management.
20. Congenital disorders: orientation and correction procedures.
21. Lectures cum Demonstration on bandages, surgical appliances, etc.
22. Lecture Demonstrations on x-rays.

25. Surgical Diseases of the Infancy and Childhood.

The above has to be followed up with relevant systemic Surgery Topics so as to cover:

1. All common clinical conditions of various parts.
2. Their evolution, examination methods and diagnosis.
3. Their investigations and prognosis.
4. Their management especially principles.
5. Relevant minor surgical procedures.
6. Preventive aspects.

ORTHOPAEDICS: Study as above about Injuries, inflammation, ulcer, sinus, tumors, cysts, etc. (related to common condition of all bones and joints including spine) with relevant management, correlating with Physiotherapy etc.

OPHTHAMOLOGY: Knowledge of common diseases, accidents, Injuries, etc. of various parts of Eyes.

Clinical Examination of Eyes (various parts) using various instruments including Ophthalmoscopy.

Common Eye operations and relevant care of the patients.

OTORHINOLARYNGOLOGY (ENT): Study as above of Ears, Nose, Throat, Tracheobronchial Tree, Oesophagus.

Management of Common SURGICAL PROCEDURES AND EMERGENCY PROCEDURES: To be taught in Theory as practice.

1. Wounds, Abscesses, etc. Incision and Drainage.
2. Venesections.

3. Dressings and plasters.
4. Suturing of various types.
5. Preoperative and post-operative care.
6. Management of post operative complications.
7. Management of shock.
8. Management of Acute Hemorrhage.
9. Management of acute injury cases.
10. Management of a Head Injury case.

The above is utmost necessary for any physician.

The above basically consists of Mechanical skilled procedure, supplementation, etc., measures which in no way interferes with scope and application of Law of Similars.

EXAMINATION

It will be conducted in III (THIRD) BHMS at end of 2 years of Course of study in Theory and Practical Training of Surgery.

Eligibility for examination will include submission of 10 complete case histories, 5 (five) each from the study in II and III BHMS.

Paper -I: Inflammation; infection; hemorrhage; shock; burns; ulcers and gangrene; tumors; cysts; injuries and diseases of nerves, muscles, tendon burase; lymphatic system, vascular system, spleen; general diseases, Ophthalmology.

Paper -II: Head, Neck, Thyroid, Breast, Congenital anomalies, Abdominal Surgical, Gastrointestinal system, Bones Joints, Spine, Thoracic Surgery, Otolaryngology, Dental Surgery.

Paper III: Exclusively on Homoeopathic Therapeutics.

PRACTICAL AND CLINICAL EXAMINATIONS

The examination will include one case to be prepared and presented by the examinees. The assessing examiners shall stress on: 1) Comprehensive Case taking; 2) Bedside Training; 3) Adequate grasp over the process of Diagnosis; 4) Adequate grasp over principles of management.

GYNAECOLOGY AND OBSTETRICS INCLUDING INFANT CARE

The attitude towards study of this subject remains same as far Surgery. It will have to be emphasized that the Training in special clinical methods or investigation and treatment of local conditions will go a long way in managing Gynae. & Obst. cases.

There is a quite large part of the clinical territory of this subject which is amenable to Homoeopathic Treatment. Pregnancy and Developmental Phase of the foetus are very useful phases to treat a lot of familial dyscrasias.

The problems studied herein constitute delicate phases of Female patients and have strong correlation with their general well being.

The study will start in II (Second) BHMS and complete in III (Third) BHMS. Examinations will be held in III (Third) BHMS.

Following is the plan to achieve the above.

II BHMS

OBSTETRICS

1. A Review of the Applied Anatomy.
2. A Review of the Applied Physiology.
3. Development of the Intra Uterine Pregnancy.
4. Diagnosis of pregnancy.

5. Ante-natal care.
6. Abnormal Pregnancy: Introduction.
7. Normal labour.
8. Abnormal labour: Introduction.
9. Post natal care Puerperal.
10. Abnormal Puerperal.
11. Care of the New born.

GYNAECOLOGY

1. Applied Anatomy and Physiology.
2. Gynaecological Examination.
3. Development abnormalities.
4. Endocrinal Axis: abnormalities.
5. Uterine displacements.

III BHMS

OBSTETRICS

1. Abnormal Pregnancies: Abortions, Molar pregnancy, Extra Uterine, Diseases of placenta and membrane, Toxaemia of Pregnancy, Antepartum Hemorrhage, Disorders of Genital tract Retroversion, prolapse, Tumours, etc. Multiple Pregnancy, Protracted gestation.
2. Common disorders and systemic diseases associated with Pregnancy.
3. Labour Abnormal Position and Presentation, Twins, Prolapse of Cord and limbs, abnormalities in the action of the Uterus Abnormal condition of soft parts contracted Pelvis, obstructed labour, Complications of third stage of labour, injuries of birth canals.
4. Common Obstetrical operations.
5. Abnormal Puerperal: infections etc.

GYNAECOLOGY

Inflammation, ulceration and traumatic lesions of the female genital organs, Malignant/Non-malignant Growths, Common Gynaecological operations and radiotherapy.

Infant Care

Neonatal hygiene

Breast feeding

Artificial feeding

Management of premature child

Asphyxia

Birth injuries

Common disorders of new born

EXAMINATION

It will be conducted in III (Third) BHMS at the end of 2 years of Course of studying Theoretical and Practical aspects of Gynaecology and Obstetrics.

Eligibility for examination will include submission of 20 complete cases of different types (10 each in Gynaecology and Obstetrics).

Paper I: Obstetrics and Infant Care.

Paper II: Gynaecology.

Paper III: Exclusively for Homoeopathic Therapeutics.

PRACTICAL & CLINICAL EXAMINATION

The Examinee will take and present on case. The examiners shall stress on:

1. Comprehensive Case Taking.
2. Bedside training.
3. Adequate grasp over Diagnostics.
4. Adequate grasp over Management Principles.

COMMUNITY MEDICINE

(including Health Education and Family Medicine)

Instructions in this course should be given in the Fourth year of medical studies by lectures, demonstrations and field studies. This subject is of utmost importance, and throughout the period of medical studies the attention of the student should be directed to the importance of preventive medicine and the measures for the promotion of positive health.

His function is not limited merely to prescribing homoeopathic medicines for curative purposes but he has a wider role to play, in the community. He has to be well conversant with the national health problems both in rural as well as urban areas, so that he can be assigned responsibilities to play an effective role not only in the field of curative but also of preventive and social medicine including family planning.

1. Introduction to preventive and social medicine concept, man and society: aim and scope of preventive and social medicine, social causes of disease and social problems of the sick, relation of economic factors and environment in health and disease.

2. Physiological hygiene:-

(a) Food and nutrition—food in relation to health and disease. Balanced diets. Nutritional deficiencies and nutritional survey. Food processing, pasteurization of milk. Adulteration of food and food inspection, Food poisoning.

(b) Air, light and sunshine

(c) Effect of climate—humidity temperature, pressure and other meteorological conditions—comfort zone, effect of overcrowding.

(d) Personal hygiene - (Cleanliness, rest, sleep, work) Physical exercise and training care of health in tropics.

3. Environmental sanitation:

(a) Definition and importance.

(b) Atmospheric pollution—purification of air, air sterilization, air borne diseases.

(c) Water supplies—sources and uses, impurities and purification. Public water supplies in urban and rural areas. Standards of drinking water, water borne diseases.

(d) Conservancy—Methods in villages, towns and cities, septic tanks, dry earth latrines—water closets. Disposal of sewage, disposal of the deceased, disposal of refuse incineration.

(e) Sanitation of fairs and festivals.

(f) Disinfection - disinfectants, deodorants, antiseptics, germicides. Methods of disinfection and sterilization.

(g) Insects—insecticides and disinfection—insects in relation to disease. Insect control.

- (h) Protozoal and helminthic diseases Life cycle of protozoan and helminths, their prevention.

4 Medical Statistics.

Principles and elements of vital statistics

Preventive Medicine

- (a) General principles of prevention and control of communicable diseases. Plague, Cholera, Small Pox Diphtheria, Leprosy, Tuberculosis, Malaria, Kala-Azar, Filariasis, Common viral diseases e.g. Common Cold Measles, Chicken Pox, Poliomyelitis, Infective Hepatitis, Helminthic infections, Enteric fever, dysenteries and also animal diseases transmissible to man. Their description and methods of preventive spread by contact, by droplet infection by environmental vehicles, (water, soil, food insects, animals, founderies, prophylaxis and vaccination.
- (b) General principles of prevention and control of non-communicable diseases e.g. obesity, hypertension etc.

Natural history of diseases.

5. Maternal and Child Health, school health services, health education, mental hygiene-elementary principles: school medicine its aim and methods.
6. Family Planning - Demography, channels of communication, National Family planning programme, knowledge, attitudes regarding contraceptive practices. Population and growth control.
7. Public health administration and international health relation.
8. Homoeopathic concept of prophylaxis, vaccination, Immunology and personal hygiene.

N.B.: Field demonstration-water purification plant, infectious diseases hospitals etc.

REPERTORY

IV BHMS

Repertorization is not the end but means to arrive to the simillimum together with Materia Medica based on sound principles of Philosophy. Homoeopathic Materia Medica is an encyclopedia of Symptoms. No mind can memorize all the symptoms or all the drugs with

their characteristic gradation. The repertory is an index and catalogue of the symptoms of the Materia Medica, nearly arranged in a practical form and also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly facilitates quick selection of indicated remedy. It is impossible to practice Homoeopathy without the aid of repertories.

Each repertory has been compiled on distinct philosophical base, which determines its structure. In order to exploit full advantage of each repertory it is important to grasp thoroughly its conceptual base and construction. This will help student to learn scope, limitations and adaptability of the repertory.

Case taking:

Difficulties of taking a chronic case. Recording of cases and usefulness of record keeping.

Totality of symptoms, prescribing symptoms: uncommon peculiar and characteristic symptoms. Analysis of the case uncommon and common symptoms. Gradation and evaluation of Symptoms. Importance of Mental symptoms. Kinds and sources of general symptoms. Concomitant symptoms.

Teaching of repertorisation should not merely be reduced to rubric hunting exercises. Patient is not a bundle of rubrics.

Logic of Repertory, is delivered from Organon of Medicine as such Repertory should not be taught in isolation. Due emphasis should be made to:-

- a. Learning the language of repertory i.e. meaning of rubrics is correlation with Materia Medica and clinical experiences.
- b. Correlation of Repertory with Therapeutics and Materia Medica.
 1. History and development of repertories till date.
 2. Types of repertories.
 3. Explanation of terminology's used in various repertories.
 4. Boenninghausen's therapeutic pocket book and Boger Boenninghausen's repertory.
 5. Kent's repertory.

6. Introduction to card repertory.
7. Specific regional repertories ALLEN'S FEVER, BELL'S DIARHOEA with their comparison.
8. Brief introduction to puritan group of repertory as Knerr, Gentry, Robert in respect of their Clinic use.
9. Introduction to Computer Repertorization.

PRACTICAL

Students shall repertories:-

- (i) 10 acute cases on Kent.
 - (ii) 5 chronic cases on Kent.
 - (iii) 5 chronic cases on Boenninghausen.
 - (iv) 5 chronic cases on Bogar-Boeinninghausen.
 - (v) 5 cases to be cross checked on computer.
7. The existing entries in Regulation 7 shall be substituted as under namely:

Admission to examination, scheme of examination etc.:

FIRST BHMS EXAMINATION

- (i) The student shall be admitted to the First BHMS Examination provided he/she has required attendance as per regulation 13 (iii) to the satisfaction of the head of the Homoeopathic Medical College.
- (ii) The First BHMS examination shall be held at the end of 18th month of admission.
- (iii) The minimum number of hours for lecture, demonstration/practical and seminar classes in the subjects shall be as under:

Subject Demonstration	Theoretical Lecture	Practical/ Tutorial/Seminar
1. Organon of Medicine, Principles of Homoeopathic Philosophy and Psychology.	150 hrs. (including 40 hrs. for Psychology)	35 hrs. (including 10 hrs. for Psychology)
2. Anatomy, Histology and Embryology.	250 hrs.	325 hrs.
3. Physiology including Biochemistry.	250 hrs.	325 hrs.
4. Homoeopathic Pharmacy	100 hrs.	100 hrs.
5. Homoeopathic Materia Medica	50 hrs	25 hrs.

- (iv) Examination in Organon of Medicine, Principles of Homoeopathic Philosophy and Psychology shall consist of one theory paper and one oral examination.
- (v) Examination in Anatomy including Histology and Embryology shall consist of two theory papers. Practical includes oral, identification of specimen and histology slides.
- (vi) Examination in Physiology including Biochemistry shall consist of two theory papers and one practical including oral.
- (vii) The examination in Homoeopathic Pharmacy shall consist of one theory and one practical including Oral.
- (viii) The examination in Homoeopathic Materia Medica shall consist of one theory and one oral examination.
- (ix) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing First BHMS should be as follows:

Subject	Written		Practical (including oral)		Total	
	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks
Homoeopathic Pharmacy	100	50	100	50	200	100
Anatomy	200	100	200	100	400	200
Physiology including Biochemistry	200	100	200	100	400	200
Homoeopathic Materia Medica	100	50	50	25	150	75
Organon of Medicine, Principles of Homoeopathic Philosophy and Psychology	100	50	50	25	150	75

8. regulation 8 shall be substituted as under, namely:

SECOND BHMS EXAMINATION

- (i) No candidate shall be admitted to the Second BHMS Examination unless he has passed the First BHMS examination and he/she has required attendance as per regulation 7 (iii) to the satisfaction of the head of the Homoeopathic Medical College.
- (ii) The Second BHMS examination shall be held at the end of 30th month of admission to First BHMS.

- (12.) The minimum number of hours for lecture, demonstration/practical and seminar classes in the subjects shall be as under:

Subject	Theoretical Lecture	Practical/Tutorial clinical/Seminar
1. Pathology and Microbiology including Parasitology Bacteriology and Virology.	200	70
2. Forensic Medicine & Toxicology	50	20
3. Organon of Medicine and Principles of Homoeopathic Philosophy	125	
4. Homoeopathic Materia Medica	75	75
5. Surgery including ENT, Eye Dental and Homoeo therapeutics.	50} 75 25} 75 One term of three months in surgical ward and OPD.	75
6. Obstetrics & Gynaecology Infant care and Homoeo therapeutics.	75 One term of three months in Gynaecology & Obstetrics ward and OPD.	75
7. Practice of Medicine and Homoeo. Therapeutics.	50} 75 25} 75 One term of three months in OPD & IPD of different Medical wards.	75

- (iv) Examinations in Pathology and Microbiology shall consist of one theory paper and one practical including oral. Identification of microscopic slides and specimens shall be a part of practical examination.
- (v) Examination in Forensic Medicine and Toxicology shall consist of one theory paper and one oral examination including identification and spotting of specimens.
- (vi) Examination in Organon of Medicine, Principles of Homoeopathic Philosophy and Psychology shall consist of one theory paper and one oral examination.
- (vii) Examination in Materia Medica shall consist of one theory paper and one practical including oral examination.

- (viii) In order to pass the Second BHMS examination, a candidate has to pass all the subjects of the examination.
- (ix) Full marks for each subject and the minimum marks required for pass are as follows:

Subject	Written		Practical including oral		Total	
	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks
Pathology & Microbiology	100	50	100	50	200	100
Forensic Medicine & Toxicology	100	50	100	50	200	100
Homoeopathic Materia Medica	100	50	100	50	200	100
Organon of Medicine	100	50	100	50	200	100

9. The existing entries in regulation 9 shall be substituted as under, namely:

THIRD BHMS EXAMINATION

- (i) No candidate shall be admitted to the Third BHMS examination unless he has passed the Second BHMS examination and he/she has required attendance as per regulation 7 (iii) to the satisfaction of the head of the Homoeopathic Medical College.
- (ii) The Third BHMS examination shall be held at the end of 42nd month of admission to First BHMS.
- (iii) The minimum number of hours for lecture, demonstration/practical, clinical and seminar classes in the subjects shall be as under:

Subject	Theoretical Lecture	Practical/clinical /Tutorial classes
1. Practice of Medicine & Homoeo therapeutics	50} 75 25}	75 One term of 3 month each in OPD & IPD in different wards/Dept.
2. Surgery including ENT,) Ophthalmology & Dental) & Homoeo. therapeutics	100} 150 50}	75 One term of three months each in Surgical ward and OPD.

3.	Obstetrics & Gynaecology Infant care & Homoeo therapeutics	100} 150 50}	75 One term of three months Gynae. ward and OPD.
4.	Homoeopathic Materia Medica	100	75
5.	Organon of Medicine	100	75

- (iv) Examination in Surgery shall consist of three theory papers and one practical examination. One theory paper shall be exclusively on Homoeo therapeutics. The Practical examination shall consist of clinical examination and oral. In the clinical examination the students shall be examined on his skill on the surgical instruments, bandages and general measures related to surgery, scope of Homoeopathic therapeutics and examination and diagnosis of surgical disease through clinical examination, X-ray and other common diagnostic techniques. The case studies reports of the students carried out during the course shall also be considered for the oral examination.
- (v) Examination in Obstetrics & Gynaecology including infant care shall consist of three theory papers and one practical examination. One theory paper shall be exclusively on Homoeo therapeutics. The Practical examination shall consist of clinical examination and oral. In the clinical examination the students shall be examined on his skill on the specimens, models, instruments, and general appliances related to Obstetrics, scope of Homoeopathic therapeutics and examination and diagnosis of Gynaecological disease through clinical examination, X-ray and other common diagnostic techniques. The case studies reports of the students carried out during the course shall also be considered for the oral examination.
- (vi) Examination in Homoeopathic Materia Medica shall consist of one theory paper and one bedside practical examination. The bedside examination shall be on two acute cases with special reference to their nosological diagnosis and therapeutic diagnosis from Homoeopathic point of view.

- (vii) Examination in Organon of medicine shall consist of one theory paper and on oral examination.
- (viii) In order to pass the Third BHMS examination, candidates have to pass in all the subject of the examination.
- (ix) Full marks for each subject and the minimum marks required for pass are as follows:

Subject	Written		Practical including oral		Total	
	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks
Surgery including ENT Ophthalmology & dental Homoeo. Therapeutics	300	150	200	100	500	250
Obstetrics & Gynaecology, Infant care & Homoeo. therapeutics	300	150	200	100	500	250
Homoeopathic Materia Medica	100	50	100	50	200	100
Organon of Medicine	100	50	100	50	200	100

10. The existing entries in regulation 10 shall be substituted as under, namely:

FOURTH BHMS EXAMINATION

- (i) No candidate shall be admitted to the Fourth BHMS examination unless he has passed the third BHMS examination and he/she has required attendance as per regulation 7 (iii) to the satisfaction of the head of the Homoeopathic Medical College.
- (ii) The Fourth First BHMS examination shall be held at the end of 54th month of admission of First BHMS.

- (iii) The minimum number of hours for lecture, demonstration/practical, seminar and clinical classes in the subjects shall be as under:

Subject	Theoretical Lecture		Practical/clinical /Tutorial classes
1 Practice of Medicine & Homoeo. Therapeutics	100} 150	200	One term of 4 months In OPD & IPD in different Medical wards/Deptt.
2 Homoeopathic Materia Medica	100	75	
3 Organon of Medicine	100	75	
4 Repertory	125	150	
5 Community Medicine	100	100	

Examination in Practice of Medicine including Pediatrics, Psychiatry and Dermatology shall consist of three theory papers and one bedside practical examination. One theory paper shall be exclusively on Homoeo. therapeutics. The Practical examination shall consist of clinical examination and oral. In the clinical examination the students shall be examined on his skill on the nosological and therapeutic diagnosis, through clinical examination, X-ray and other common diagnostic techniques and detailed case takings on long and short cases. The case reports of the students carried out during the course shall also be considered for the oral examination.

- (v) Examination in Case taking and Repertory shall consist of one theory paper and one practical examination. The Practical examination shall consist of the Homoeopathic principles on case taking of one long case and one short case and the methods of arriving the reportorial totality, through case analysis and actual repertorisation. The skill of finding rubrics from Kent and Bonninghausan Repertories, the case reports of the students carried out during the course shall be considered for the oral examination.

- (vi) Examination in Homoeopathic Materia Medica shall consist of two theory papers and one bedside practical examination. The bedside examination shall be one long case and one short case with special reference to their nosological diagnosis and therapeutic diagnosis from Homoeopathic point of view. The case reports of the students carried out during the course shall be considered for the oral examination.
- (vii) Examination in Organon of Medicine and Principles of Homoeopathic Philosophy shall consist of two theory papers and one practical examination. The practical examination shall be on the Homoeopathic orientation of cases in relation to miasmatic diagnosis, general management, posology, second prescription etc.
- (viii) The examination in Community Medicine including Health Education and Family Welfare shall consist of one theory paper and one oral examination. The oral examination shall be on spotting and identification of specimens and matters related to the community oriented problems.
- (ix) In order to pass the Fourth BHMS examination, candidates have to pass in all the subjects of the examination.
- (x) Full marks for each subject and the minimum marks required for pass are as follows:

Subject	Written		Practical including oral		Total	
	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks	Full marks	Pass marks
Practice of Medicine	300	150	200	100	500	250
Homoeopathic Materia Medica	200	100	200	100	400	200
Organon of Medicine	200	100	100	50	300	150
Case taking & Repertory	100	50	100	50	200	100
Community Medicine	100	50	100	50	200	100

11. The existing entries in Regulation 11 shall be substituted as under, namely:-

RESULTS AND RE ADMISSION TO EXAMINATION

- (i) Examining body may ensure that the results of the examination are published in time so that the student who successfully completes the BHMS examinations can complete the course in 5 ½ yrs after admission.
- (ii) Candidates who have passed in one or more subjects need not appear in that subject or those subjects again in the subsequent examinations if the candidate passes the whole examination with in four chances including the original examination.
- (iii) Facility to keep term: Notwithstanding with the foregoing regulations, the students shall be allowed the facility to keep term on the following conditions:
 - (a) The candidate must pass the Second BHMS examination at least one term (6 months) before he is allowed to appear in the Third BHMS examination.
 - (b) The candidate must pass the Third BHMS examination at least one term (6 months) before he is allowed to appear in the Fourth BHMS examination.
 - (c) No candidate shall be given more than 4 chances to appear in First BHMS examination in the same subject.
- (iv) A candidate who appears at Second or Third BHMS examinations, but fails to pass in the subject or subjects, he may be admitted to the next examination in the subject or subjects. However candidates shall be allowed to keep term as provided in (iii) above.
- (v) Special classes, seminars, demonstrations, practical, tutorials etc. shall be arranged for the repeaters in the subject in which they have failed before they are allowed to appear at the next examination, in which attendance shall be compulsory.
- (vi) If a candidate fails to pass in all the subjects with in four chances in examinations, he shall be required to prosecute a further course of

studying all the subjects and in all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appearing for examination in all the subjects.

Provided that if a student appearing for the Fourth BHMS examination has only one subject to pass at the end of prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

- (vii) The examining body may under exceptional circumstances, partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting re-examination in those subjects within a period of thirty days from the date of such cancellation.
 - (viii) Grace marks may be awarded to the students at the discretion of the University/ examining body on exceptional circumstances
12. The entries in the existing regulation 12(i) shall be substituted as under, namely:

EXAMINERS

No person other than the holder of qualification prescribed for the teaching staff in Homoeopathy (Minimum Standards of Education) Regulation as amended from time to time shall be appointed as an internal or external examiner or paper-setter for the BHMS Degree Course.

Provided that:-

- (a) No such person shall be appointed as an examiner unless he has at least three years continuous regular teaching experience in the subject concerned, gained in a degree level Homoeopathic Medical College.
- (b) Internal examiners shall be appointed from amongst the teaching staff of the Homoeopathic Medical College.

(c) A paper setter may be appointed as an internal or external examiner.

13. The following new Regulations shall be added after Regulation 12 namely:

13. GENERAL GUIDELINES FOR ADMISSION TO EXAMINATION AND SCHEME OF EXAMINATION.

- (i) The examining Body shall ensure that the minimum number of hours for lecture/demonstration/practical/seminar etc. in the subjects in each BHMS examination as specified in respective regulations are followed before allowing any Homoeopathic Medical College to send the students for University examination:
- (ii) The examining body shall ensure that the students of the Homoeopathic Medical Colleges, who do not fulfill the Homoeopathy (Minimum Standards of Education) Regulation, are not sent for the University Examination.
- (iii) Attendance: 75% attendance in a subject for appearing in the examination is compulsory. The examining body may relax this on exceptional circumstances on individual merit.
- (iv) Each theory paper shall be of three hours duration.
- (v) The Practical/oral examination shall be completed immediately after the theory Examination.
- (vi) That the examining body shall hold examinations on such date and time as the examining body may determine. The theory and practical examination shall be held in the premises of the Homoeopathic Medical College concerned.
- (vii) There shall be two examinations in a year. One Regular examination and another Supplementary. The supplementary examination may be conducted within 6 months of the Regular examination.
- (viii) No student shall be permitted to join para clinical/clinical group of subjects until he has passed in all the pre clinical subjects of First BHMS for which he will be permitted not more than Four chances including the original examination.

14. "MISCELLANEOUS"**(i) Authorities empowered to conduct examinations:**

The Universities shall conduct the examination for the Degree Course in various States or the agencies empowered by an Act of Parliament.

(ii) Interpretation:

Where any doubt arises to the interpretation of these regulations it shall be referred to the Central Council for clarification.

(iii) Power to relax:

Where any University, or Medical institution in India which grants medical qualification, is satisfied that the operation of any of these regulations causes undue hardship in any particular case, that University or Medical Institution as the case may be, may by order, for reasons recorded in writing, dispense or relax the requirement of that regulation in such an extent and subject to such exceptions and conditions as it may consider necessary for dealing with the case in a just and equitable manner.

(iv) Saving Clause:

Any Diploma/Degree qualification, at present included in II or III Schedule to the Homoeopathy Central Council Act where nomenclature is not in consonance with these regulations shall cease to be recognized medical qualification when granted after the commencement of these regulations. However, this clause will not apply to the students who are already admitted to these courses before the enforcement of these regulations.

- (v) Transfer of students from One College to another:
- (a) A student studying in a Homoeopathic Medical College may be allowed to migrate/transfer to another Homoeopathic Medical College under same or another University.
 - (b) The University concerned can allow the migration/transfer within three months after passing the First BHMS examination, as a rule.
 - (c) Migration/Transfer of students during the course of their training for the clinical subjects may be avoided.
 - (d) The number of students' migrating/transferring from one college to another college during one year will be kept to the minimum so that the training of the regular students of that college is not adversely affected. The number of students migrating/transferring to/from any one college should not exceed the limit of 5% of its intake subject to a maximum of 5 student in any one Homoeopathy college in one year.
 - (e) Cases not covered under the above regulations may be referred to the Council for consideration on individual merits.
 - (f) Intimation about the admission of migrated/transferred students into any College shall be sent to the Council forthwith.

ANNEXURE 'A'

(Regulation 3 (ii))

INTERNSHIP TRAINING

1. (II) Each candidate shall be required to undergo compulsory rotating internship of one year, after passing the final BHMS Examinations, to the satisfaction of the Principal of the Homoeopathic College. Thereafter only, the candidate shall be eligible for the award of Degree of Bachelor of Homoeopathic Medicine and Surgery (B.H.M.S.) by the University.

(i)(a) All parts of the internship training shall be undertaken at the hospital attached to the College, and, in cases where such hospital cannot accommodate all of its students for internship then such candidates/students shall be informed in writing by the college and it shall be the responsibility of the College to ensure that each of such students is put on internship training in a Homoeopathic Hospital or dispensary run by Government or local bodies.

(ii) To enable the State Board/Council of Homoeopathy to grant provisional registration of minimum of one year to each candidate to undertake the internship, the University concerned shall issue a provisional passed certificate on passing the final BHMS examination to each successful candidate.

Provided that in the event of shortage, or unsatisfactory work, the period of compulsory internship and the provisional registration shall be accordingly extended by the State Board/Council.

(iii) Full registration shall only be given by the State Boards if the BHMS degree awarded by the University concerned is a recognized medical qualification as per Section 13 (1) of the Act, and Board shall award registration to such candidates who produce certificate of completion or compulsory rotating internship of not less than one year duration from the Principal of College where one has been a bonafide student which shall also declare that the candidate is eligible for it.

(iv) The internee students shall not prescribe the treatment including medicines, and, each of them shall work under the direct supervision of Head of Department concerned and/or a Resident Medical Officer. No intern student shall issue any medicolegal document under his/her signatures.

(v) Each candidate shall complete the internship training at the maximum within a period of 24 months after passing the final year examination.

2. The internship training shall be regulated by the Principal in consultation with concerned Heads of Departments and R.M.O. as under:-

(i) Each internee student shall be asked to maintain a record of work which is to be constantly monitored by the Head of concerned Department and/or Resident Medical Officer under whom the internee is posted. The scrutiny of record shall be done in an objective way to update the knowledge, skill and aptitude of internee.

(ii) The stress during the internship training shall be on case taking, evaluation of symptoms, nosological and miasmatic diagnostic analysis, repertorisation and

management of sick people based on principles of Homoeopathy. Weekly seminars shall be conducted wherein interns in rotation be given a chance to present their cases for discussion, and, concerned teachers/R.M.O. shall assess performance of each of interns.

(iii) rotation of intern-students shall be as under:

(a) Practice of Medicine - 8 Months wherein interneer will be rotated in each Psychology, Respiratory, Gastro-intestinal, Endocrinology, Skin and V.D., Locomotor, Cardiology, Paediatrics sections.

(b) Surgery - 1 Month.

(c) Obstetrics & Gynaecology - 2 months (1 month each (including Reproductive & child health care))

(d) Community medicine (including PHC/CHC) - 1 month.

(iv) Each interneer shall be exposed to clinicopathology work to acquire skill in taking samples and doing routine blood - examination, blood smear for parasites, sputum examination, urine and stool examination. Students shall be trained to correlate laboratory findings with diagnosis and management of sick people.

(v) Each interneer shall be given opportunities to learn the diagnostic techniques like x-rays, Ultrasonography, E.C.G., Spirometer and other forthcoming techniques and co-relate their findings with diagnosis and management of cases.

(vi) Each interneer student shall be given adequate knowledge about issuing of medico-legal certificates including medical and fitness certificates, death certificates, birth certificates, court producers and all of such legislation's be discussed which were taught in curriculum of Forensic Medicine.

(vii) Each interneer shall maintain records of 40 acute and 25 chronic cases complete in all manner including follow up in Practice of Medicine, record of 5 antenatal check-up and 3 delivery cases attended by him/her in Department of Obstetrics and 3 cases of Gynaecology; records of 5 surgical cases assisted by him (and demonstrational knowledge of dressings) in Surgery department, and records of knowledge gained in Primary Health Centres, Community health Centres, various health programmes.

- (viii) It shall be compulsory for each intern-student to prove at least one drug during the Period of internship.
- (ix) Each internee shall be given a liberty to choose an elective assignment on any subject, and complete out-put shall be furnished in writing by the internee in respect of elective assignment to the Principal of the College within internship duration.
- (x) Each intern shall be posted on duty in such a manner that each of them attend at least 15 days in O.P.D. and 15 days in I.P.D. at least in each month (except for duty in Community Medicine) and attend the other parts of duty including self-preparation in Library.
- (xi) Each intern-student shall be made to learn importance of maintaining statistics and records, intern-student shall also be familiarized with research-methodology.
- 3 (i) Each internee shall have not less than 80% of attendance during the internship training.
- (ii) Each internee shall be on duty of at least 6 hrs. per day during the compulsory internship training.

Dr. LALIT VERMA, Registrar-cum-Secretary

[ADVT III/IV/147/2003-Exty.]

Note: Principal regulations were published in the Gazette of India, Part III, Section 4 on 16-11-1989 and subsequent amendment were published in the said section of the Gazette on 22-02-1993.